Every Fortnight April II 2014

मूल्य ♦ दस रुपए

बालहंस

- एफिल टॉवर
- अनोखे पर्यटन स्थल
- धरती के स्वर्ग की सैर
- देशों की नेशनल डिश

Tourism Special

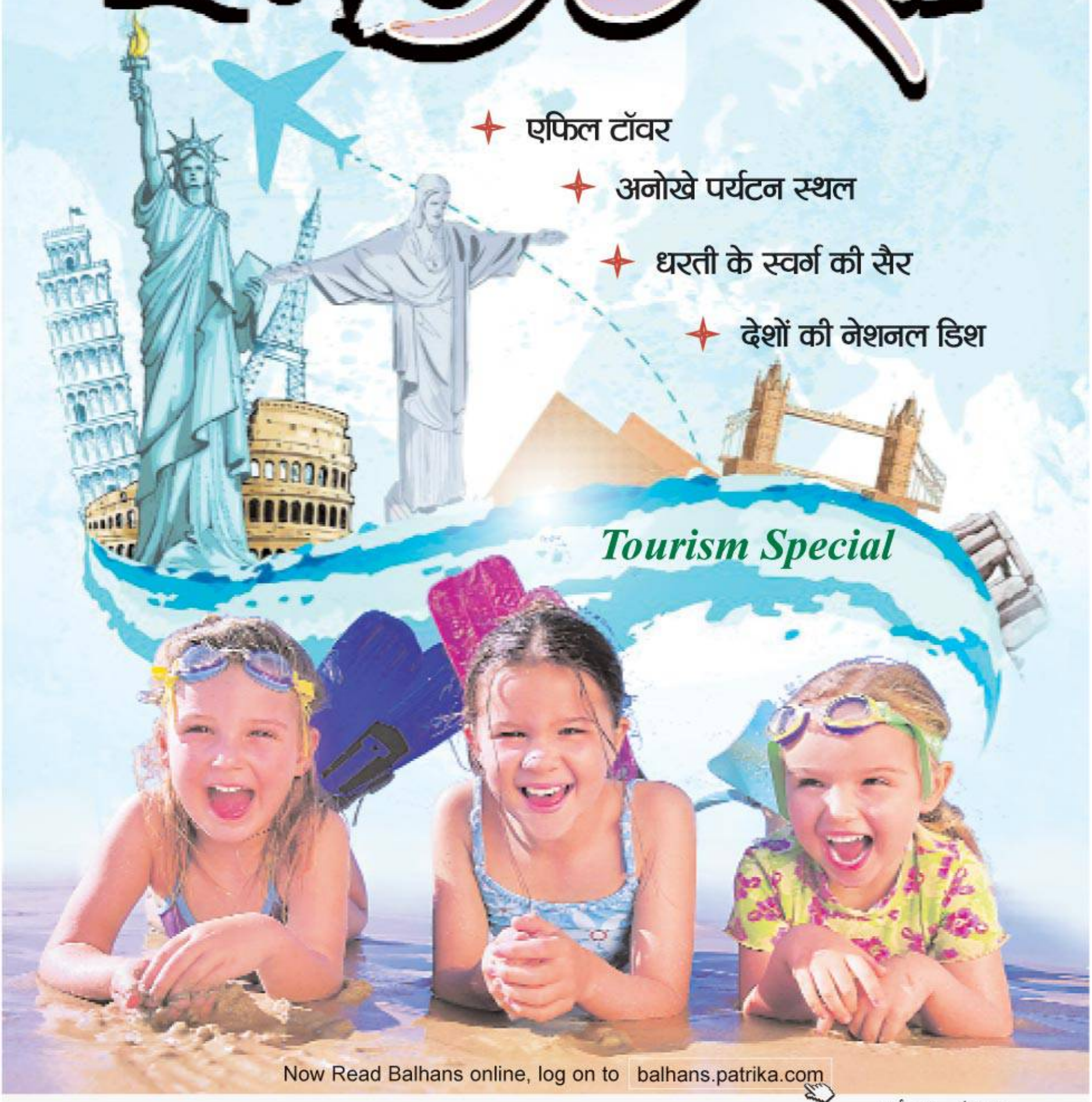

Now Read Balhans online, log on to balhans.patrika.com

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

- नेशनल पार्क
- दरों की दीवार
- व्हेल के साथ तैराकी

वर्ष- 28 अंक- 19
15-30 अप्रेल, 2014 पृष्ठ- 68

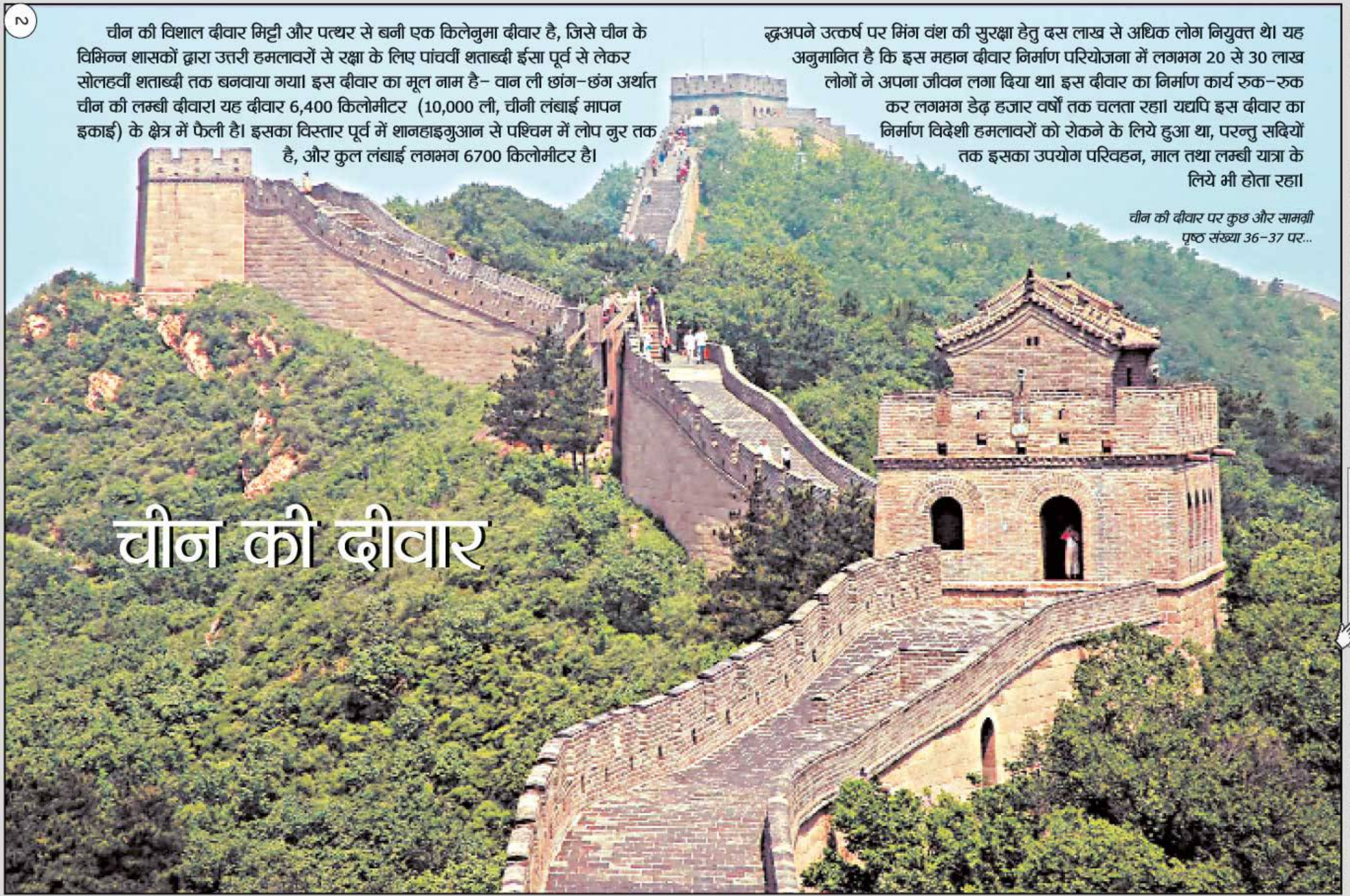

चीन की दीवार

चीन की विशाल दीवार मिट्टी और पत्थर से बनी एक किलेनुमा दीवार है, जिसे चीन के विभिन्न शासकों द्वारा उत्तरी हमलावरों से रक्षा के लिए पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक बनवाया गया। इस दीवार का मूल नाम है- वान ली छांग-छंग अर्थात चीन की लम्बी दीवार। यह दीवार 6,400 किलोमीटर (10,000 ली, चीनी लंबाई मापन इकाई) के क्षेत्र में फैली है। इसका विस्तार पूर्व में शानहाइगुआन से पश्चिम में लोप नुर तक है, और कुल लंबाई लगभग 6700 किलोमीटर है।

अपने उत्कर्ष पर मिंग वंश की सुरक्षा हेतु दस लाख से अधिक लोग नियुक्त थे। यह अनुमानित है कि इस महान दीवार निर्माण परियोजना में लगभग 20 से 30 लाख लोगों ने अपना जीवन लगा दिया था। इस दीवार का निर्माण कार्य रुक-रुक कर लगभग डेढ़ हजार वर्षों तक चलता रहा। यद्यपि इस दीवार का निर्माण विदेशी हमलावरों को रोकने के लिये हुआ था, परन्तु सदियों तक इसका उपयोग परिवहन, माल तथा लम्बी यात्रा के लिये भी होता रहा।

चीन की दीवार पर कुछ और सामग्री पृष्ठ संख्या 36-37 पर...

Now Read Balhans online, log on to balhans.patrika.com

वर्ष- 28 अंक-19

अप्रेल (द्वितीय) 2014, जयपुर

विविध

क्रेजी किया रे- 33
बोलें अंग्रेजी- 43
तथ्य निराले- 44
गुदगुदी- 45
क्रॉसवर्ड पजल्स- 46
सामान्य ज्ञान- 47
क्यों और कैसे/कमाल है- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
ठिकाना तो बताना/ ग्राफ से चित्र/ अंतर बताओ- 52-53
किड्स क्लब- 54
बालहंस न्यूज-55
व्हेल के साथ तैराकी- 56-57
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

चित्रकथा

ई-मैन- 62-65

टूरिज्म

हिमालय की गोद में बसा लेह- 5
कन्नूर- 6-7
रुद्रप्रयाग से गौरीकुंड तक- 8
सोलन- 9
उदुपी- 10
रत्नागिरी- 11
बोधगया- 12-13
सैर एफिल टॉवर की- 14-17
अनोखे पर्यटन स्थल- 18-25

विशेष

प्रसत बयोन स्टोन फेस/ शेख जायद मस्जिद/ स्वेदगन पेगोडा- 26-27
नेशनल पार्क-28-31
धरती के स्वर्ग की सैर- 34-35
दर्रों की दीवार- 36-37
इस फिल्मसिटी में सब कुछ है-38-39
देशों की नेशनल डिश- 40-41

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह

फोटो एडिटिंग: संदीप शर्मा

टूरिज्म विशेषांक

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

आप कहीं भी जाएं, दिल से जाएं।

संपादकीय

दोस्तो,

परीक्षाओं से फ्री होने के बाद सबसे पहले क्या सूझता है? यही कि कहीं घूमा-फिरा जाये। यानी पर्यटन या टूरिज्म से बढ़कर मन को सुकून देने वाला कोई और बेहतर तरीका नहीं है। क्योंकि पर्यटन न सिर्फ हमें तरोताजा करता है, बल्कि यह हमें ऐसे अनुभव देता है जो जीवन में आगे बढ़ने के लिये बेहद जरूरी हैं। भारतीय प्राच्य ग्रंथों में तो स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि-मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्त्व दिया है। प्राचीन गुरुओं ने तो यहां तक कहा है कि बिना पर्यटन मानव अन्धकार प्रेमी होकर रह जायेगा। पाश्चात्य विद्वान् संत आगस्टिन का कहना था, 'बिना विश्व-दर्शन ज्ञान ही अधूरा है।' बालहंस हमेशा से तुम्हारे सैर-सपाटे का ध्यान रखता आया है। टूरिज्म से जुड़े इस अंक में हमने देश-विदेश के कुछ ऐसे पर्यटन-स्थलों को शामिल किया है, जो घूमने-फिरने के लिहाज से तो अनूठे हैं ही, वहां जाकर हमारे ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

तुम्हारा बालंहस

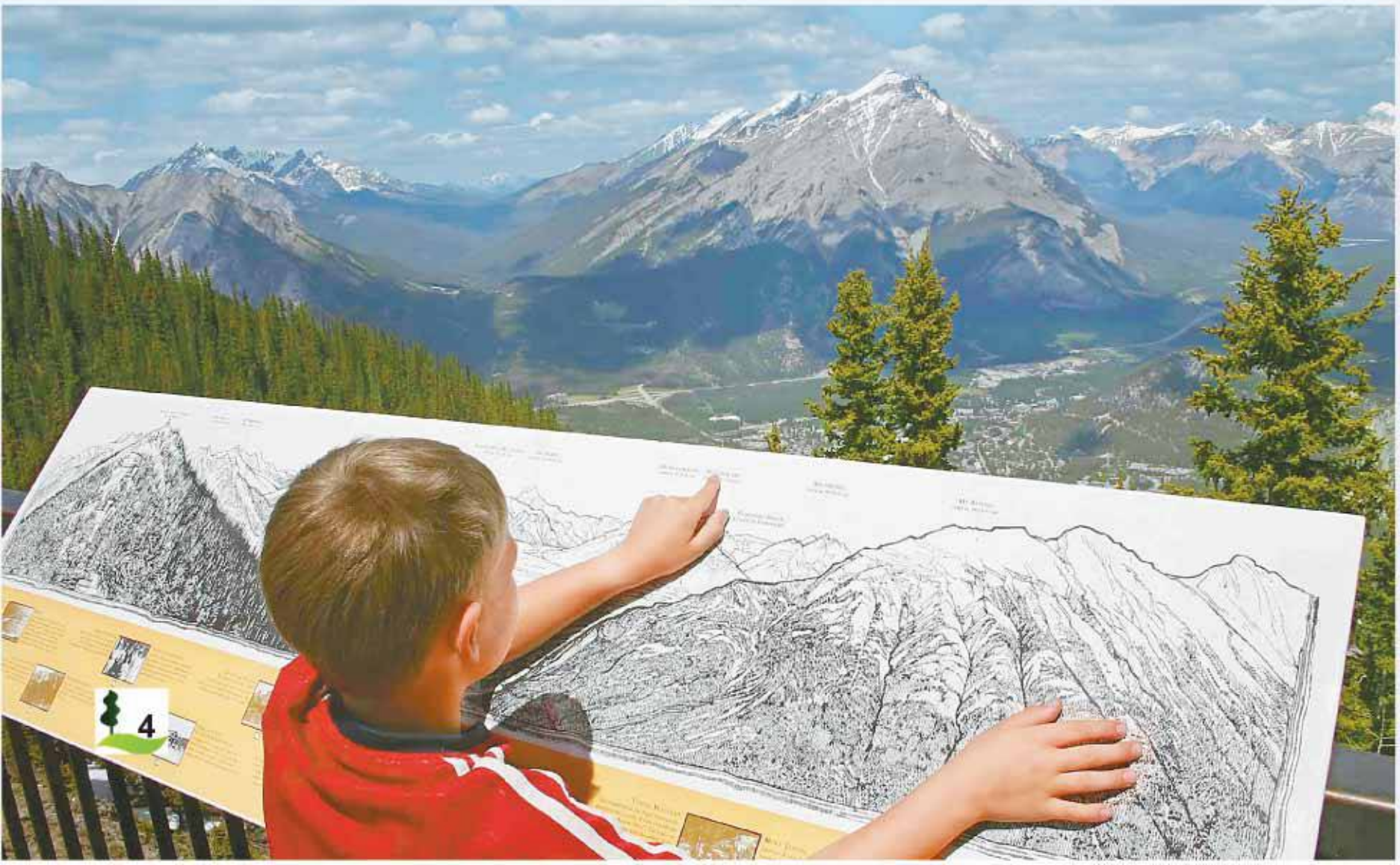

हिमालय की गोद में बसा लेह

जम्मू-कश्मीर के उत्तर में स्थित लेह विश्व के मानचित्र पर पर्यटन स्थल के रूप में एक अलग ही स्थान रखता है। सिंधु नदी के किनारे और 11000 फीट की ऊंचाई पर बसा लेह पर्यटकों को जमीं पर स्वर्ग का आभास कराता है। हिमालय की हसीन वादियों में बसे लेह के आकर्षण में हजारों पर्यटक खिंचे चले आते हैं। लेह में रूईनुमा बादल इतने नजदीक होते हैं कि लगता है जैसे हाथ बढ़ाकर उनका स्पर्श किया जा सकता है। गगनचुंबी पर्वतों पर ट्रैकिंग का यहां अपना ही मजा है। लेह में पर्वत और नदियों के अलावा भी कई ऐतिहासिक इमारतें मौजूद हैं। यहां बड़ी संख्या में खूबसूरत बौद्ध मठ हैं, जिनमें बहुत से बौद्ध भिक्षु रहते हैं।

दर्शनीय स्थल

लेह महल - नौ मंजिला यह खूबसूरत महल क्त्र वीं शता□दी में राजा नामग्याल द्वारा बनवाया गया था। यह महल ति□बती कारीगरी का बेहतरीन नमूना है। इस महल में शाही घराने के कई सबूत मौजूद हैं, जो आज भी जीवंत प्रतीत होते हैं।

जामी मस्जिद- लेह बाजार के समीप क्त्र वीं शता□दी में निर्मित जामी मस्जिद पर्यटकों को खूब लुभाती है। हरे और सफेद रंग की यह मस्जिद पर्यटकों के बीच आर्कषण का केन्द्र है।

लेह घाटी

शेय महल- लद्दाख के प्रथम राजा हेचेन स्पेलगीगोन ने यह महल पहाड़ की चोटी पर बनवाया था। इस महल में एक मठ भी है। कॉपर गिल्ट से निर्मित महात्मा बुद्ध की तीन मंजिला मूर्ति यहां स्थापित है।

स्तोक महल- लेह से क्त्र किलोमीटर दूर स्तोक महल में शाही परिवार के लोग रहते हैं। यहां एक आकर्षक संग्रहालय है, जिसमें यहां के राजा-रानी की काफी दिलचस्प वस्तुएं रखी हुई हैं।

थिकसी मठ- यह मठ लेह के सभी मठों से आकर्षक और खूबसूरत है। यह मठ गेलुस्पा वर्ग से स□बन्धित है। अ□टूबर-नव□बर के बीच यहां थिकसी उत्सव का आयोजन किया जाता है।

शान्ति स्तूप- लेह बाजार से तीन किलोमीटर दूर चंगस्पा गांव में स्थित सफेद पत्थर से निर्मित शान्ति स्तूप है। इसका उद्घाटन वर्ष क-त्त में शान्ति पैगोडा दलाई लामा द्वारा किया गया था। इसके किनारे गिल्ट

कन्नूर

कन्नूर केरल के उत्तर में स्थित एक छोटा, लेकिन बेहद खूबसूरत तटवर्ती नगर है। शहरी भागदौड़ से परेशान हो चुके पर्यटकों को कन्नूर काफी रास आता है। प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण इस नगर के पश्चिमी तट पर फैली रेत को लक्षद्वीप सागर चूमता है, और तट के दूसरी तरफ ऊंचे-ऊंचे ताड़ के पेड़ वातावरण को और मनोरम बनाते हैं। सांस्कृतिक विरासत और कला से सम्पन्न इस नगर से अनेक किस्से जुड़े हुए हैं। यहां की थय्यम नृत्य परंपरा विश्व प्रसिद्ध है। अतीत की याद दिलाती यहां की अनेक इमारतें जैसे मस्जिद, मंदिर और चर्च अपनी कहानी स्वयं कहते प्रतीत होते हैं।

सेन्ट एंजिलो फोर्ट : कन्नूर किले के रूप में वि□यात इस किले का निर्माण क्ष्भ ई. में प्रथम पुर्तगाली वायसराय डॉन फ्रांसिसको डी अलमीडा द्वारा बनवाया गया था। पुर्तगालियों के बाद इस किले पर डचों का नियंत्रण हो गया, उसके बाद अंग्रेजों ने इस पर अधिकार कर लिया। मालाबार में अंग्रेजों का यह प्रमुख सैन्य ठिकाना था। वर्तमान में यह किला भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के अधीन है और यहां से मप्पिला बे फिशिंग हार्बर के सुंदर दृश्य देखे जा सकते हैं। यह किला कन्नूर से तीन किलोमीटर की दूरी पर है।

मदायी मस्जिद : इस खूबसूरत प्राचीन मस्जिद का निर्माण क्क्ख ई. में मुस्लिम उपदेशक मलिक इबन दीनार ने करवाया था। माना जाता है कि मस्जिद के सफेद रंग के □लॉक को इसके संस्थापक द्वारा म□का से लाया गया था। मस्जिद के निकट ही मैसूर के शासक टीपू सुल्तान द्वारा बनवाया गया एक किला है। यह किला अब क्षतिग्रस्त हो चला है।

पयमबल्लम बीच : यह बीच केरल के सबसे खूबसूरत बीचों में एक है और कन्नूर किले के समीप स्थित है। इस बीच की खूबसूरती देशी पर्यटकों के साथ विदेशी सैलानियों को भी आकर्षित करती है। बीच के साथ ही एक पार्क बना है जिसमें क्त फीट लंबी और क्भ फीट ऊंची मूर्ति बनी हुई है। बच्चों के मनोरंजन के लिए भी यहां एक पार्क बना हुआ है।

मुजुपिलंगड बीच : साढ़े चार किलोमीटर लंबे इस बीच की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां आसानी से ड्राइविंग की जा सकती है। गाड़ियों के पहिए इस बीच की रेत में नहीं फंसते। यह बीच मोइटू ब्रिज तक फैला हुआ है और इसे तैराकी प्रिय लोगों का स्वर्ग कहा जाता है। बीच कन्नूर के दक्षिण दिशा से क्भ किलोमीटर की

थलस्सरी किला : इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव का गवाह यह किला पर्यटकों को काफी पसंद आता है। थलस्सरी नगर के थिरूवल्लपद हिल पर यह किला बना हुआ है जो दक्षिणी कन्नूर से ख किलोमीटर दूर है। इस किले का निर्माण ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष क्त्रत्त ई. में करवाया था। लाल ईंटों से बना यह किला दो एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। अंग्रेज इस किले का उपयोग टकसाल और कारागार के तौर पर करते थे। हैदर अली की सेना के अनेक नेताओं को यहां कैद किया गया था।

ईजीमाला : ईजीमाला पहाड़ियां और बीच कन्नूर की उ□ारी सीमा पर स्थित है। कन्नूर से भ किलोमीटर दूर इन पहाड़ियों में दुर्लभ जड़ी-बूटियां पायी जाती हैं। यहां माउंट देली लाइटहाउस भी बना हुआ है, जिसकी देखभाल नौसेना द्वारा की जाती है। लाइटहाउस प्रतिबंधित क्षेत्र में है और सैलानियों को यहां जाना मना है। यहां के बीच की रेत अन्य बीचों से अलग है, साथ ही यहां का पानी अन्य स्थानों से अधिक नीला नजर आता है। यहां की एट्टीकुलम खाड़ी में डॉल्फिनों को देखा जा सकता है।

पयमबल्लम बीच

अरालम वन्य जीव अ□ायारण्य : यह शांत और विशाल अभयारण्य पश्चिमी घाट के ढलान पर स्थित है। उष्णकटिबंधीय पेड़ों से घिरे इस अ□ायारण्य में जीव-जंतुओं की अनेक दुर्लभ प्रजातियों को देखा जा सकता है। हिरन, हाथी, बोर और बिसन आदि पशुओं के झुंड यहां सामान्यत: देखे जा सकते हैं। साथ ही तेंदुए, जंगली बिल्ली, गिलहरियों की विविध प्रजातियां और लगभग क्म दुर्लभ पक्षियों की प्रजातियां यहां देखी जा सकती हैं।

अर□कल महल : यह महल कन्नूर नगर से ख किलोमीटर दूर है। अर□कल की रानी या बीबी को यह महल समर्पित है। केरल के एकमात्र मुस्लिम शाही परिवार से संबंध रखने वाला यह किला ऐतिहासिक दृष्टि से काफी मह□वपूर्ण है।

स्नेक पार्क : यह पार्क केरल में इस तरह का एकमात्र पार्क है। सांपों के लिए यहां तीन गर्त हैं। क्म शीशों का केस सांपों के लिए है और दो विशाल ग्लास हाउस किंग कोबरा के लिए यहां हैं। हर घंटे यहां सांपों की प्रदर्शनी लगती है, जिसे देखने बड़ी सं□या में लोग आते हैं।

रुद्रप्रयाग से गौरीकुंड तक

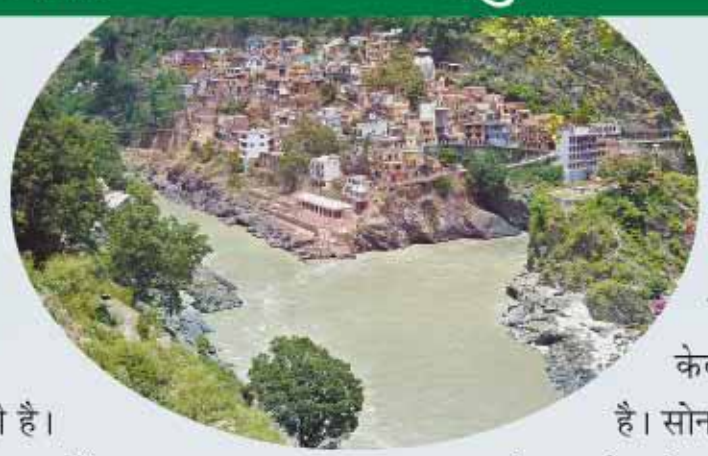

रुद्रप्रयाग अलकनंदा तथा मंदाकिनी नदियों का संगमस्थल है। यहां से अलकनंदा देवप्रयाग में जाकर भागीरथी से मिलती है तथा गंगा नदी का निर्माण करती है। प्रसिद्ध धर्मस्थल केदारनाथ धाम रुद्रप्रयाग से त्त- किलोमीटर दूर है। भगवान शिव के नाम पर रुद्रप्रयाग का नाम रखा गया है।

मंदाकिनी और अलकनंदा नदियों का संगम अपने आप में एक अनोखी खूबसूरती है। इन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो दो बहनें आपस में एक-दूसरे को गले लगा रही हों। यहां स्थित शिव और जगद□बा मंदिर प्रमुख धार्मिक स्थानों में से हैं।

अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग : रुद्रप्रयाग से अगस्त्यमुनि की दूरी क्त किलोमीटर है। यह समुद्र तल से क मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है। यह वही स्थान है जहां ऋषि अगस्त्य ने कई वर्षों तक तपस्या की थी। इस मंदिर का नाम अगस्तेश्रवर महादेव ने ऋषि अगस्त्य के नाम पर रखा था।

गुप्तकाशी : गुप्तकाशी का वही मह□व है जो मह□व काशी का है। यहां गंगा और यमुना नदियां आपस में मिलती हैं। ऐसा माना जाता है कि महाभारत के युद्ध के बाद पांडव भगवान शिव से मिलना चाहते थे और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन भगवान शिव पांडवों से मिलना नहीं चाहते थे, इसलिए वह गुप्तकाशी से केदारनाथ चले गए। गुप्तकाशी समुद्र तल से क्फ्क- मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह एक स्तूप नाला पर स्थित है जो कि ऊखीमठ के समीप स्थित है। इसके अलावा पुराना विश्वनाथ मंदिर, अराधनेश्रवर मंदिर और मणिकारनिक कुंड गुप्तकाशी के प्रमुख आकर्षण केन्द्र हैं।

सोनप्रयाग : सोनप्रयाग समुद्र तल से क्त्ख- मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह केदारनाथ के प्रमुख मार्ग पर स्थित है। सोन प्रयाग प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। सोनप्रयाग से केदारनाथ की दूरी क- किलोमीटर है। यह वहीं स्थान है जहां भगवान शिव और पार्वती का विवाह हुआ था। सोनप्रयाग से त्रियुगीनारायण की दूरी बस द्वारा क्ब किलोमीटर है और इसके बाद पांच किलोमीटर पैदल यात्रा करनी होगी।

खिरसू : बर्फ से ढंके पर्वतों पर स्थित खिरसू बहुत ही खूबसूरत स्थान है। यह जगह हिमालय के मध्य स्थित है। इसी कारण यह जगह पर्यटकों को अपनी ओर अधिक आकर्षित करती है। इसके अलावा यहां से कई अन्य जाने-अनजाने शिखर दिखाई पड़ते हैं। खिरसू पौढ़ी से क- किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह समुद्र से क्त्र मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां बहुत अधिक सं□या में ओक, देवदार के वृक्ष हैं।

गौरीकुंड : सोन प्रयाग से गौरीकुंड की दूरी भ किलोमीटर है। यह समुद्र तल से क-त्त्ख मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। केदारनाथ मार्ग पर गौरीकुंड अंतिम बस स्टेशन है। केदारनाथ में प्रवेश करने के बाद लोग यहां पूल पर स्थित गर्म पानी से स्नान करते हैं। इसके बाद गौरी देवी मंदिर दर्शन के लिए जाते हैं। यह वहीं स्थान है जहां माता पार्वती ने भगवान शिव को पाने के लिए

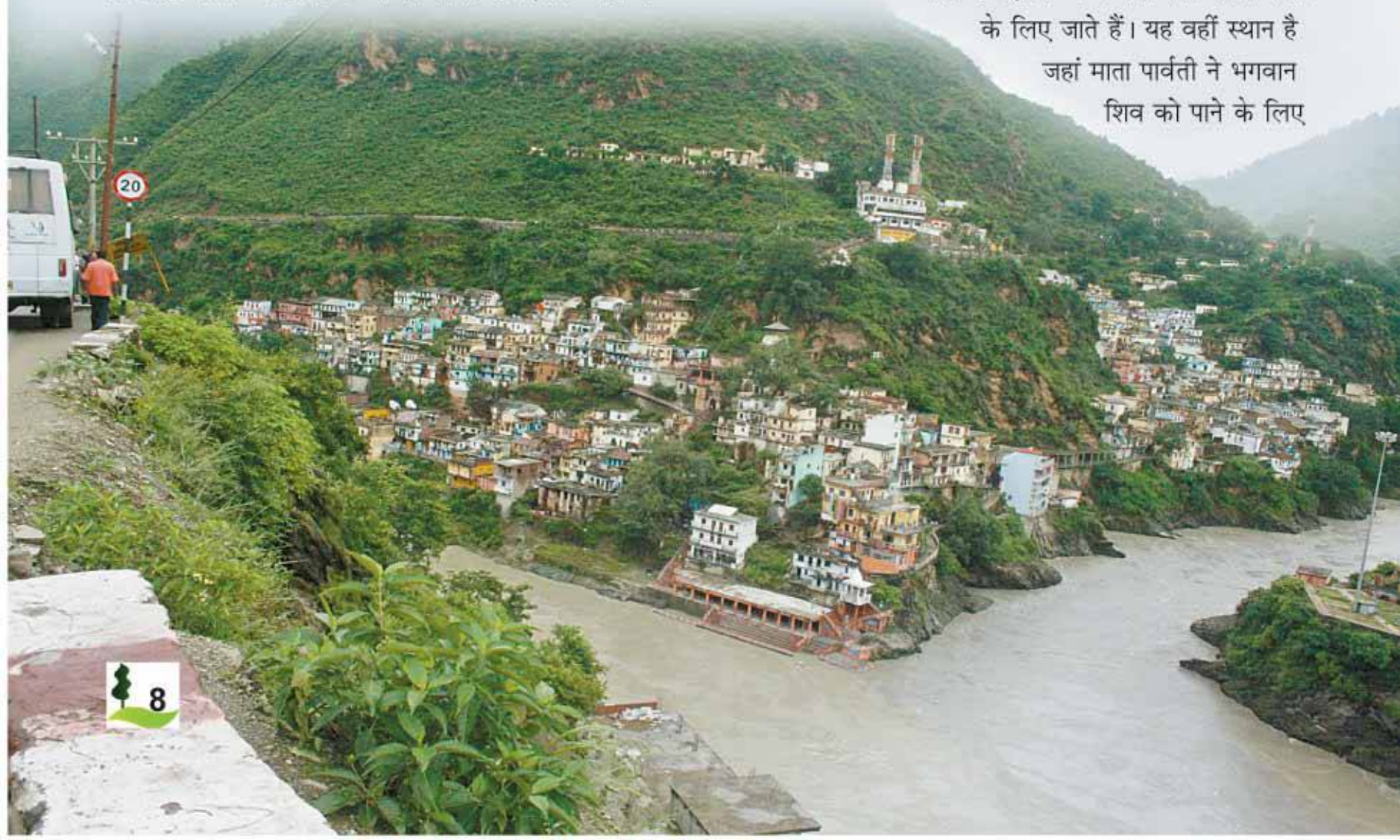

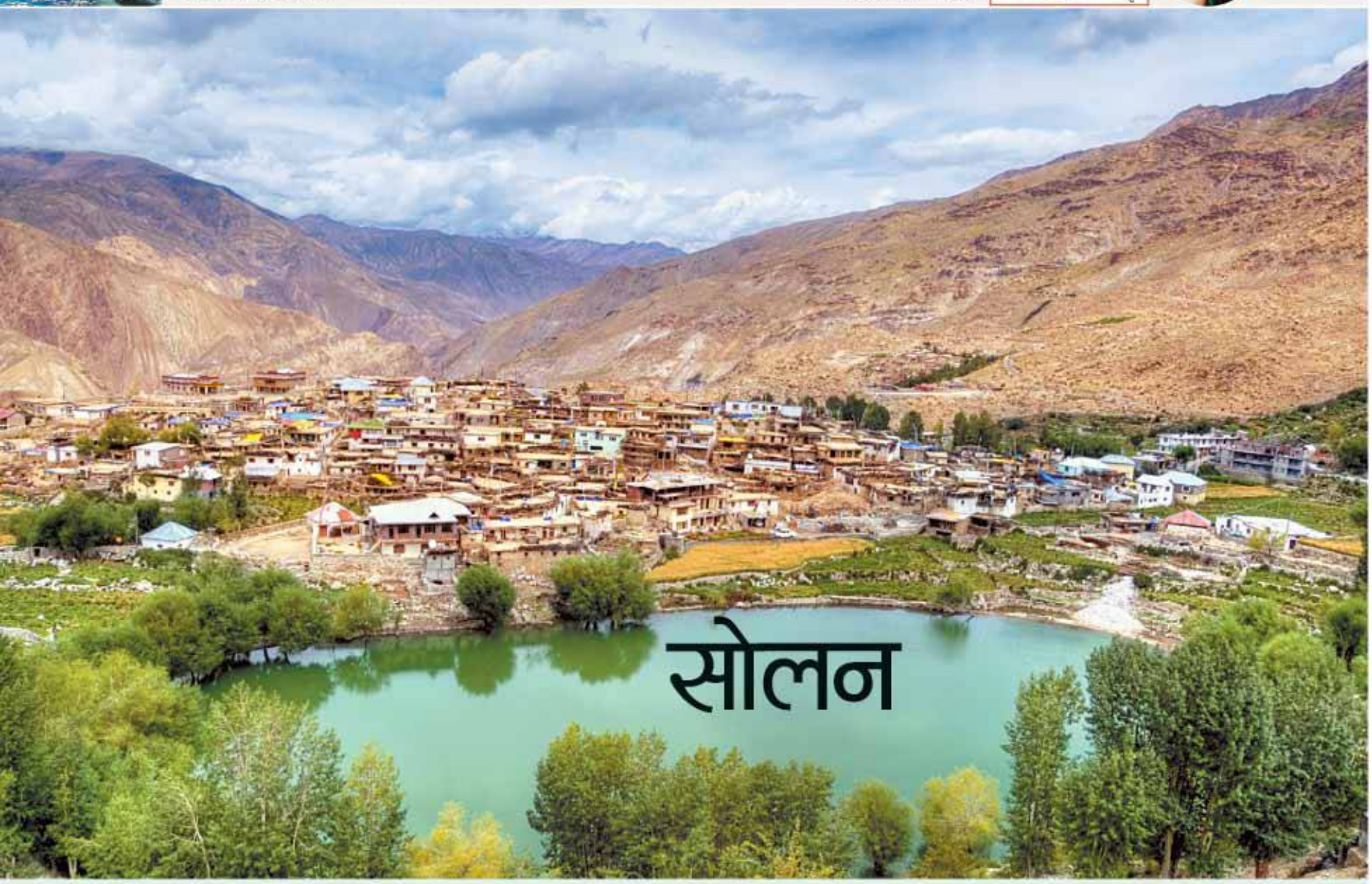

सोलन

हिमाचल प्रदेश में स्थित सोलन जिला एक सुंदर स्थान है। इसे भारत के 'मशरूम शहर' के नाम से भी जाना जाता है, □योंकि इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर मशरूम की खेती होती है। इस जिले का नाम देवी सोलनी के नाम पर रखा गया है। समुद्र तल से लगभग क्फ्भ् मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस जिले में पर्यटन के लिए कई सुंदर स्थान हैं।

कसौली, बडोग, चैल, शलूनी देवी मंदिर और बॉन मठ आदि यहां के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से हैं। ऊंचे पर्वतों और खूबसूरत दृश्यों का अद्भुत नजारा पर्यटकों को बार-बार अपनी ओर खींचता है। यही वजह है कि काफी सं□या में पर्यटक यहां आना पसंद करते हैं। यहां के पर्वत देवदार, खुबानी और अखरोट के वृक्षों से घिरे हुए हैं। समुद्र सतह से क्ब्स्त्र मीटर की ऊंचाई पर स्थित सोलन का संपूर्ण क्षेत्र घने जंगलों और ऊंचे पहाड़ों से घिरा है।

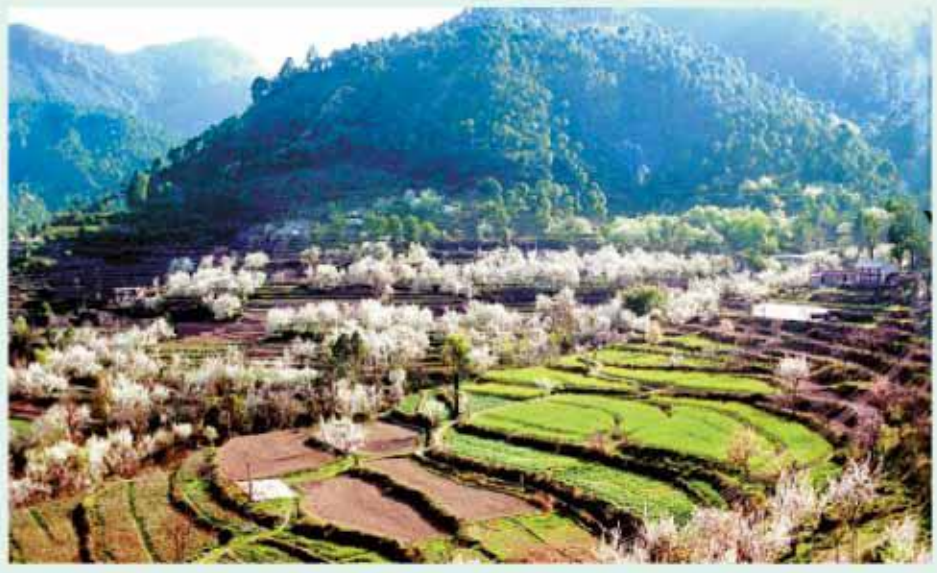

क-त्त् मीटर की ऊंचाई पर स्थित मतिउल चोटी शहर के पूर्व में स्थित है और इसे यहां से आसानी से देखा जा सकता है। शहर के उ□ार में कारोल चोटी है जो इस क्षेत्र की सबसे ऊंची चोटी है। सोलन अन्य हिल स्टेशनों जैसे कांडाघाट, कसौली, चैल और दगशाई की सैर के लिये आधार के समान है। कारोल पर्वत के शीर्ष के पास एक गुफा है, जो लोककथाओं के अनुसार वही गुफा है जहां महाभारत के पांडव उनके निर्वासन के दौरान रहे थे।

ब्रिटिश सेना के विरुद्ध वर्ष क-ख के आयरिश विद्रोह का गठन भी इस क्षेत्र में किया गया था, जिससे इस स्थान को ऐतिहासिक मह□व प्राप्त हुआ। सोलन के प्रमुख पर्यटन के आकर्षणों में युंगडरुंग ति□बती मठ, शोलोनी देवी मंदिर, गोरखा फोर्ट और जाटोली शिव मंदिर आते हैं। सोलन का मौसम सालभर खुशनुमा रहता है।

उदुपी

श्रीकृष्ण मंदिर

कदियाली मंदिर : माना जाता है कि पहले कदियाली को कदेहल्ली कहा जाता था और यह शिवल्ली का हिस्सा था। यह मंदिर अनंतेश्वर मंदिर के नाम से जाना गया, जो कृष्ण मंदिर के पास स्थित है।

श्री कृष्ण मंदिर : यहां का प्रमुख मंदिर है, जिसमें भगवान कृष्ण की आभूषणों से सुसज्जित प्रतिमा स्थापित है। मंदिर की प्रमुख विशेषता यह प्रतिमा ही है जिसकी स्थापना स्वयं माधवाचार्य ने की थी। मंदिर का अन्य आकर्षण कनकन किंडी नामक एक छोटी खिड़की है, जिसके बारे में माना जाता है कि यहीं से भगवान कृष्ण ने अपने भ□त कनकदेस को दर्शन दिए थे।

श्री महालिंगेश्वर महागणपति मंदिर : पदुबिद्रे एक पवित्र स्थान है जहां बहुत से मंदिर हैं और यहीं पर दो साल में एक बार ध□के बाली का आयोजन किया जाता है। पदुबिद्रे का महालिंगेश्वर महागणपति मंदिर उदुपी और दक्षिण कन्नड़ का प्रसिद्ध मंदिर है।

माल्पे : माल्पे नगर उदुपी से करीब चार किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। उदयवरा नदी के मुहाने पर बना यह कर्नाटक का सबसे मह□वपूर्ण बंदरगाह है। इस स्थान की प्राकृतिक खूबसूरती देखते ही बनती है। लंबे समय से माल्पे व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। यह एक प्राकृतिक बंदरगाह है। इसके पश्चिम में तीन चट्टानी टापू भी हैं।

सेंट मेरी द्वीप : सेंट मेरी छोटे-छोटे टापुओं का समूह है जो माल्पे से थोड़ा उ□र में उदुपी से सात किलोमीटर दूर है। वर्ष क्ब-त में वास्को-डी-गामा ने इनमें से एक द्वीप पर कदम रखा था जिसे वास्को ने अल प्रेडोन डी सांटा मारिया कहा। इस पर इसका नाम सेंट मारिया पड़ा। उ□ारी टापू नारियल के पेड़ों से भरा है जो इसे अन्य सभी द्वीपों से अधिक छायादार बनाते हैं। यह स्थान अपने चट्टानों की विचित्र स्थिति के कारण सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं।

मूकंबिका वन्यजीव अ□ायारण्य : ख्ब्स्त्र वर्ग किलोमीटर में फैला मूकंबिका वन्यजीव अ□ायारण्य घने सदाबहार वनों और अर्द्ध सदाबहार वनों के बीच स्थित है। पश्चिमी घाट पर स्थित इस अ□ायारण्य के पास शरवती घाटी वन्यजीव अभयारण्य भी है। यहां पर अनेक प्रजातियों के जानवर पाए जाते हैं। इनमें शेर की पूंछ वाला बंदर, लंगूर, भालू, जंगली सूअर, तेंदुआ, भेड़िया, चीतल, सांभर और बार्किंग डीयर आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा यहां विविध प्रकार के पक्षी भी देखे जा सकते हैं। यह अ□ायारण्य ट्रैकिंग और नेचर कैंपिंग का मौका देता है। कोल्लुर और मूकंबिका मंदिर यहां के निकटवर्ती पर्यटक स्थल हैं।

मरवंते : उदुपी से भ किलोमीटर दूर स्थित है मरवंते। इसके पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में सोरपनिका नदी है और बीच में सड़क है। मरवंते का खूबसूरत तट बड़ी सं□या में सैलानियों को लुभाता है। दूर तक फैली सुनहरी रेत और खजूर के पेड़ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

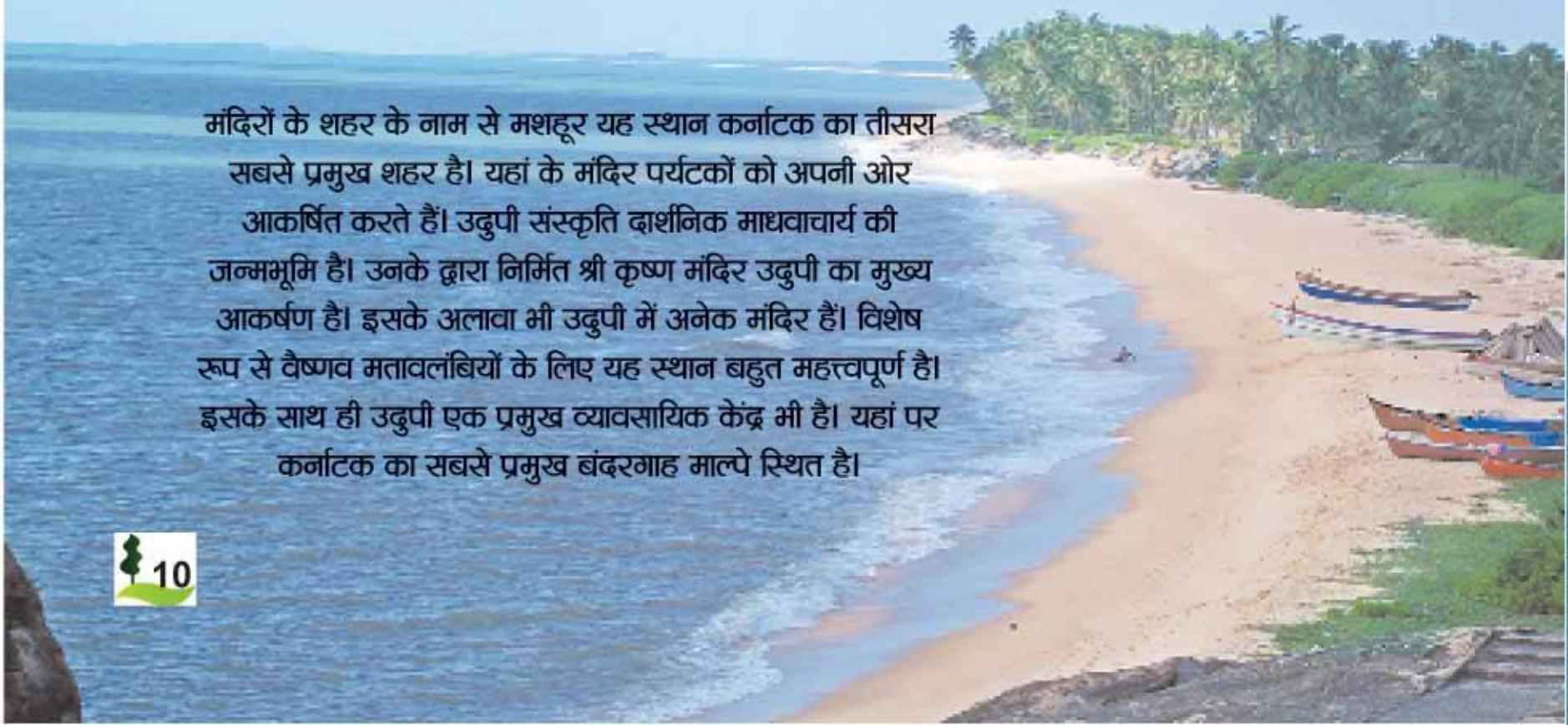

मंदिरों के शहर के नाम से मशहूर यह स्थान कर्नाटक का तीसरा सबसे प्रमुख शहर है। यहां के मंदिर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उदुपी संस्कृति दार्शनिक माधवाचार्य की जन्मभूमि है। उनके द्वारा निर्मित श्री कृष्ण मंदिर उदुपी का मुख्य आकर्षण है। इसके अलावा भी उदुपी में अनेक मंदिर हैं। विशेष रूप से वैष्णव मतावलंबियों के लिए यह स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ ही उदुपी एक प्रमुख व्यावसायिक केंद्र भी है। यहां पर कर्नाटक का सबसे प्रमुख बंदरगाह माल्पे स्थित है।

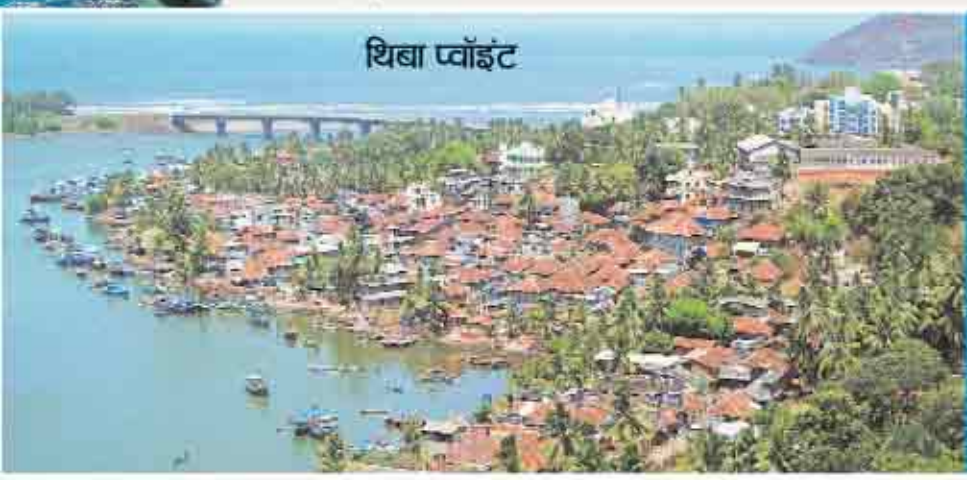

रत्नागिरी महाराष्ट्र का एक प्रमुख शहर है। यह बाल गंगाधर तिलक की जन्मस्थली है। रत्नागिरी कोंकण क्षेत्र का ही एक भाग है। रत्नागिरी का मराठा इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

रत्नागिरी दुर्ग : रत्नागिरी, रत्नदुर्ग या भगवती दुर्ग के रूप में जाना जाने वाला एक दुर्ग है। रत्नागिरी मुंबई से ख्ख किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। सोलहवीं सदी में बीजापुर के सुल्तानों ने इसका निर्माण करवाया था। शिवाजी ने क्स्त्र ई. में इसका पुनर्निर्माण कराकर मराठा नौसेना का प्रमुख केन्द्र बनाया। इस दुर्ग में तीन सुदृढ़ चोटियां हैं। दक्षिण की ओर स्थित सबसे बड़ी चोटी पारकोट के नाम से जानी जाती है। मध्य चोटी पर बाले नामक किला है, जिसमें प्रसिद्ध भगवती मंदिर आज भी सुरक्षित है। चोटी के पश्चिम में कुछ पुरानी गुफाएं भी हैं। बर्मा (□यांमार) के अंतिम राजा थिबॉ को अंग्रेजों ने क्त्त्भ ई. में देश निकाला देकर यहीं भेजा था तथा उसे विशेष रूप से नजरबंद करके रखा गया था।

जयगढ़ किला : जयगढ़ किले की स्थापना क्स्त्र वीं शता□दी में हुई थी। जयगढ़ किला एक खड़ी पहाड़ी पर बना हुआ है। किले के पास से ही संगमेश्वर नदी बहती है। जयगढ़ किले से आसपास का दृश्य बेहद सुंदर दिखता है।

मांडवी बीच : मांडवी बीच समुद्र किनारे का व्यापक विस्तार है जो रत्नागिरी शहर में स्थित है। यह बीच रजिवाड़ा बंदरगाह तक फैला हुआ है और दक्षिण में अरब सागर से मिलता है। इस बीच को □लेक सी (काला समुद्र) भी कहा जाता है, □योंकि यहां काली रेत पायी जाती है। इसे रत्नागिरी का गेटवे कहा जाता है। पानी के खेलों से

अंजारले बीच

बोधगया

बिहार की राजधानी पटना के दक्षिण-पूर्व में लगभग क किलोमीटर दूर स्थित बोधगया गया जिले से सटा एक छोटा शहर है। कहते हैं, बोधगया में बोधि पेड़ के नीचे तपस्या कर रहे गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तभी से यह स्थल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्ष ख्ख में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

करीब भ ई.पू. में गौतम बुद्ध फाल्गु नदी के तट पर पहुंचे और बोधि पेड़ के नीचे तपस्या करने बैठे। तीन दिन और रात की तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद से वे बुद्ध के नाम से जाने गए।

इसके बाद उन्होंने वहां सात सप्ताह अलग-अलग जगहों पर ध्यान करते हुए बिताया, और फिर सारनाथ जा कर धर्म का प्रचार शुरू किया।

बुद्ध के अनुयायिओं ने बाद में उस जगह पर जाना शुरू किया, जहां बुद्ध ने वैशाख महीने में पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्रप्ति की थी। धीरे-धीरे यह जगह बोधगया के नाम से जानी गयी, और दिन बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जाना गया।

महाबोधि मन्दिर : बुद्ध के ज्ञान की यह भूमि आज बौद्धों के सबसे बड़े तीर्थस्थल के रुप में प्रसिद्ध है। विश्व के हर धर्म के लोग यहां घूमने आते हैं। पक्षियों की चहचहाट के बीच बुद्धम्-शरणम्-गच्छामि... की हल्की ध्वनि अनोखी शांति प्रदान करती है।

महाबोधि मंदिर यहां का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर को यूनेस्को ने वर्ष ख्ख में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया था। बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के ख्भ साल बाद राजा अशोक बोधगया गए। माना जाता है कि उन्होंने महाबोधि मन्दिर का निर्माण कराया। इस मंदिर में बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति स्थापित है। यह मूर्ति पद्मासन की मुद्रा में है। यहां यह अनुश्रुति प्रचलित है कि यह मूर्ति उसी जगह स्थापित है जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

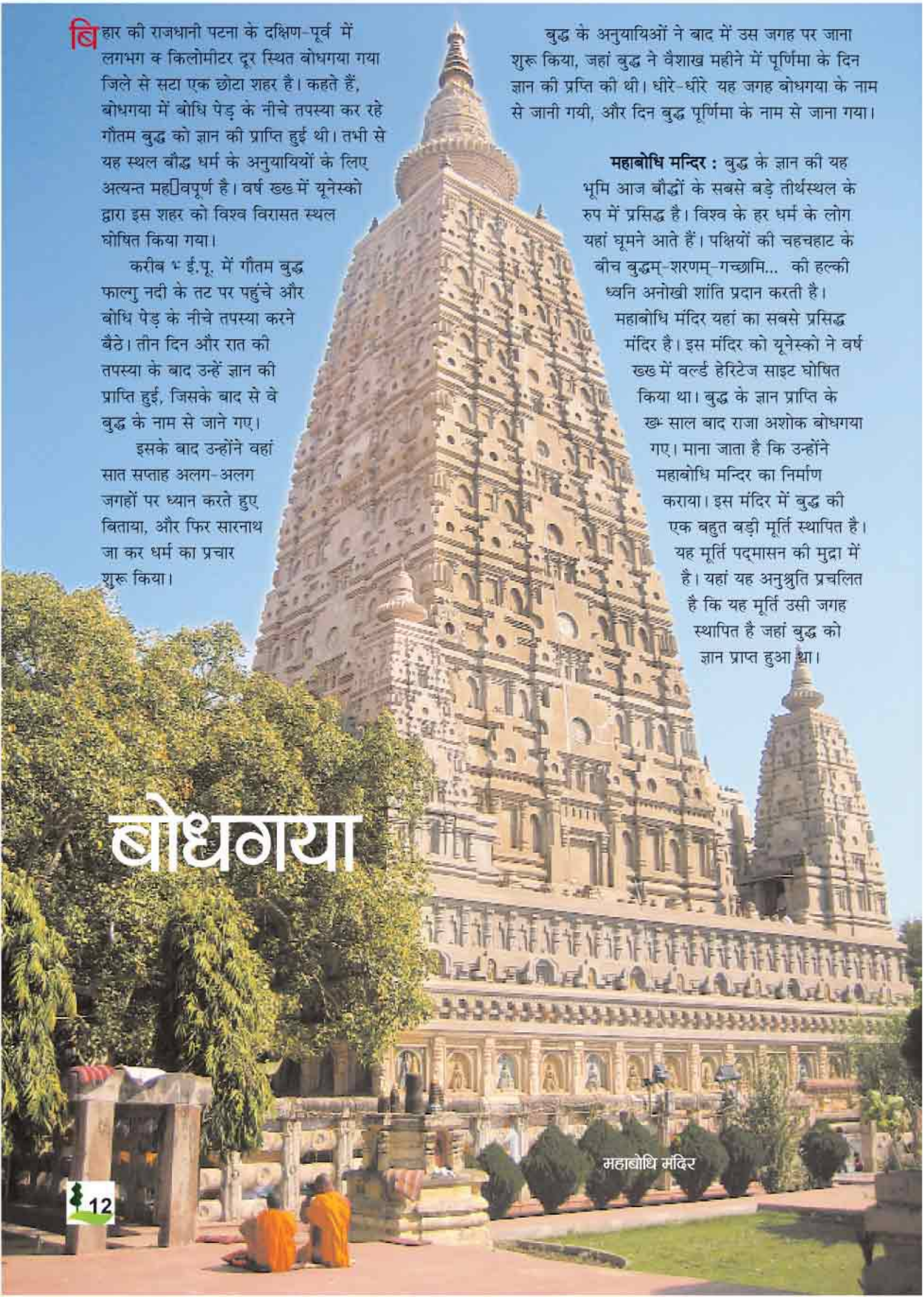

महाबोधि मंदिर

मंदिर के चारों ओर पत्थर की न□काशीदार रेलिंग बनी हुई है। ये रेलिंग ही बोधगया में प्राप्त सबसे पुराना अवशेष है। इस मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व दिशा में प्राकृतिक दृश्यों से समृद्ध एक पार्क है जहां बौद्ध भिक्षु ध्यान साधना करते हैं। आम लोग इस पार्क में मंदिर प्रशासन की अनुमति लेकर ही प्रवेश कर सकते हैं।

इस मंदिर परिसर में उन सात स्थानों को भी चिन्हित किया गया है जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद सात सप्ताह व्यतीत किये थे। जातक कथाओं में उल्लेखित बोधि वृक्ष भी यहां हैं। यह एक विशाल पीपल का वृक्ष है जो मु□य मंदिर के पीछे स्थित है। कहा जाता है कि बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। वर्तमान में जो बोधि वृक्ष है, वह उस बोधि वृक्ष की पांचवीं पीढ़ी है। मंदिर समूह में सुबह के समय घण्टों की आवाज मन को एक अजीब सी शांति प्रदान करती है।

मु□य मंदिर के पीछे बुद्ध की लाल बलुए पत्थर की सात फीट ऊंची एक मूर्ति है। कहा जाता है कि तीसरी शता□दी ईसा पूर्व में इसी स्थान पर सम्राट अशोक ने हीरों से बना राजसिहांसन लगवाया था और इसे पृथ्वी का नाभि केंद्र कहा था। इस मूर्ति के आगे भूरे बलुए पत्थर पर बुद्ध के विशाल पदचिह्न बने हुए हैं।

ति□बतियन मठ : बोधगया का सबसे बड़ा और पुराना मठ है। इस विहार में दो प्रार्थना कक्ष हैं। इसके अलावा इसमें बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा भी है। इससे सटा हुआ ही थाई मठ है। इस मठ के छत की सोने से कलई की गई है। इस कारण इसे गोल्डन मठ कहा जाता है। इस मठ की स्थापना थाईलैंड के राजपरिवार ने बौद्ध की स्थापना के ख्ब् वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में की थी।

इंडोसन-निप्पन-जापानी मंदिर का निर्माण वर्ष क्-स्त्रख्-स्त्रफ् में हुआ था। इस मंदिर का निर्माण लकड़ी के बने प्राचीन जापानी मंदिरों के आधार पर किया गया है। इस मंदिर में बुद्ध के जीवन में घटी मह□वपूर्ण घटनाओं को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। चीनी मंदिर का निर्माण क्-ब्-ई. में हुआ था। इस मंदिर में सोने की बनी बुद्ध की एक प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण क्--स्त्र ई. किया गया था। जापानी मंदिर के उ□र में भूटानी मठ स्थित है। इस मठ की दीवारों पर न□काशी का बेहतरीन काम किया गया है। यहां सबसे नया बना मंदिर वियतनामी मंदिर है। यह मंदिर महाबोधि मंदिर के उ□र में पांच मिनट की पैदल दूरी पर स्थित है। इस मंदिर में बुद्ध के शांति के अवतार अवलोकितेश्वर की मूर्ति स्थापित है।

इन मठों और मंदिरों के अलावा कुछ और स्मारक भी यहां देखने लायक हैं। इन्हीं में से एक है भारत की सबसे ऊंची बुद्ध मूर्ति, जो कि म् फीट ऊंचे कमल के फूल पर स्थापित है। यह पूरी प्रतिमा एक क् फीट ऊंचे आधार पर बनी हुई है। स्थानीय लोग इस मूर्ति को त् फीट ऊंचा मानते हैं।

बोधगया के पास ही एक शहर है गया। यहां भी कुछ पवित्र मंदिर हैं जिन्हें जरूर देखना चाहिए। बोधगया घूमने का सबसे बढ़िया समय बुद्ध जयंती (अप्रेल-मई) है, जिसे राजकुमार सिद्धार्थ के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। इस

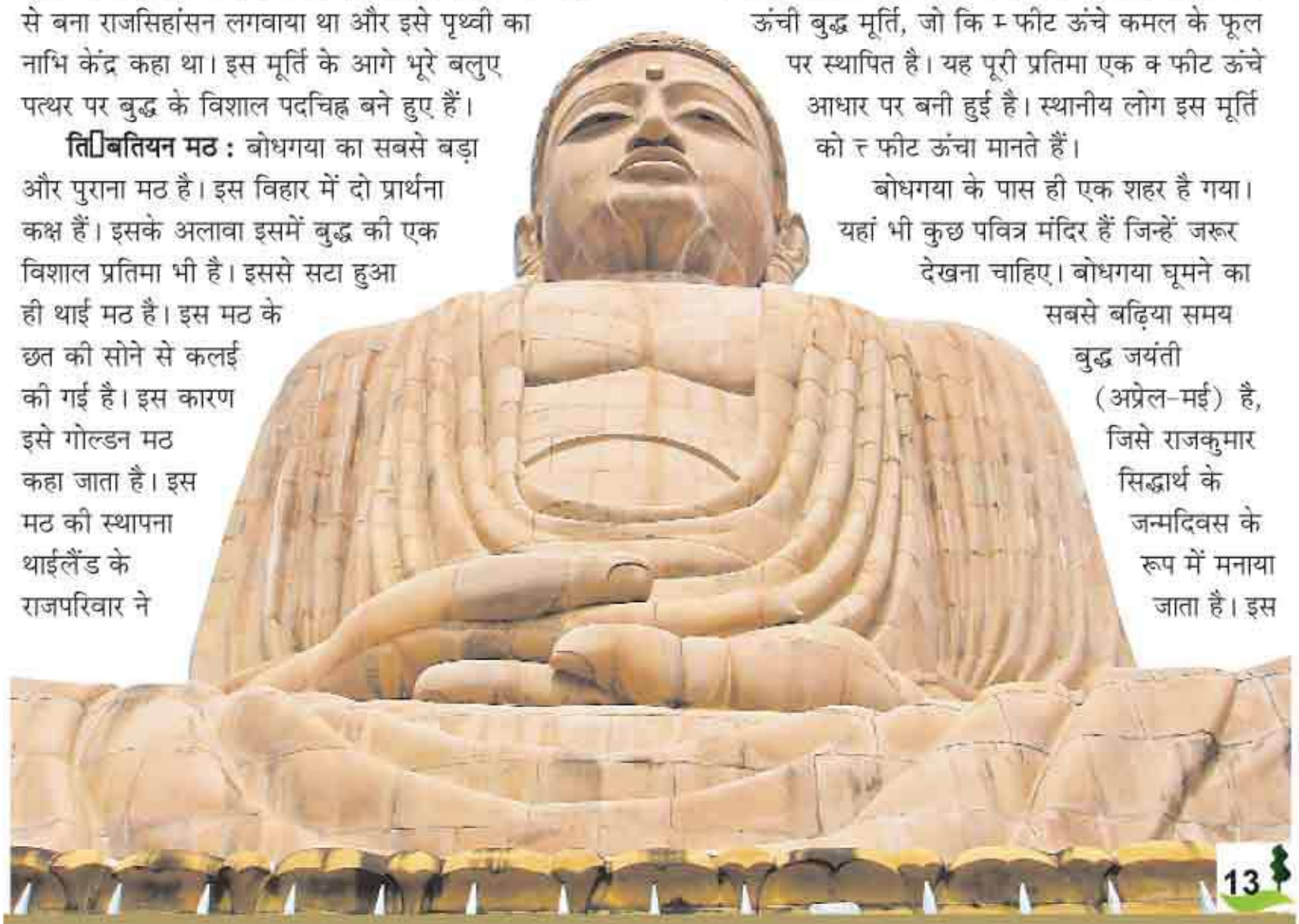

सैर एफिल टॉवर की

दोस्तो, सैरसपाटे के दौरान कई बार आप कुछ ऐसी चीजों के दर्शन करते हैं कि उसके बारे में आपको यह जानने की उत्सुकता और जिज्ञासा हो जाती है कि इसका निर्माण आखिर कब, क्यों और कैसे हुआ होगा? फ्रांस की मशहूर एफिल टॉवर को देखते समय भी आश्चर्य होता है कि यह भव्य टॉवर निर्मित कैसे हुई होगी, कौन लोग इसके निर्माण के पीछे रहे होंगे, और पेरिस की शान यह टॉवर बनी तो तब से अब तक इसमें क्या परिवर्तन आये होंगे। आपने चाहे यह अनूठा टॉवर देखा हो या न देखा हो, हम एफिल टॉवर की पूरी कहानी आपको बताते हैं।

एफिल टॉवर फ्रांस की राजधानी पेरिस में स्थित एक लौह टावर है। ख्- जनवरी क्त्त्त्र को एफिल टॉवर की नींव रखी गई। फ्रांसीसी क्रांति के सौ साल पूरे होने के अवसर पर इसे बनाया गया। इसका निर्माण वर्ष क्त्त्त्र-क्त्त- में शैंप-दे-मार्स में सीन नदी के तट पर पेरिस में हुआ था। यह टॉवर विश्व के उल्लेखनीय निर्माणों में से एक और फ्रांस की संस्कृति का प्रतीक है। एफिल टॉवर की रचना गुस्ताव एफिल द्वारा की गई है और उन्हीं के नाम पर इसका नामकरण हुआ है। पूरा होने पर इसे बनाने वाले गुस्ताव एफिल ने टॉवर के ऊपर फ्रांस का झंडा लगाया। झंडा लहराते वक्त उन्होंने शायद यह सोचा भी नहीं होगा कि पूरी दुनिया इसकी खूबसूरती की दीवानी हो जाएगी।

मजे की बात देखिये कि एफिल टॉवर उस समय की औद्योगिक क्रांति का प्रतीक था और वैश्विक मेले के दौरान आम जनता ने इसे काफी सराहा। फिर भी कुछ नामी हस्तियों ने इस इमारत की आलोचना की और इसे 'नाक में दम' कहा। उस व्त के सभी समाचार पत्र पेरिस के कला समुदाय द्वारा लिखे गए निंदा पत्रों से भरे पड़े थे। यहां तक कि इस इमारत को पेरिस की खूबसूरती खराब करने वाली इमारत का नाम दिया गया था।

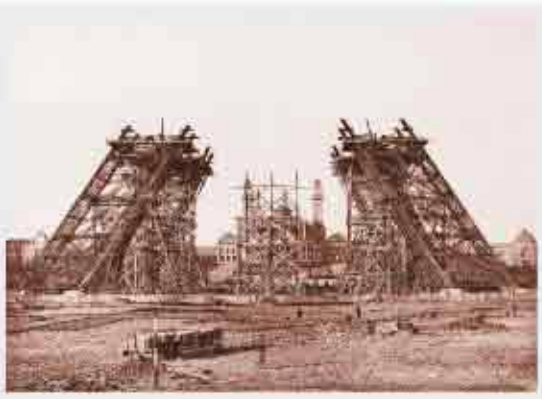

7 दिसम्बर, 1887

21 अगस्त, 1888

20 मार्च, 1888

26 दिसम्बर, 1888

15 मई, 1888

15 मार्च, 1889

जब एफिल टॉवर का निर्माण हुआ, उस समय यह दुनिया की सबसे ऊंची इमारत थी। आज की तारीख में टॉवर की ऊंचाई फ्ख्ब मीटर है, जो की पारंपरिक त्त्क मंजिला इमारत की ऊंचाई के बराबर है। लोहे से बने इस टॉवर को 'आयरन लेडी' के नाम से भी जाना जाता है। इसके निर्माण के लिए स्त्र,फ टन लोहे का इस्तेमाल हुआ। यह तीन मंजिला टॉवर पर्यटकों के लिए साल के फ्भ्- दिन खुला रहता है। यह टॉवर पर्यटकों द्वारा टिकट खरीदकर देखी गई दुनिया की इमारतों में अव्वल स्थान पर है।

वर्ष क्त्त- में, फ्रांसीसी क्रांति के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर वैश्विक मेले का आयोजन

दिन के उजाले में एफिल टॉवर

ढलती शाम में सूरज की लालिमा में नहाया एफिल टॉवर

इस टावर के लिए सरकार के तीन मु□य शर्तें थीं- टॉवर की ऊंचाई फ मीटर होनी चाहिए, टॉवर लोहे का होना चाहिए, टॉवर के चारों मु□य स्तंभ के बीच की दूरी क्ख मीटर होनी चाहिए। सरकार द्वारा घोषित की गई तीनों शर्तें पूरी की गई हों, ऐसी क्त्र योजनाओं में से गुस्ताव एफिल की परियोजना मंजूर की गई। मौरिस कोच्लिन और एमिल नुगिएर इस परियोजना के संरचनात्मक इंजीनियर थे और स्ठेफेंन सौवेस्ट्रे वास्तुकार थे। तीन सौ मजदूरों ने मिल कर एफिल टॉवर को ख साल, ख महीने और भ दिनों में बनाया, जिसका उद्घाटन फ्क मार्च क्त्त- में हुआ और म मई से यह टॉवर लोगों के लिए खोला गया।

शुरुआती दौर में एफिल टॉवर को ख साल की अवधि के लिए बनाया गया था, जिसे क-- में नष्ट करना था। लेकिन इन ख सालों के दौरान टॉवर ने अपनी उपयोगिता वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में साबित कर दी थी, इसीलिये आज तक यह टॉवर पेरिस की शान बन कर खड़ा है।

प्रथम विश्व युद्ध में हुई मार्न की लड़ाई में भी एफिल टॉवर का बखूबी इस्तेमाल पेरिस की टै□सयों को युद्ध मोर्चे तक भेजने में हुआ था।

क्क ऐंटेना समेत टावर की ऊंचाई फ्ख मीटर है और समुद्र तट से फ्फ मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। एफिल टॉवर एक वर्ग में बना हुआ है जिसके हर किनारे की लंबाई क्ख मीटर है।

टॉवर के चारों स्तंभ चार प्रमुख दिशाओं में बने हैं और उन्हीं दिशाओं के अनुसार स्तंभों का नामकरण किया गया है। जैसे उ□ार स्तंभ, दक्षिण स्तंभ, पूरब स्तंभ और पश्चिम स्तंभ। फिलहाल, उ□ार स्त□भ, दक्षिण स्त□भ और पूरब स्त□भ में टिकट घर और प्रवेश द्वार हैं। उ□ार और पूरब स्तंभों में लि□ट की सुविधा है और दक्षिण स्त□भ में सीढ़ियां हैं, जो पहली और दूसरी मंजिल तक पहुंचाती हैं। दक्षिण स्त□भ में अन्य दो निजी लि□ट भी हैं जिनमें से एक सर्विस लि□ट है और दूसरी लि□ट दूसरी मंजिल पर स्थित ला जुल्स वेर्नेस नामक रेस्टोरेंट के
लिए है।

भ्त्र मीटर की ऊंचाई पर स्थित एफिल टॉवर की प्रथम मंजिल का क्षेत्रफल ब्ख वर्ग मीटर है, जहां एक साथ फ लोग समा सकते हैं। मंजिल के चारों ओर बाहरी तरफ एक जालीदार छज्जा है, जिसमें पर्यटकों की सुविधा के लिए पैनोरामिक टेबल ओर दूरबीन रखे हुए हैं जिनसे पर्यटक पेरिस शहर की दूसरी ऐतिहासिक इमारतों का नजारा देख सकते हैं।

गुस्ताव एफिल की ओर से श्रद्धांजलि के रूप में पहली मंजिल की बाहरी तरफ क्त और क- वीं सदी के महान वैज्ञानिकों का नाम बड़े स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है, जो नीचे से दिखाई देता है। बच्चों के लिए एक फॉलॉगस नामक प्रदर्शन है, जिसमें खेल-खेल में बच्चों को एफिल टॉवर के बारे में जानकारी दी जाती है। बड़ों के लिए भी कई तरह के प्रदर्शन का आयोजन होता है जैसे कि तस्वीरों का, एफिल टॉवर का इतिहास और कभी-कभी सर्दियों में आइस-स्केटिंग भी होती है। कांच की दीवार वाला 'भ्त्र टूर एफिल' नामक रेस्टोरेंट भी है, जिसमें पर्यटक खाते हुए शहर की खूबसूरती का लुत्फ उठा सकते हैं। साथ में एक कैफेटेरिया भी है।

क्क मीटर की ऊंचाई पर स्थित एफिल टॉवर की दूसरी मंजिल का क्षेत्रफल क्म वर्ग मीटर है, जो कि एक साथ क्म लोगों को समाने की क्षमता रखता है। दूसरी मंजिल से पेरिस का सबसे बेहतर नजारा देखने को मिलता है। जब मौसम साफ हो तब त्र किलोमीटर तक देख सकते है। दूसरी मंजिल के ऊपर एक उप-मंजिल भी है जहां से तीसरी मंजिल के लिए लि□ट ले सकते हैं। जिन पर्यटकों ने दूसरी मंजिल तक का टिकट खरीदा हो, ऐसे पर्यटक अगर तीसरी मंजिल का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो उनके लिए एक टिकटघर भी है, जहां से वे तीसरी मंजिल का टिकट खरीद सकते हैं।

ख्त्र मीटर की ऊंचाई पर एफिल टॉवर की तीसरी मंजिल का क्षेत्रफल फ वर्गमीटर है, जो एक साथ ब लोगों को समाने की क्षमता रखता है। दूसरी से तीसरी मंजिल तक सिर्फ लि□ट के द्वारा ही जा सकते हैं। इस मंजिल को चारों ओर से कांच से बंद किया गया है। यहां गुस्ताव एफिल का ऑफिस भी स्थित है, जिसे कांच के कैबिन के रूप में बनाया गया है, ताकि पर्यटक इसे बाहर से देख सकें। इस ऑफिस में गुस्ताव एफिल की मोम की मूर्ति रखी है।

तीसरी मंजिल के ऊपर एक उप-मंजिल है, जहां सीढ़ियों से जाया जा सकता है। इस उप-मंजिल के चारों ओर जाली लगी हुई है और यहां पेरिस की खूबसूरती का नजारा लेने के लिए कई दूरबीन रखे हैं। इस के ऊपर एक दूसरी उप मंजिल है जहां जाना निषेध है। यहां रेडियो और टेलीविजन प्रसारण के ऐंटेना लगे हैं। वर्ष क-ख्क में यहीं से फ्रांस में पहला रेडियो प्रसारण हुआ।

पिछले कई सालों से हर साल तकरीबन म लाख से त्र लाख पर्यटकों-प्रवासियों ने एफिल टॉवर की सैर की है।

हर रात को अंधेरा होने के बाद क बजे तक (और गर्मियों में ख बजे तक) एफिल टॉवर को रोशन किया जाता है, ताकि दूर से भी टॉवर दिख सके। फ्क दिस□बर, क--- की रात को नई सदी के आगमन के अवसर पर एफिल टॉवर को अन्य ख हजार बल्बों से रोशन किया गया था। प्रतिदिन सूर्यास्त के बाद हर एक घंटे पर पांच मिनट के लिए टॉवर की रोशनी झिलमिलाती है।

आज पेरिस आने वाला हर व्य□ित अपने साथ खिलौने के रूप में एक नन्हा एफिल टॉवर जरूर साथ ले कर जाता है। दुनियाभर में लाखों लोगों के घरों में एफिल टॉवर

अनोखे पर्यटन स्थल

केनियन डि चेली नेशनल पार्क

चारों ओर जहां तक नजर जाती है, वहां बस गुलाबी रंग की चट्टानें नजर आती हैं। सैंकड़ों फीट गहरी इन घाटियों को देखते ही मन में रोमांच उत्पन्न होने लगता है। घाटी के तल में उगे हुए विशाल पेड़ ऐसे लगते हैं मानो छोटी-छोटी झाड़ियां उगी हों। यहां की प्राकृतिक बनावट को देखते-देखते आंखें थकने लगती हैं, लेकिन मन नहीं भरता। मन में जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है कि इन अथाह गहरी घाटियों का निर्माण कब और कैसे हुआ होगा। अपने मन की उत्सुकता को शांत करने के लिए चलते हैं, इन हरी भरी गुलाबी गहरी घाटियों में।

दोस्तो, दरअसल केनियन डि चेली इस समय पर्यटन पार्क है। इस पार्क की आधिकारिक स्थापना क अप्रेल क-फ्क में की गई। यह उ□ारी पूर्व अरिजोना, उ□ारी अमरीका में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र में पूर्व में नवजो नामक जनजाति के लोग निवास करते थे। उन जनजातियों के यहां अवशेष भी मिलते रहते हैं। यह क्षेत्र चारों ओर करीब त्त्ब एकड़ में फैला हुआ है। लगभग आठ सौ फीट गहरे इस क्षेत्र में दो गहरी घाटियां और भी हैं। इसी क्षेत्र में ममी केव भी हैं, जहां जनजाति के लोग अपने पूर्वजों के शरीर को संरक्षित रखते थे। इन गहरी घाटियों का ऐसा आकार इसके पूर्व में स्थित चुस्का नामक पहाड़ों की शृंखला से बह कर आने वाले पानी और तेज हवाओं के कारण हुआ। यहां हर साल लाखों लोग पर्यटन के लिए आते हैं। इस क्षेत्र में सैलानियों के ठहरने की व्यवस्था भी है।

गिला क्लिफ डवेलिंग नेशनल मोन्यूमेंट

मे□िसको स्थित गिला □िलफ डवेलिंग मोन्यूमेंट तीन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह प्राचीन स्मारक गिला नेशनल वन में स्थित है। यह स्मारक समुद्र तल से करीब साढ़े सात सौ फीट ऊंचा है। इस परिसर में कई प्रजातियों के पेड़-पौधे लगे हुए हैं, जो यहां की शोभा बढ़ा रहे हैं। पहाड़नुमा विशाल चट्टानें आपस में अंदर से एक-दूसरे से मिली हुई हैं। यानी एक चट्टान से दूसरी में जाया जा सकता है। इन चट्टानों के अंदर से काटकर बड़े-बड़े कमरे बनाए गये हैं, जिनमें सदियों पूर्व जनजातियां निवास करती थीं। यहां ब्र कमरे हैं। जो वर्तमान में अच्छी स्थिति में हैं। चट्टानों की अंदर की बनावट ही पर्यटकों को यहां आने के लिए लुभाती है। यहां तत्कालीन समय की ममी भी मिली है। इन पूरी गुफाओं में घूमने के लिए आपको करीब तीन-चार घंटे लग जाएंगे। यहां का मौसम

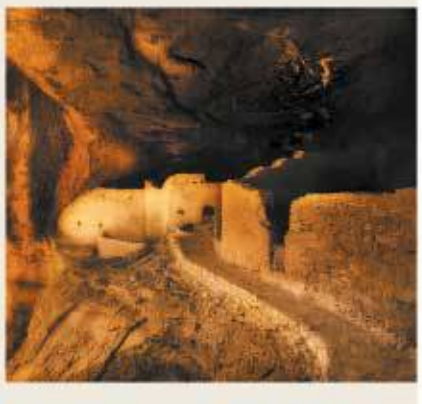

गार्डन ऑफ गोड्स

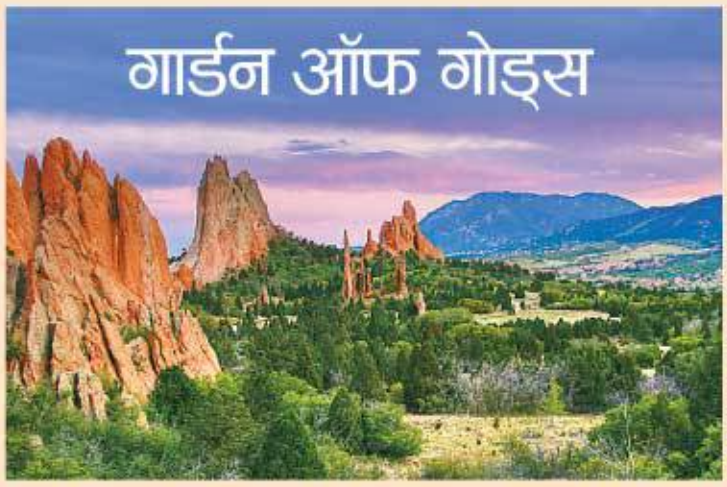

यहां चारों ओर हरियाली की चादर बिछी हुई है। हरीतिमा के मध्य गुलाबी रंग की कई आकर्षक चट्टानें रोमांच उत्पन्न करती हैं। कई चट्टानें बिल्कुल सीधी हैं। कई आड़ी-तिरछी, तो कई बिल्कुल ही कम आधार पर टिकी हुई हैं। यह दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। यहां आने वाले पर्यटक इस रोमांच भरे वातावरण को अपनी आंखों और कैमरे में कैद करके ले जाते हैं। गार्डन ऑफ गोड्स कोलोरेडो सप्रिंग्स अमरीका में स्थित है। यह गार्डन लगभग फ्प सौ एकड़ में फैला हुआ है। इसे वर्ष क-स्त्रक में पहचान मिली। यहां लाखों वर्षों पूर्व हुई भूगर्भीय हलचल के कारण यह गार्डन अस्तित्व में आया। पहले इसका नाम रॉक करैल था। यहां कई प्रकार के जीव-जन्तु भी निवास करते हैं। यहां सैर के लिए आने वाले रॉक □लाइ□बंग का आनंद लेते हैं। यहां सालभर में करीब बीस लाख सैलानी आते हैं। इस गार्डन में पन्द्रह मील का रास्ता बना हुआ है जिस पर पर्यटक घूम-घूम कर पूरे गार्डन की प्राकृतिक संरचना का लुत्फ उठा

जिलेट केसल स्टेट पार्क

यह पार्क क्ख्ब एकड़ में फैला हुआ है। इसका निर्माण तत्कालीन शिल्पकार जिलेट विलियम द्वारा वर्ष क-क्ब में किया गया। अमरीका के कन□टीकेट क्षेत्र में स्थित इस किले को देखने के लिए वर्षभर में लगभग तीन लाख पयर्टक आते हैं। इस परिसर में □यूजियम है। घूमने के लिए ल□बा रास्ता,

पिकनिक एरिया, थियेटर सहित अन्य हैं। किले की निर्माण कला, यहां की अनोखी और कलात्मक चीजें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। महल के दरवाजे, लॉकिंग सिस्टम, दर्पण, शयन कक्ष, आसपास की प्राकृतिक छटा, पास ही बहने वाली नदी, पहाड़ सहित बहुत सी ऐसी विशेषताएं हैं, जो आगन्तुकों को आकर्षित करती हैं। इस किले के आसपास कई प्रजातियों के पेड़ हैं। हवा चलती है तो ऐसा लगता है मानो पेड़ की शाखाएं किले को छूने के लिए आतुर हों। इस परिसर में प्रवेश करते ही मन-मस्तिष्क सुकून महसूस करता है।

कैसल रॉक

चारों ओर उगी घास के मध्य प्राकृतिक रूप से बनी सफेद पत्थर की विशाल किलेनुमा आकृति यहां आने वाले पर्यटकों को दूर से ही अपनी ओर आकर्षित करती है। इस क्षेत्र में ऐसी कई कलात्मक आकृतियां- संरचनाएं बनी हैं जो प्रकृति की कारीगरी को उजागर करके सैलानियों को आश्चर्यचकित करती हैं। वर्षा के दिनों में इन आकृतियों के आसपास उगी ऊंची- ऊंची घास इनके सौंदर्य में चार चांद लगा देती है। ये सफेद पथरीली कलात्मक आकृतियां अमरीका के कनसास प्रांत के गोव जिले में स्थित हैं। यह पत्थर ऐसा लगता है मानो चूने का पत्थर हो। इस तरह का पत्थर सदियों पूर्व यहां स्थित समुद्र के कारण बना। इन चट्टानों की ऊंचाई स्त्र से त्त फीट तक है। यहां जाने के लिए वाहन का सहारा लेना होता है, □योंकि ये अद्भुत आकृतियां कई किलोमीटर में फैली हुई हैं।

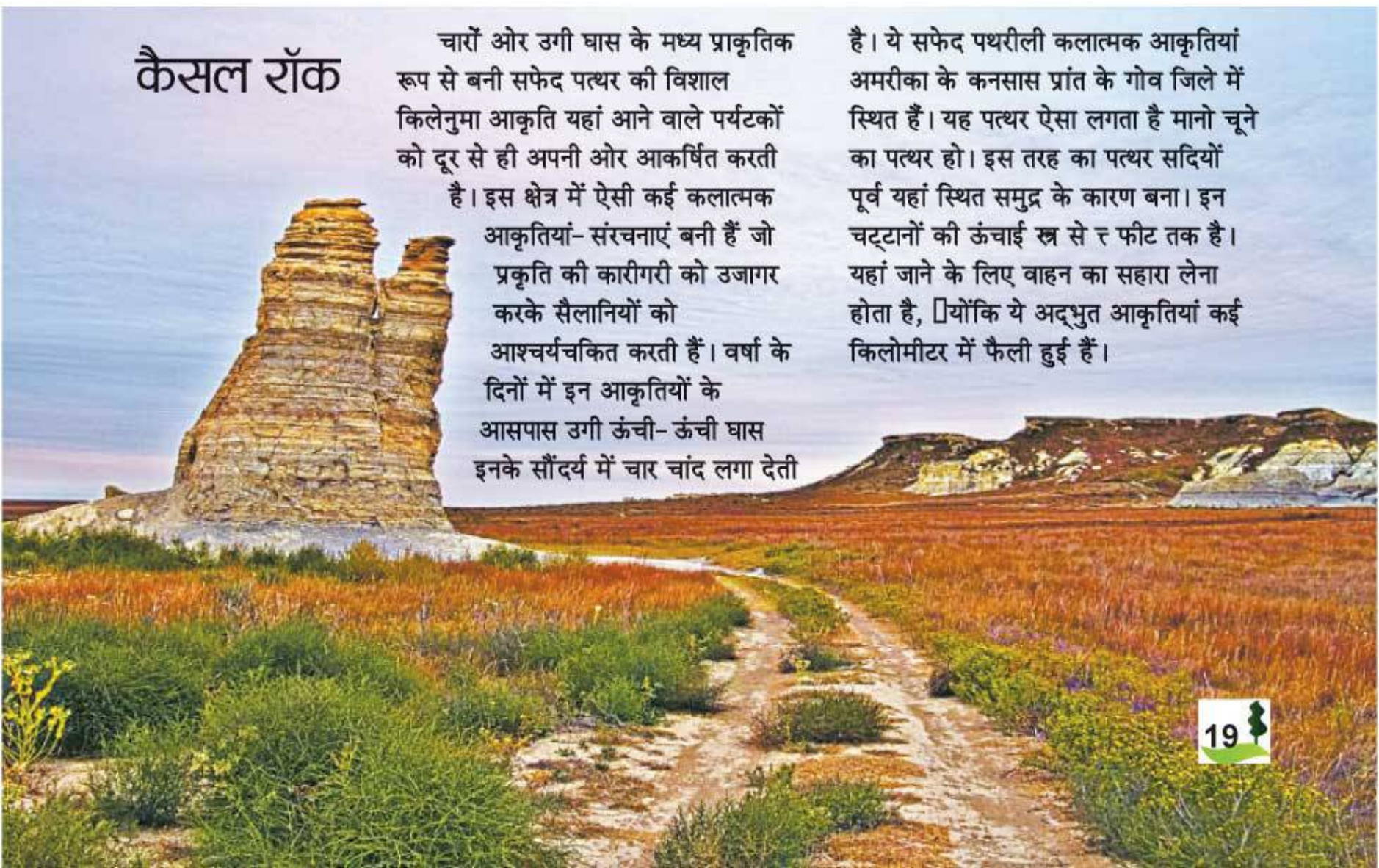

ग्रांड प्रिज्मेटिक स्प्रिंग

यह स्थल दूर से नीली आंख की तरह दिखाई देता है। इसके आसपास का क्षेत्र सतरंगी आभा देता है। यहां की रंग रंगीली धरती का आकर्षण देखते ही बनता है। आने वाले पर्यटक इस दृश्य को देख मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। अमरीका के यलो स्टोन नेशनल पार्क में स्थित ग्रांड प्रिज्मेटिक स्प्रिंग जमीन से निकलने वाला गर्म पानी का स्रोत है। गर्म पानी के स्रोत के रूप में इसका विश्व में तीसरा स्थान है।

यह स्रोत जमीन से स्त्रख्त्र फीट की ऊंचाई पर स्थित है। गहराई लगभग ध् मीटर है। पानी का तापमान करीब स्त्र डिग्री सेंटीग्रेड होता है। यहां की फिजा रंगीन होने के पीछे वैज्ञानिकों का मानना है कि यहां की मिट्टी में विशेष प्रकार के कण और बैटीरिया हैं। पूरे साल में यहां

माउंट हुड नेशनल पार्क

ओरेगन अमरीका स्थित बर्फ से पूरी तरह से आच्छादित यह क्षेत्र सैलानियों के लिए स्वर्ग है। माउंट पर्वत का बर्फीला ऊपरी हिस्सा कई किलोमीटर से ही आकर्षित करता है। इस परिक्षेत्र में स्थित झीलें, झरने, विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पेड़-पौधे कई किलोमीटर में फैले हैं। यहां की हरियाली, जंगली जीव-जन्तु आने वालों को प्रकृति की समीपता प्रदान करते हैं। चारों ओर जहां भी नजर उठती है, वहां बस पानी-हरियाली नजर आते हैं। साफ-स्वच्छ पानी की झीलों में पेड़ों-पहाड़ों का प्रतिबिब बहुत ही लुभाता है। करीब दस लाख एकड़ में फैले हुए इस विशाल क्षेत्र को आधिकारिक रूप से मान्यता वर्ष क-त में दी गई। यहां पूरे साल में करीब पांच मिलियन सैलानी आते हैं। यह संपूर्ण क्षेत्र करीब सौ किलोमीटर में फैला हुआ है और इसे कई भागों में बांटा हुआ है। इस परिसर में सैलानियों के रात्रि में ठहरने की भी उचित व्यवस्था है।

यहां आने वालों की कुल संया के पांच प्रतिशत सैलानी यहां रात्रि में ठहरते हैं। इसी परिसर में आप बोटिंग, फिशिंग, जोगिंग, राटिंग, हॉर्स बैक राइडिंग, माउंटिंग बाइकिंग, स्किइंग सहित एटिविटीज

डेथ वैली के रोमांचक टीले

कैलिफोर्निया में स्थित डेथ वेली नेशनल पार्क में स्थित विशाल टीले देखने में बहुत रोमांचकारी हैं। इन पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरें कलात्मक लगती हैं। इन टीलों की ऊंचाई करीब सौ फीट तक होती है। यह क्षेत्र करीब तीन सौ वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यहां कई प्रकार की जंगली वनस्पतियों के साथ-साथ विशेष प्रजाति के उल्लू, लोमड़ियां, विशाल छिपकलियां, आवाज करने वाले सांप, चूहे, गिलहरियां भी आसानी से दृष्टिगोचर हो जाते हैं। इन विशाल टीलों की शृंखला पर जब सुबह-शाम सूर्य की रोशनी पड़ती है तो ये ऐसे चमकते हैं, जैसे सोना चमक रहा हो। यहां सुबह के समय घूमना ज्यादा सुविधाजनक होता है। इसके बाद यहां का तापमान तेजी से बढ़ने लगता है।

हवाई वोल्केनोज नेशनल पार्क

हवाई स्थित वोल्केनोज नेशनल पार्क आग का दरिया है। यहां पहुंचते ही पर्यटक चारों ओर आग ही आग देखकर रोमांचित हो जाते हैं। जहां तक दृष्टि जाती है, बस लावा में दबी चमकती हुई आग नजर आती है। कई जगह तो चमकता हुआ लावा बहता हुआ नजर आता है। ऐसा लगता है मानो आग का झरना बह रहा हो। यह मंजर देखते ही आंखें चमत्कृत हो उठती हं, और मन में डर भी पैदा होता है। आग का यह हवाई द्वीप करीब प लाख ख्र हजार एकड़ में फैला हुआ है। इसको आधिकारिक पार्क के रूप में वर्ष क-क्र में मान्यता दी गई। यहां वर्षभर में क्र लाख दर्शक आते हैं। यह ज्वालामुखी पूरे द्वीप के रूप में फैला हुआ है। जो पूरे साल रह-रह कर आग उगलता रहता है। इस पार्क में विभिन्न प्रकार के खनिज और

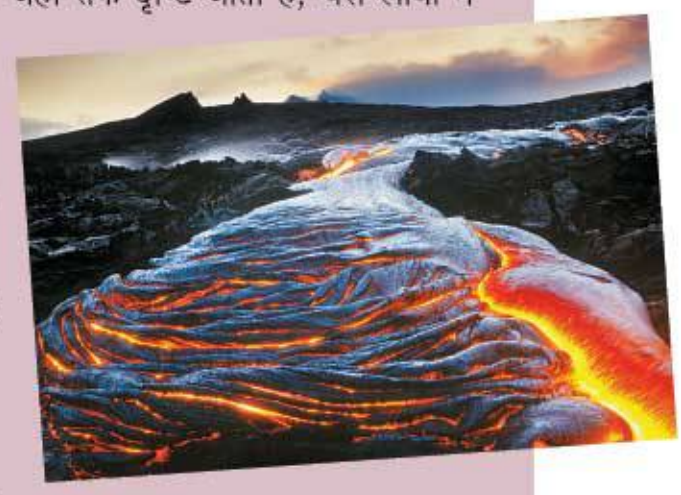

होर्स शू बेंड

अरिजोना अमरीका में स्थित होर्स शू आकार की संरचना दूर से बहुत ही आकर्षक लगती है। इसकी धारीदार लाल चट्टानें और यहां गोलाकार रूप में भरा हुआ स्वच्छ नीला पानी रोमांच पैदा करता है। यहां आकर पर्यटक इसे घंटों तक टकटकी लगाए अपलक निहारते रहते हैं। ऐसा लगता है मानो किसी गोलाकार भूलभुलैया को देख रहे हों। इस तरह का आकार प्राकृतिक उथल-पुथल के कारण सदियों पूर्व निर्मित हुआ। इस क्षेत्र में कई प्रकार के खनिज लवण भी पाये जाते हैं। इस शू आकार घुमाव में कोलोरिडो नदी

पेन्टेड हिल्स

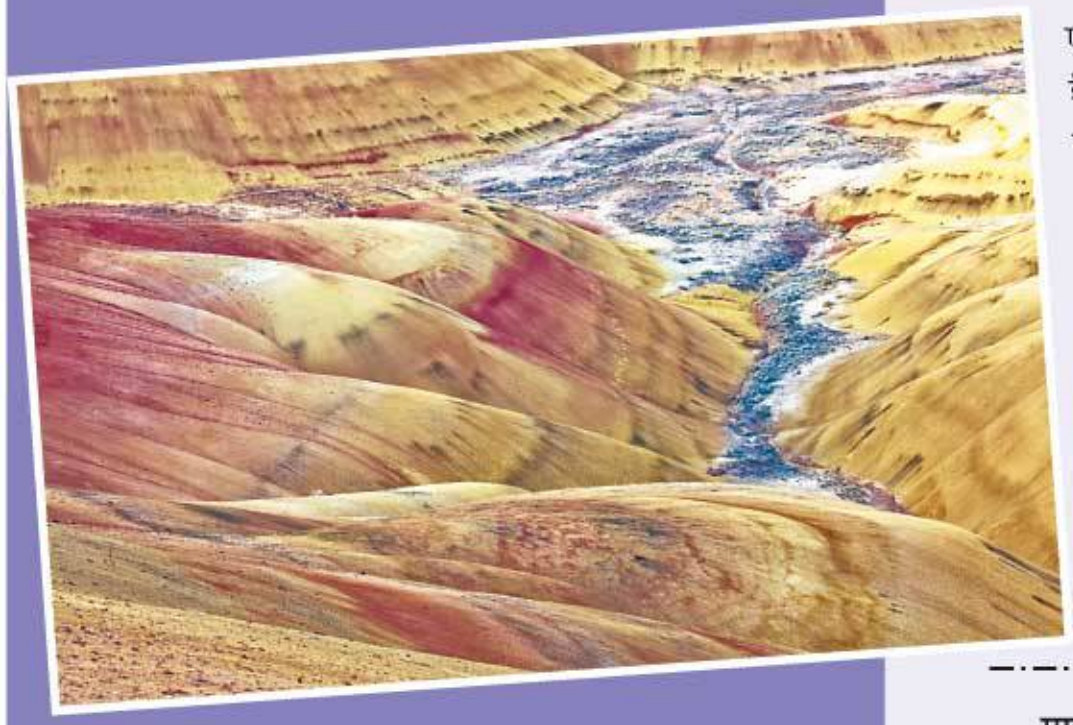

ओरेगन में स्थित कई रंगों में रंगीं पहाड़ियां को राष्ट्रीय मोन्यूमेंट्स घोषित किया हुआ है। करीब साढ़े तीन हजार एकड़ में फैली हुई रंगीन पहाड़ियां दिखने में ऐसे लगती हैं, मानो किसी ने ब्रश से इन पर कई रंगों से पोत दिया हो। प्राकृतिक रूप में निर्मित ये पहाड़ियां सैलानियों के मन-मस्तिष्क में बस जाती हैं। ये रंग रंगीली पहाड़ियां क्ब किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई हैं। इन पहाड़ियों में कई प्रकार की रंगीन परतें जमी हुई हैं। पर्यटक इन्हें नजदीक जाकर निहारते हैं, मानो इन पर शोध कर रहे हों। यहां लिग्नाइट, मड स्टोन, स्लिट स्टोन, शेल स्टोन लेटेराइट मिट्टी पायी जाती है। यहां घोड़े, ऊंट, दरियाई घोड़ा सहित कई जानवरों के जीवाश्म मिल चुके हैं। वैज्ञानिक पूर्व में यहां प्रचुर पानी होने की

पलाउस फाल्स

प्राकृतिक रूप से बने पलाउस झरने को देखकर यहां आने वाले आनंदित हो उठते हैं। कई फीट ऊपर से गिरने वाले इस झरने की आवाज सुनकर पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं। तेजी से गिरते पानी की आवाज तन-मन को हिला कर र□ा देती है। यह इतना रोमांचित करता है कि देखने वाले बस देखते रह जाते हैं।

इसके आस-पास उगी हुई रंग-रंगीली घास-वनस्पतियां वातावरण को खुशनुमा बना देती है। वॉशिंगटन में स्थित इस झरने की कुल ऊंचाई करीब स्त्रख्र फीट है। यह झरना पलाउस नदी पर स्थित है। बहने वाली जलधारा की चौड़ाई साठ मीटर है। नीचे गिरने के बाद यह पानी वॉशिंगटन की सर्पिलाकार नदी में बहता हुआ निकल जाता है। यहां रोजाना पर्यटक इसका लुत्फ लेने के लिए आते हैं।

पोर्टलैंड का लाइट हाउस

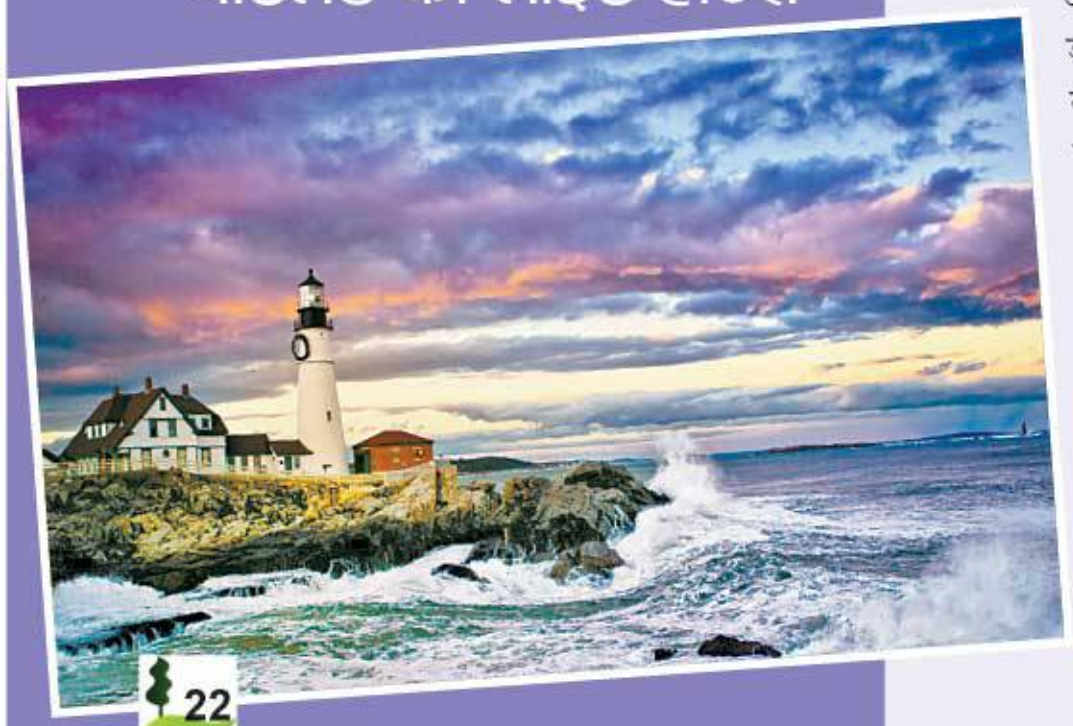

यहां से देखने पर सुबह-शाम का नजारा बहुत ही अलौकिक लगता है। असीम समुद्र, उसमें निकलता-डूबता हुआ सूर्य, आकाश में छाई हुई लालिमा, ऐसा लगता है मानो नीले आकाश को किसी ने गुलाबी रंग से रंग दिया हो। यह नैसर्गिक नजारा मन में रच बस जाता है।

पोर्टलैंड में समुद्र के किनारे स्थित लाइट हाउस वर्षों से यहां अपना अस्तित्व बनाए हुए है। इसका निर्माण वर्ष क्स्त्रत्त- में शुरू किया गया। इसे सबसे पहले वर्ष क्स्त्र-क में प्रकाशित किया गया। यह क्षेत्र दस एकड़ जमीन पर फैला हुआ है। इसे छोटे-छोटे पत्थरों और ईंटों से बनाया गया है। यह लगभग एक सौ एक फीट ऊंचा है। इसमें चार सौ वॉट हेलाइड लै□प जलता है। इसकी रोशनी दो लाख मोमबा□ायों की रोशनी के बराबर होती है। रात्रि में लै□प की रोशनी

साल्टलेक टेम्पल

साल्टलेक सिटी उताह, अमरीका में स्थित इस भव्य और दिव्य मंदिर की छवि देखते ही बनती है। इसको अंदर- बाहर से बहुत ही कलात्मक ढंग से बनाया गया है। दस एकड़ परिसर में फैला यह भवन अकेला ही ल□बवत खड़ा है। इसकी शंकु आकार की गु□बदें बहुत आकर्षक हैं। सबसे ऊंचे गु□बद पर एंजल मोरोनी की साढ़े बारह फीट ऊंची सोने की मूर्ति स्थापित है। इसकी कुल ऊंचाई ख्ख्ख फीट है। मूलतः यह एक चर्च है, जो वर्ष क्त्भ्प में अस्तित्व में आया। इसको देखने आने वाले इसे अंदर- बाहर से अच्छी तरह अवलोकन करते हैं। रात्रि में सफेद बल्बों की रोशनी में यह भवन ऐसे लगता है मानो चांदनी में नहाया हुआ हो। वर्षा के दिनों में बादल इसके गु□बदों को छूते हुए नजर आते हैं। बर्फबारी में तो इसके आस- पास का पूरा परिसर ही सफेद चादर से ढंक जाता है।

सकजित ट्यूलिप फील्ड

माउंट वरमन वाशिंगटन में स्थित सकजित ट्यूलिप वैली वर्ष क-त्त्ब में अस्तित्व में आयी। इस पूरे परिसर में लाल, पीले, गुलाबी, सफेद, बैंगनी सहित कई रंगों के ट्यूलिप और डेफोडिल के फूल अपनी सुंदरता चारों ओर फैलाते हैं। वसंत के मौसम में ये फूल पूरी तरह खिले हुए होते हैं। यहां के फूल ऐसे लगते हैं मानो मैदान में कई रंगों के मखमली कालीन बिछे हों।

यहां हर साल अप्रेल माह में ट्यूलिप फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है। करीब दस लाख लोग इसका लुत्फ उठाते हैं। यह पूरा परिसर करीब एक सौ एकड़ में फैला हुआ है।

व्हाइट सेंड डेजर्ट

न्यू मैक्सिको में स्थित व्हाइट सेंड डेजर्ट करीब एक लाख पचास हजार एकड़ में फैला है। यह वर्ष क-फ में अस्तित्व में आया। इस पूरे क्षेत्र में असीम शांति फैली रहती है। इस क्षेत्र को वर्ष ख्त में वर्ल्ड हैरिटेज में शामिल किया गया। यहां की मिट्टी में जिप्सम होता है। दिन में सूर्य की रोशनी में यह क्षेत्र चमचमाता नजर आता है, वहीं चांदनी रात में दूधिया रोशनी में नहाया हुआ- सा लगता है। यहां अधिकतर मरुस्थलीय क्षेत्र में पाये जाने वाले जीव- जन्तु और वनस्पतियां पायी जाती हैं। यहां स्थित ऊंचे- नीचे लहरदार टीलों पर पर्यटक जब ढप- ढप चलते हैं तो बड़ा ही आनंद आता है। यहां घूमने के लिए सुबह का समय बहुत अच्छा होता है। इसके बाद जैसे- जैसे सूर्य चढ़ता है, वातावरण गर्म होने लगता है।

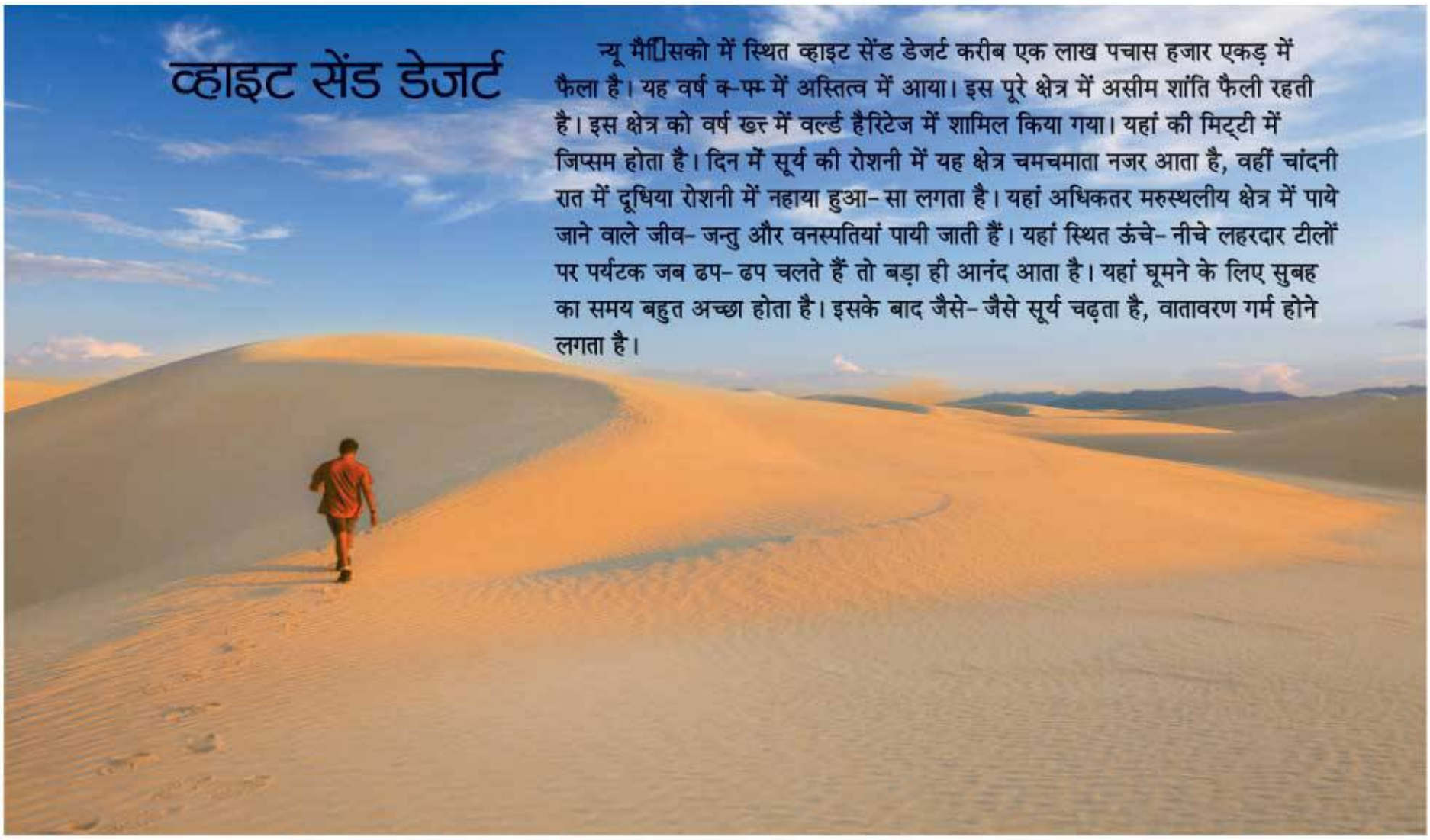

टोजिएक वाइल्ड लाइफ

अलास्का में स्थित टोजिएक नेशनल वाइल्ड लाइफ रेफ्यूज करीब ब्ख लाख एकड़ में फैला हुआ है। इसको आधिकारिक रूप से वर्ष क-त में स्थापित किया गया। नदी, झरने, तालाब यहां आने वाले सैलानियों को खूब लुभाते हैं। इनका नीला दिखाई देने वाला पानी रोमांचित करता है। इस प्रकार की प्राकृतिक संरचना के पीछे पर्यावरणविद और भूवैज्ञानिक भूकंप और ज्वालामुखियों को कारण मानते हैं।

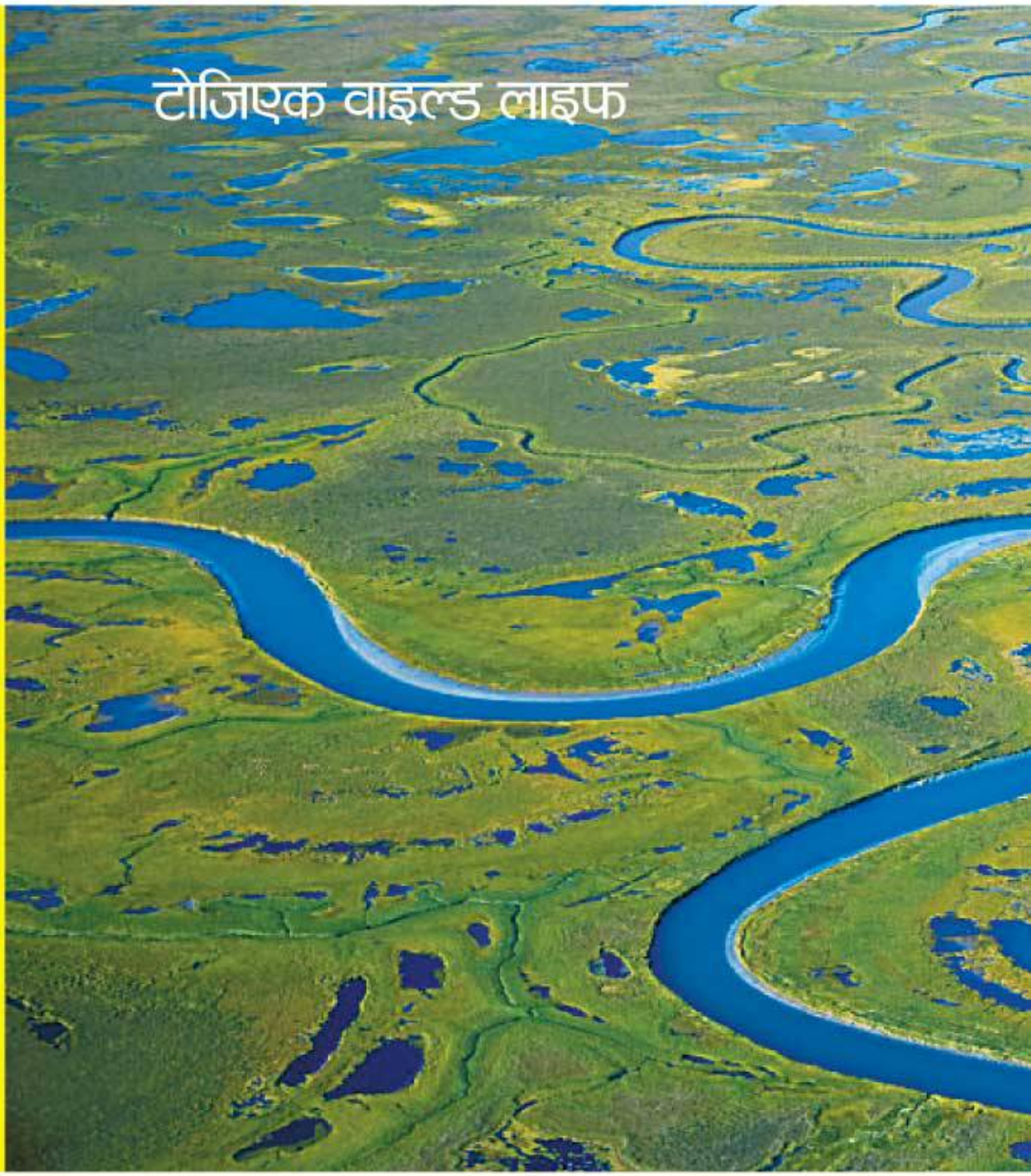

विन्डसर रुइन्स

मिसिसिपी अमरीका में स्थित विन्डसर रुइन्स (अवशेष) लगभग तीन एकड में फैले हुए हैं। यह एक विशाल भवन था। इसका निर्माण वर्ष क्त भ्-म् क के मध्य किया गया। इनके निर्माण में ईंट-पत्थरों लकड़ी, लोहे का प्रयोग किया गया था। इनका निर्माण बहुत ही कलात्क तरीके से किया गया था।

इन खंभों पर बारीक कारीगरी की गई थी। इन पर चार मंजिला विशाल भव्य भवन बना हुआ था। भवन की हर मंजिल पर बाथरूम से लेकर बेडरूप, पुस्तकालय सहित सभी सुविधाएं थीं। इस भवन के कमरें, हॉल और अंदर-बाहर का परिसर बहुत ही आकर्षक थे। कहा जाता है कि इसमें आग लग जाने से यह पूरा भवन जल कर नष्ट हो गया था। इस समय इसके मात्र ख्म खंभे ही अस्तित्व में हैं। ऐसा माना जाता है कि इन विशाल खंभों में से हवा चलने के दौरान हल्की सिटी की आवाज आती है। इस समय इस स्थल के आसपास सघन हरियाली फैली हुई है। वर्ष क-स्त्रक में इसे ऐतिहासिक स्थल के रूप में शामिल किया गया।

यह क्षेत्र झरने, पहाड़ सहित अन्य प्राकृतिक स□पदाओं से भरा हुआ है।

यहां करीब पांच सौ प्रकार की वनस्पतियां और पेड़- पौधे पाये जाते हैं। लगभग दो सौ से अधिक प्रकार के पक्षी इस क्षेत्र में देखे गये हैं। इसके अलावा यहां जंगली जानवर यथा शेर, जरख, लोमड़ियां, भालू सहित अन्य जानवर पाये जाते हैं। जलचर भी यहां बहुतायत में हैं।

कंबोडिया अंकोरथोम में स्थित विभिन्न मुद्राओं वाले चेहरे सैलानियों को आकर्षित करते हैं। कंबोडियन भाषा में प्रसत को महल-मंदिर कहा जाता है। इनका निर्माण जयवर्मन सप्तम् ने बारहवीं शताब्दी में करवाया था। इन बौद्ध मंदिरों के परिसर में गुंबदों के ऊपरी भाग में चेहरे उकेरे हुए हैं। राजा जयवर्मन की मृत्यु के बाद, जिन राजाओं ने यहां शासन किया, उन्होंने धर्म के अनुरूप इस मंदिर परिसर में परिवर्तन करवाये। बेहद आकर्षक, कलात्मक और विशिष्ट शैली से बना यह मंदिर दूर से ऐसा दिखाई देता है जैसे विशाल चट्टानों को काट कर बनाया गया हो। इसके विशाल गुंबद, खंभे सैलानियों में रोमांच उत्पन्न करते हैं। मंदिर परिसर की दीवारों में आदमकद कलात्मक मूर्तियां भी स्थापित हैं, जो तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं, लोकजीवन, कला, साहित्य, संस्कृति, काम-काज को दर्शाती हैं।

प्रसत बयोन स्टोन फेस

स्वेदगन पेगोडा

इसे ग्रेट डेगन पेगोडा भी कहते हैं। यह धार्मिक स्थल यांगोन, म्यानमार में स्थित है। इसे छठी शताब्दी में बनाया गया था। करीब क्क्ख मीटर ऊंचा यह बौध धार्मिक स्थल कंडवागी झील के किनारे स्थित है। इसके पास ही सिगुत्तारा पहाड़ है। आसपास और भी कई छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। गोल्डन पॉलिश वाले इन मंदिरों की शोभा देखते ही बनती है।

शेख जायद मस्जिद

अबूधाबी में स्थित शेख जायद मस्जिद बहुत ही भव्य और दिव्य है। इस मस्जिद में विभिन्न आकार के त्त्ब गु□बद हैं। इनके ऊपरी भाग पर सोने की पॉलिश की गई है। इसकी चार गगनचुंबी मीनारें दूर से ही दिखायी दे जाती हैं। इनकी ऊंचाई करीब क्ब मीटर है। वर्षा के दिनों में बादल ऐसे लगते हैं जैसे मीनारों पर आकर टिक गये हों। इसकी बाहरी संरचना के साथ-साथ आंतरिक संरचना भी बहुत आकर्षक हैं। इसके खंभों और फर्श पर लुभावने बैल-बूटें, फूल-प□ायां बनी हुई हैं। रात को चांदनी में मस्जिद का पूरा परिसर चमक उठता है। यहां स्थित स्वच्छ-साफ झील मस्जिद की शोभा दुगुनी कर देती है। इस मस्जिद में चालीस हजार लोग एक साथ नमाज अदा कर सकते हैं।

यहां स्थित विशाल पीतल का घंटा आने पर्यटकों और श्रद्धालुओं को रोमांचित करता है। मंदिर □यानमार शैली में बना है। मंदिर में प्रवेश के लिए चारों दिशाओं में चार विशाल कलात्मक प्रवेश द्वार बने हैं। मंदिर के मह□वपूर्ण स्थलों पर कीमती रत्न जड़े हुए हैं। ऊपर से देखने पर मंदिर ऐसे लगता है जैसे विशाल घंटा किसी भवन पर रखा हो। मंदिर परिसर में बौद्ध धर्म से संबंधित साहित्य, बुद्ध प्रतिमाएं, धार्मिक झंडे, मोमबा□ायां, अगरबा□ायों सहित विभिन्न प्रकार की सामग्री मिलती है।

ये हैं नेशन के खास नेशनल पार्क

भारत के वन्यजीव अभयारण्य हमेशा से ही आकर्षण का केंद्र रहे हैं। खूंखार भेड़िया हो, दहाड़ता शेर, चालाक लोमड़ी या घास के हरे-भरे मैदान में अठखेलियां करते हिरनों और नीलगायों का झुंड, जानवर किसे पसंद नहीं हैं। आज हमारा भारत अलग-अलग प्रकार के कई सारे जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का घर है। वन्य जीवन तो प्रकृति की एक अमूल्य देन है, जो अपनेआप में बेमिसाल है। लगभग 7517 किलोमीटर समुद्र तट, हिमालय, घाट, थार रेगिस्तान और सुंदरवन तक फैली असमान स्थलाकृति और चार अलग मौसम भारत को दुनिया का एक बेहतरीन टूरिस्ट डेस्टिनेशन देश बनाते हैं। आज भारत पशु-प्रेमियों और प्रकृति से लगाव रखने वालों का बेस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। यहां एक तरफ असम में एक सींग वाला गैंडा मिलेगा, तो वहीं दूसरी तरफ कश्मीर में कस्तूरी मृग के दर्शन कर सकेंगे। तो चलिए भारत के राष्ट्रीय उद्यानों की आपको सैर कराते हैं।

अरिगनार अन्ना जूलॉजिकल पार्क तमिलनाडु राज्य में है, जिसे वंडालूर चिड़ियाघर के नाम से भी जाना जाता है। यह चेन्नई शहर के मु□य बिंदु से फ्क किलोमीटर की दूरी पर है। वर्ष क्त्भ्भ में स्थापित इस जू को भारत का पहला पा□लक जू होने का गौरव प्राप्त है। करीब म्ख हे□टेयर में फैले इस जू में जानवरों की कई प्रजातियां वास करती हैं।

बांधवगढ़ नेशनल पार्क मध्यप्रदेश के विंध्य पर्वत में फैला है। यह पार्क बाघों और अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता है। इस पार्क में लहलहाते हुए जंगल, खड़ी चट्टानें और खुले मैदान हैं। पार्क में कई ऐसे स्थान हैं जो टूरिस्ट स्पॉट का काम करते हैं। बांधवगढ़ नेशनल पार्क में स्तनपायी की ख्ब प्रजाति सहित पक्षियों की ख्भ प्रजातियां पायी जाती हैं। इस अभयारण्य में घूमने पर बाघ, एशियाई सियार, धारीदार लकड़बग्घा, बंगाली लोमड़ी, राटेल, भालू, जंगली बिल्ली, भूरा नेवला और तेंदुआ सहित कई तरह के जानवर देखे जा सकते हैं।

बांदीपुर नेशनल पार्क बांदीपुर के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। आठ सौ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले इस उद्यान में सुंदर और घना जंगल है। वर्ष क-फ्क में मैसूर के महाराजा ने इस उद्यान की स्थापना की थी, जो उस समय - वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में था। यह उद्यान कई जानवरों जैसे बाघ, चार सींगों वाला हिरण, विशाल गिलहरी, हाथी, हार्नबिल, जंगली कु□ा, चीता, निष्क्रिय भालू और गौर को प्राकृतिक आवास प्रदान करता है। जानवरों के साथ-साथ यहां कुछ दुर्लभ प्रजाति के पक्षी भी पाए जाते हैं, जिसके अंतर्गत प्रवासी और निवासी पक्षी आते हैं।

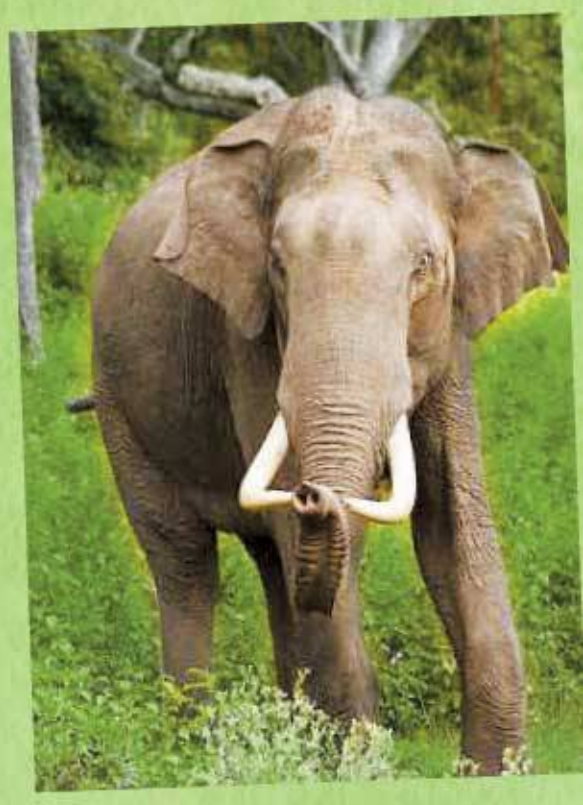

चिन्नार वन्यजीव अभयारण्य पोल्लाची से म्भ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस अभयारण्य में फ्ब प्रकार के स्तनधारी जीव पाये जाते हैं, जिनमें से पैंथर, स्पॉटेड हिरन, गौर, टाइगर, हाथी, बॉनेट मकाऊ, नीलगिरि तहर, हनुमान मंकी और ग्रिल्ड जाइंट सि□वरिल आदि मु□य हैं। थुवनम झरना और पैरोनॉमिक वॉच टॉवर पूरे पार्क की सुंदरता में चार

कॉर्बेट नेशनल पार्क ऐसे वन्य जीव प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है जो प्रकृति की शांत गोद में आराम करना चाहते हैं। पहले यह उद्यान रामगंगा राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता था, परंतु वर्ष क-भ्स्त्र में इसका नाम कॉर्बेट नेशनल पार्क रखा गया। इस पार्क का नाम प्रसिद्ध ब्रिटिश शिकारी, प्रकृतिवादी और फोटोग्राफर जिम कॉर्बेट के नाम पर रखा गया।

दांदेली वन्यजीव अभयारण्य दांदेली शहर का प्रमुख आकर्षण है। एक चयनित वन क्षेत्र को क मई क-भ्म में दांदेली वन्यजीव अभयारण्य माना गया। जिसे सन् ख्म में दांदेली अन्शी टाइगर रिजर्व के रूप में घोषित किया गया। इस अभयारण्य में पहुंचने पर पर्यटकों को खड़ी चढ़ाइयों, गहरी घाटियों और पहाड़ी वन क्षेत्रों को देखने का मौका मिलता है। यह अभयारण्य त्स्फ्ब वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और क से -स्त्र मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। अभयारण्य काले तेन्दुएं जैसे कई अनोखे और दुर्लभ प्रजातियों का घर है।

दुधवा राष्ट्रीय पार्क भारत-नेपाल सीमा के पास उ□ार प्रदेश के तराई बेल्ट में स्थित है। इसे वर्ष क-भ्त में वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था और क-स्त्रस्त्र में यह एक राष्ट्रीय उद्यान बन गया था। आज, यह उद्यान दो भागों में विभाजित है- किशनपुर वन्यजीव अभयारण्य और कतरनियाघाट वन्यजीव अभयारण्य। इस क्षेत्र में अधिकांश जलोढ़ मैदान, झील, पूल और कई नाले हैं। यहां विविध वनस्पति के अलावा विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु और चिड़िया भी पायी जाती हैं। जिनमें लुप्तप्राय: दलदल हिरण तेंदुआ, फिशिंग कैट, रैटल, सिवेट,

गिर राष्ट्रीय उद्यान: एशियाई शेर दुनिया में कहीं और नहीं, सिर्फ गिर राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात में पैदा होते हैं। जंगल के निवास स्थान और वातावरण इस जगह को इन शेरों के लिए सुरक्षित जगह बनाता है। पशु-प्रेमी यहां शेरों की लुप्तप्राय: उपप्रजाति को देखने आते हैं।

शेष पृष्ठ फ-फ्क पर...

पृष्ठ ख से जारी....

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान : मध्य प्रदेश अपने राष्ट्रीय पार्कों और जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। प्राकृतिक सुन्दरता और वास्तुकला के लिए विख्यात कान्हा नेशनल पार्क पर्यटकों के बीच हमेशा ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। कान्हा जीव-जन्तुओं के संरक्षण के लिए विख्यात है। यह अलग-अलग प्रजातियों के पशुओं का घर है। जीव-जन्तुओं का यह पार्क क-ब वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। रूडयार्ड किपलिंग की प्रसिद्ध किताब और धारावाहिक जंगल बुक की

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान असम के गर्व में से एक है। यह लुप्तप्राय: एक सींग वाले गैंडे का घर है। दुनिया में बाघों के सबसे अधिक घनत्व को समयोजित करते हुए वर्ष ख्म में इसे बाघ अभयारण्य के रूप में भी घोषित किया गया। यह यूनेस्को विश्व विरासत स्थल भी है, और लगभग ब्म वर्ग किलोमीटर में फैला है। यह असम के दो जिलों गोलाघाट और नोआगांव के

मानस नेशनल पार्क असम का एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है। इसे यूनेस्को नेचुरल वर्ल्ड हेरिटेज साइट के साथ-साथ प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व, बायोस्फियर रिजर्व और एलिफेंट रिजर्व घोषित किया गया है। यह हिमालय के फुट्हिल पर स्थित है, और भूटान तक फैला हुआ है, जहां इसे रॉयल

मानस नेशनल पार्क के नाम से जाना जाता है। यह पार्क बालों वाले खरगोश, असम के छतरी वाले कछुए, नाटे कद वाले सुअर और सुनहरे लंगूर सहित कई लुप्तप्राय: जानवरों का घर है। यहां जंगली भैंस भी बड़ी संख्या में पायी जाती है। इस पार्क में स्तनपायी की ध्ध्, पक्षी की फ्त्, सरीसृप की ध् और उभयचर की प से ज्यादा प्रजातियां पायी जाती हैं।

नागरहोल नेशनल पार्क नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व का एक हिस्सा है। यह राष्ट्रीय पार्क, राजीव गांधी नेशनल पार्क के रूप में जाना जाता है। वर्ष क-ध्ध् में स्थापित यह उद्यान शानदार झरने, सुंदर घाटियों और पतली धाराओं के आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले का हिस्सा है। यह पार्क राज्य का पांचवां और देश का बाइसवां टाइगर रिजर्व पार्क है। इस पार्क को पर्यटन मंत्रालय के द्वारा देश का सबसे अच्छा और कायदे से रखा गया पार्क घोषित किया गया और स□मान से नवाजा गया। बाघों के अलावा यह उद्यान अन्य जानवरों व सरीसृपों का भी घर है।

पेंच नेशनल पार्क सतपुड़ा की पहाड़ियों के दक्षिणी भाग में स्थित है। इस स्थान का नामकरण पेंच नदी के कारण हुआ है जो कि पेंच नेशनल पार्क के साथ-साथ उ□ार से दक्षिण की ओर बहती है। यह पार्क मध्य प्रदेश की दक्षिणी सीमा में महाराष्ट्र के पास स्थित है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा इसे वर्ष क-त्प में नेशनल पार्क घोषित किया गया और क--ख में इसे अधिकारिक रूप से भारत का उन्नीसवां टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान उ□ार भारत के सबसे बड़े वन्यजीव भंडारों में से एक है। वर्ष क-भ्भ में यह एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था। बाद में, क-स्त्रप में प्रोजे□ट टाइगर के पहले चरण में इसको शामिल किया गया। रणथंभौर वन्यजीव अभयारण्य को क-त्त में नेशनल पार्क का दर्जा प्रदान किया गया था। बाघों के अलावा इस राष्ट्रीय उद्यान में विभिन्न जंगली जानवर, सियार, चीते, हाइना, दलदल मगरमच्छ, जंगली सुअर और हिरण निवास करते हैं। जलीय वनस्पति, लिली, डकवीड और कमल भी बहुतायत में हैं।

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क जवाहर लाल नेहरू ग्रेट हिमालयन पार्क के रूप में भी जाना जाता है। यह कुल्लू के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक है। पचास वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस पार्क में प से अधिक स्तनधारियों और पक्षियों की प से अधिक प्रजातियां निवास करती हैं। यह विशेष रूप से पश्चिमी ट्रैगोपैन, पक्षियों की अत्यधिक लुप्तप्राय: प्रजातियों के लिए जाना जाता है।

सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान, जो सरिस्का टाइगर रिजर्व भी है, राजस्थान के अलवर जिले में स्थित है। यह स्थान जो कभी अलवर राज्य में एक शिकारगाह थी, वर्ष क-भ्भ में वन्यजीव अभयारण्य घोषित हुआ तथा क-स्त्र- में इसे एक राष्ट्रीय पार्क का दर्जा मिला। यह उद्यान अरावली की सुंदर पहाड़ियों में स्थित है तथा त्त वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां घास, शुष्क पर्णपाती वन, चट्टानी परिदृश्य दिखाई पड़ते हैं। इस क्षेत्र के बड़े हिस्से में धाक के वृक्ष पाये जाते है और यहां विभिन्न वन्यजीव प्रजातियां रहती हैं।

माथापच्ची

नंबर wheel

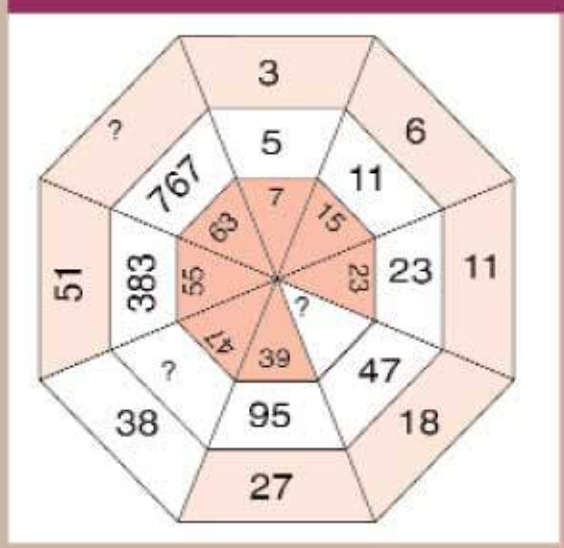

कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या श्रृंखला दी गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस श्रृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

नंबर pyramid

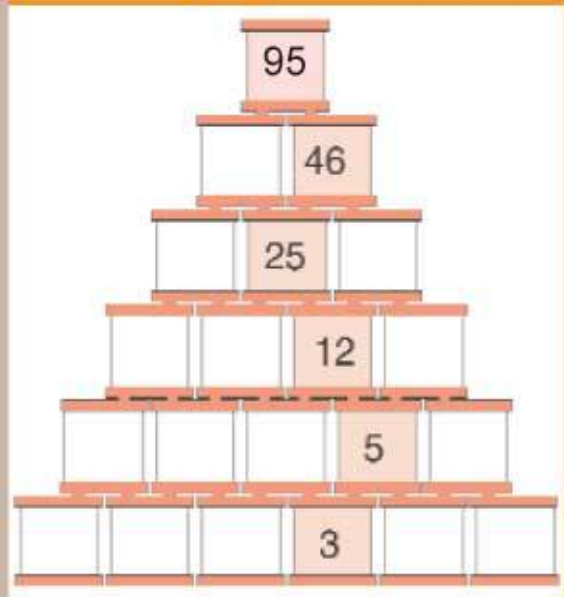

कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

180-degree

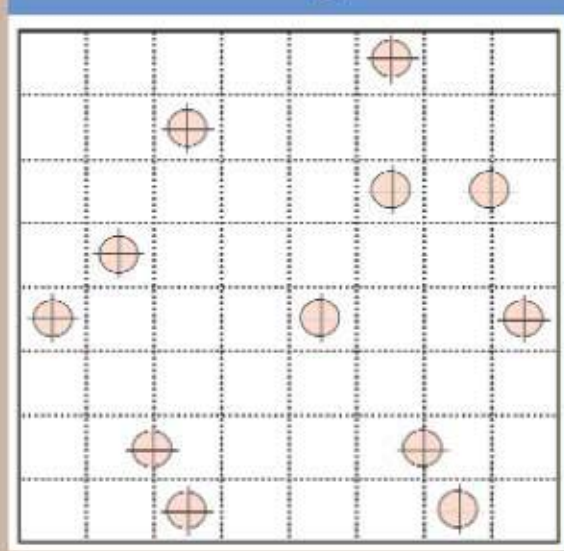

कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोलों के केंद्र बिंदु ऊपर से नीचे व दाएं से बाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में भर जाएं।

उत्तर

नंबर wheel

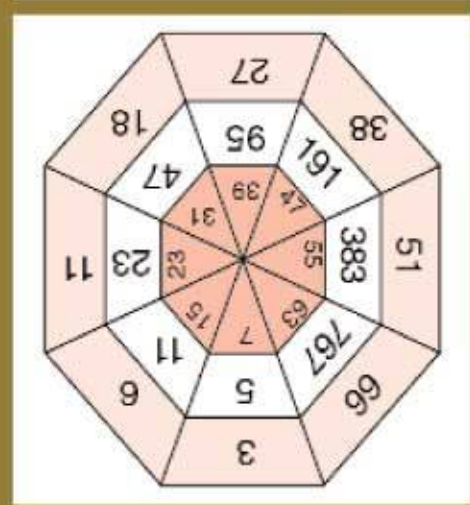

नंबर pyramid

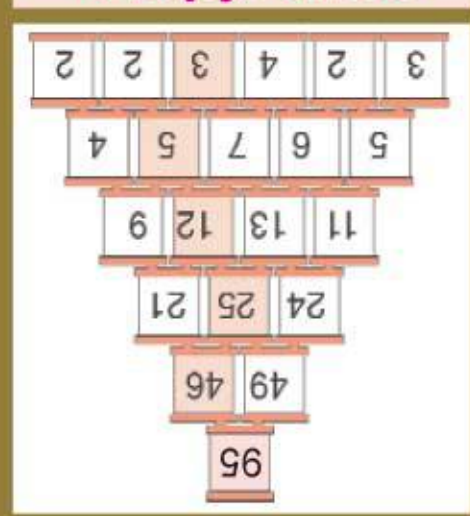

180-degree

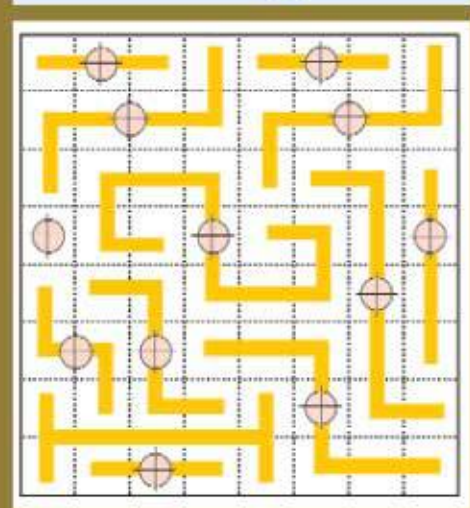

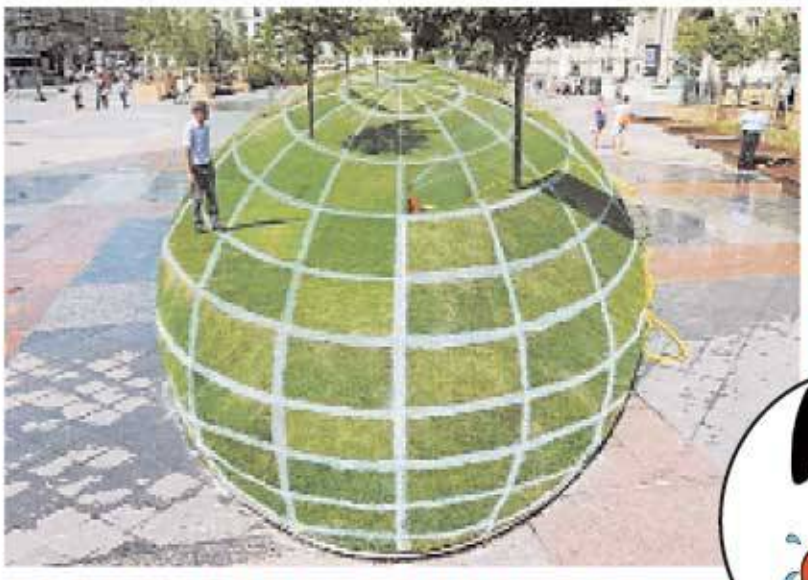

फ्रैंजी किया ने

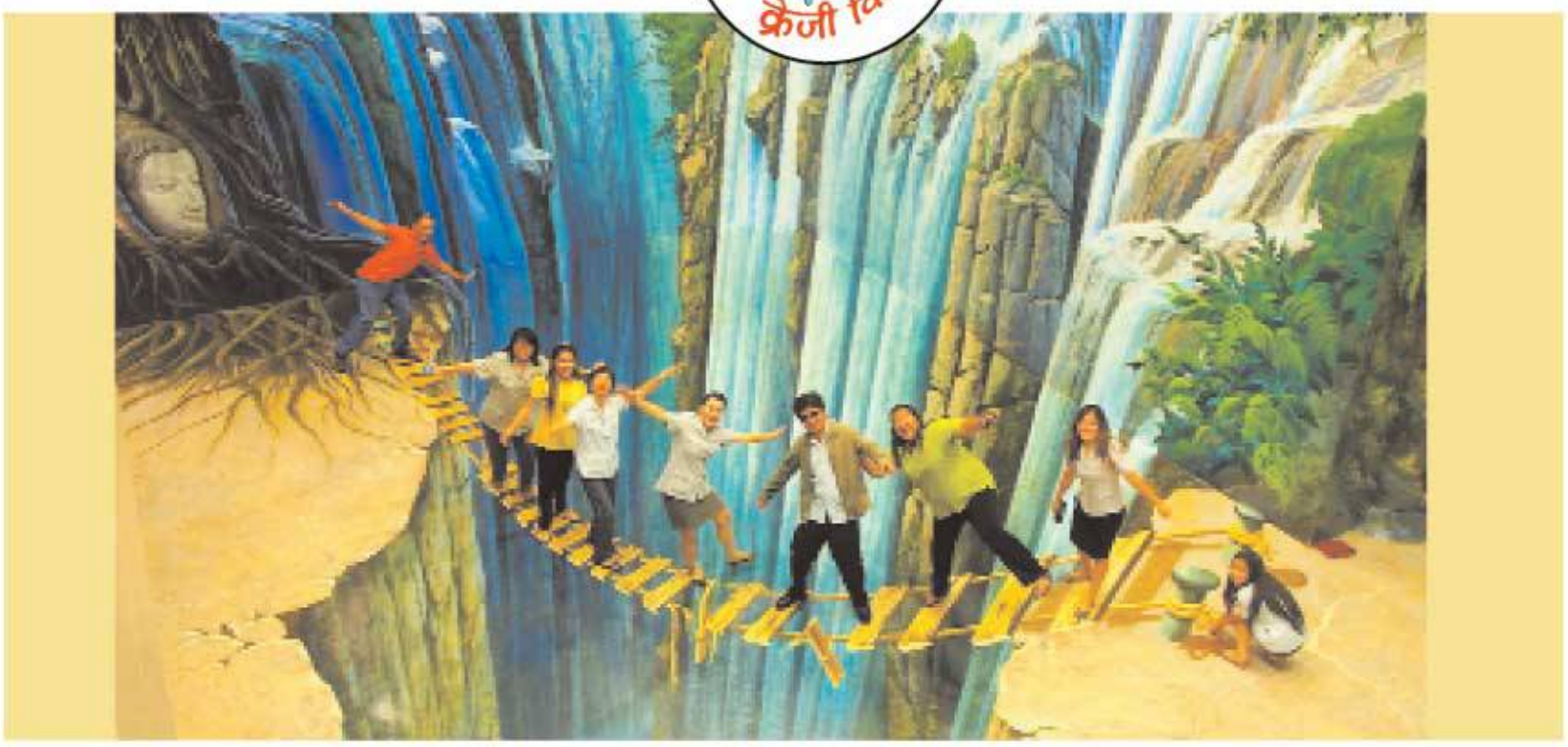

धरती के स्वर्ग की सैर

जंगफ्रोज समुद्र तल से 4158 मीटर ऊंचाई पर बनी यूरोप की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला है। यहां यूरोप का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन भी है। इंटरलेकन स्टेशन से यहां के लिए ट्रेन मिलती है। इस ट्रेन से अपना सफर शुरू कर खूबसूरत स्विट्जरलैंड को अपनी आंखों में कैद करते हुए आप जंगफ्रोज पहुंच जाएंगे। बर्फ के पहाड़ों को काटती हुई ऊपर जाती इस ट्रेन से आप नयनाभिराम दृश्य देख सकते हैं। गर्मी के मौसम में यहां आइसस्कीइंग का लुफ्त उठाया जा सकता है। बर्फ पर पड़ती सूरज की तिरछी किरणों की आभा देखने का आनंद ही कुछ और है।

जंगफ्रोज में बॉलीवुड की इतनी फिल्में फिल्मायी गई हैं कि यहां बॉलीवुड रेस्त्रां ही बना दिया गया है। यह रेस्त्रां 15 अप्रेल से 15 सितम्बर के मध्य खुलता है।

शिल्थॉर्न ग्लेशियर : शिल्थॉर्न ग्लेशियर का रास्ता भी इंटरलेकन ओस्ट से होकर जाता है। इसे विश्व के सबसे खूबसूरत बर्फ के पहाड़ों में शुमार किया जाता है। यहां पाइन ग्लोरिया नामक राइड से आप पूरे ग्लेशियर का पैरोनामिक व्यू ले सकते हैं।

टिटलिस पर्वत श्रृंखला : वादियों के इस देश का अगला पड़ाव है टिटलिस पर्वत श्रृंखला। केबल कार के जरिये पूरे टिटलिस ग्लेशियर की खूबसूरती को निहारा जा सकता है। केबल कार के सफर में आप स्विट्जरलैंड से ही जर्मनी के ब्लैक फारेस्ट के नजारे भी देख सकते हैं। यहां के ग्लेशियर पार्क में घूमना मत भूलिएगा। इस पार्क में आइस से जुड़ी कई फन पैक्ड राइड्स हैं। यह पार्क मई से अक्टूबर के मध्य खुला होता है।

ग्लेशियर ग्रोटो : यहां बर्फ में बनी सुंदर गुफाएं हैं। इन गुफाओं की बर्फ की दीवारों पर 8,450 लेम्प्स जगमगाते हैं। यहां 'हॉल ऑफ फेम' भी है, जिसमें स्विट्जरलैंड आए प्रमुख हस्तियों के फोटो लगे हैं।

ग्रोरनरग्रेट : इसे अल्पाइन का स्वर्ग कहते हैं। सर्दियों में बर्फ से ढके रहने वाला यह ग्लेशियर गर्मियों में फूलों की घाटी में बदल जाता है।

यूं तो स्विट्जरलैंड बेहद खूबसूरत देश है। कुदरत हर मौसम में यहां अलग रंग दिखाती है। लेकिन सर्दियों में जाने से बचें। स्विट्जरलैंड की सैर करते हुए आप जितने प्रयोग करें, उतना अच्छा होगा। कहीं आप केबल कार से जाइए। कहीं बोट, कहीं ट्रेन, तो कहीं कार से। हर जगह अलग-अलग साधन अपनाने से आप धरती के इस स्वर्ग को बेहद करीब से निहार पाएंगे।

स्विट्जरलैंड के बारे में सबसे खास बात यह है कि जितनी खूबसूरती इसे प्रकृति ने बख्शी है, उतना ही ध्यान यहां की सरकार भी रखती है। यहां के ऊंचे-ऊंचे ग्लेशियरों पर टूरिस्टों से जुड़ी हर सुख-सुविधा है।

पर्यटन की बात हो और धरती के स्वर्ग स्विटजरलैंड की चर्चा न हो तो पर्यटन अधूरा-सा है। यह ऐल्प्स पहाड़ों से ढंका मध्य यूरोप का देश है। इसके मुख्य शहर और पर्यटक स्थल हैं - ज्यूरिख, जेनेवा, बर्न (राजधानी), बासल, इंटरलाकेन, लोजान, लूत्सर्न इत्यादि।

यहां एक तरफ बर्फ के सुंदर ग्लेशियर हैं जो साल में आठ महीने बर्फ की सुंदर चादर से ढंके रहते हैं। तो वहीं दूसरी ओर सुंदर वादियां हैं जो सुंदर फूलों और रंगीन पत्तियों वाले पेड़ों से ढंकी रहती हैं।

यहां कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग होती है। इंटरलेकन ओस्ट को बॉलीवुड की पसंदीदा जगह कहा जाता है। प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर इस शहर में आप स्विट्जरलैंड के इतिहास और वर्तमान दोनों से मुलाकात कर सकते हैं। सूर्योदय के समय यहां की पहाड़ियों पर चहलकदमी करना बेहद सुखद लगता है।

दर्रों की दीवार

चीन की लम्बी दीवार के बारे में दिलचस्प कहानी चीन में प्रचलित है। लम्बी दीवार अपनी बेजोड़ लम्बाई के कारण तो विश्वविख्यात है ही, साथ ही बड़ी संख्या में निर्मित उस के दुर्गम दर्रे भी बेमिसाल हैं।

दीवार का निर्माण चीन के प्रथम सामंत सम्राट छिन शहुंग के शासनकाल में किया गया था, और मिंग राजवंश के काल में इसका पुनर्निर्माण किया गया। इस दीवार पर बड़ी संख्या में दर्रे बनाये गए, जिनमें से कुछ दर्रे विशेष महत्त्व रखते थे। प्रथम दर्रा शानहाईक्वान दर्रा कहलाता है, जो दुनिया के प्रथम दर्रे के नाम से मशहूर है। शानहाईक्वान दर्रा उत्तर चीन के हपै प्रांत व ल्याओ निन प्रांत की सीमा पर खड़ा है, यह दीवार का आरंभ स्थल है। शानहाईक्वान दर्रा उत्तर में य्येन शान पर्वत से सटा हुआ है और दक्षिण में पो हाई समुद्र के तट तक पहुंचता है। दर्रे के क्षेत्र में प्राकृतिक सौंदर्य बहुत आकर्षक है, पर्वत पर हरियाली छायी है और समुद्र की जल राशि स्वच्छ और लहरदार है। दर्रे का मुख्य दरवाजा पर्वत और समुद्र के बीच ऊंचा खड़ा नजर आता है। दर्रे पर दूर तक दृष्टि दौड़ाएं तो आलीशान और भव्य सुन्दर पहाड़ी समुद्री नजारा दिखता है, इसी कारण इस दर्रे का नाम शान हाई क्वान अर्थात गिर सागर का दर्रा रखा गया।

शानहाईक्वान दर्रे का निर्माण मिंग राज्य काल में राजवंश के मशहूर सेनापति श्यु ता द्वारा किया गया था। श्यु ता सैन्य मामले में बड़े दूरदर्शी और विवेकशील थे। देश के सामरिक स्थानों पर कड़ा नियंत्रण रखने की दृष्टि से उस ने यहां शान हाई क्वान दर्रा बनवाया। दर्रे के चार दरवाजे हैं। पूर्वी दरवाजे की दीवार के ऊपरी भाग में एक विशाल तख्ता लगाया गया है, जिस पर बड़े अक्षरों में दुनिया का प्रथम दर्रा आलेख अंकित है।

दीवार का पश्चिमी छोर चायुक्वान दर्रा है, जो उत्तर-पश्चिम चीन के कांसू प्रांत के चायु शहर में स्थित है। यह दर्रा मिंग राजवंश के हुडवु काल (ई.1372) में बनाया गया था। दर्रा चायु पहाड़ पर खड़ा होने के कारण उस का नाम चायुक्वान पड़ा। इस दर्रे के निर्माण के बाद यहां फिर कभी युद्ध नहीं हुआ था, इसलिए दर्रे का नाम शांति दर्रा भी आया।

उत्तर चीन के शानसी प्रांत के फिंग तिंग जिले में लम्बी दीवार पर न्यांग जी क्वान दर्रा भी काफी मशहूर है। न्यांग जी क्वान दर्रा खतरनाक और दुर्गम पहाड़ी चोटी पर बनाया गया है।

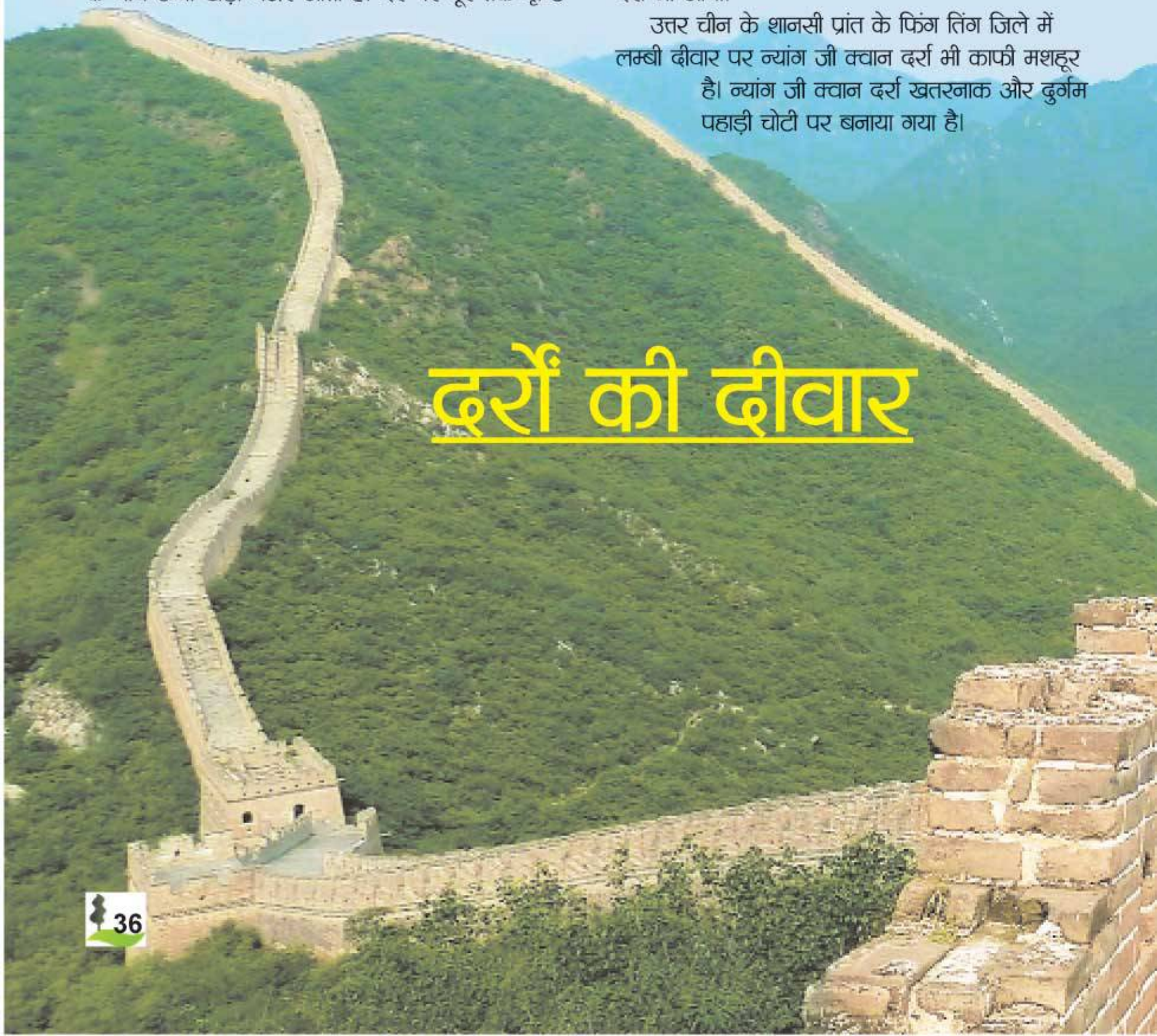

चारों ओर नीची-ऊंची पहाड़ी चट्टानें खड़ी हैं, जिस पर सैन्य चढ़ाई करना अत्यन्त कठिन था और प्रतिरक्षा करना आसान था। इसलिए यह दर्रा शानसी प्रांत का अभेद्य दुर्ग भी कहलाता था। इस दर्रे का नाम पहले वीचेक्वान था। चीन के थांग राजवंश के काल में प्रथम सम्राट ली य्वन की तीसरी बेटी राजकुमारी फिंगयांग हजारों सैनिकों का नेतृत्व करते हुए इस जगह तैनात थी। राजकुमारी फिंग यांग युद्धकला में कुशल और बड़ी तेजस्वी थी। उसकी सेना न्यांगजी सेना अर्थात कुमारी की फौज कहलाती थी। इस के आधार पर दर्रे का नाम भी बदल कर न्यांगजी क्वान (क्वान यानी दर्रा) पड़ा । आज भी इस दर्रे के पूर्वी दुर्ग की दीवार पर शाही कुमारी दर्रा शब्द अंकित हुआ देखने को मिलता है ।उत्तर-पश्चिमी चीन के कांसू प्रांत के तुनहुंग जिले के उत्तर-पश्चिम में स्थित शोफांगफान नगर में दीवार का युमनक्वान दर्रे का खंडहर मौजूद है। यह दर्रा प्राचीन काल में सिन्चांग के हथ्येन जिले से जेड सामग्री को भीतरी इलाके में पहुंचाया जाने का एक मुख्य मार्ग था, इसलिए दर्रे का नाम युमन क्वान अर्थात जेड दरवाजा दर्रा पड़ा।

उत्तर चीन में पेइचिंग के अधीन छांगफिंग इलाके में फैली लम्बी दीवार पर च्युयङक्वान खड़ा है। तत्कालीन समय में दीवार के निर्माण के दौरान सरकारी दफ्तर इस जगह स्थानांतरित हो कर निर्माण कार्य की देखरेख कर रहे थे। इस दर्रे का पास खड़े च्यन्तु पहाड़ पर कंट्रोल था, इसलिए दर्रे का नाम च्युयङक्वान यानी नियंत्रण दर्रा रखा गया। शानसी प्रांत के फ्यानक्वान जिले में स्थित फ्यानथोक्वान दर्रा चीनी भाषा में एक विचित्र नाम है। असल में यह दर्रा एक असमतल स्थान पर खड़ा है। भू-स्थिति पूर्व में ऊंची तथा पश्चिम में नीची है और बड़ा ढालवां होती है, इसलिए इस दर्रे का नाम फ्यानथोक्वान अर्थात ढालवां दर्रा रखा गया।

शानसी प्रांत के तै श्यान जिले में फैली एक संकरी पहाड़ी वादी में यांमनक्वान शान से खड़ा है। दर्रे के दोनों ओर सीधी खड़ी पहाड़ी चट्टानें हैं। चट्टान इतनी सीधी और ऊंची है कि राजहंस भी उसे पार नहीं कर सकता और उसे वादी में उतर कर नीचे के दर्रे से गुजरना पड़ता है। इसी दृश्य को देखते हुए इस दर्रे का नाम यांमनक्वान अर्थात राजहंस द्वार रखा गया।

इस फिल्म सिटी

आप फिल्मों में अक्सर जिन नयनाभिराम दृश्यों और सैट्स पर वाह-वाह कर उठते हैं, उनमें से कईयों का सीधा सम्बन्ध हैदराबाद स्थित रामोजी फिल्म सिटी से है। दक्षिण भारतीय फिल्मों के अलावा कई बॉलीवुड फिल्मों का भी यहां निर्माण होता है।

यह फिल्म सिटी हैदराबाद के बाहरी क्षेत्र में स्थित है। यहां सिर्फ फिल्म और सीरियल्स की शूटिंग ही नहीं होती है, बल्कि यह पिकनिक मनाने, थीम आधारित पार्टी, कार्पोरेट इवेंट, भव्य विवाह, ऐडवेंचर कैंप, कांफ्रेंस आदि के लिए भी आदर्श स्थान है।

में सब कुछ है

रामोजी फिल्म सिटी में विश्व का सबसे बड़ा स्टूडियो है और यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स् में भी दर्ज है। ऐसा कहा जाता है कि फिल्म मेकर यहां सिर्फ स्क्रिप्ट लेकर आते हैं और बनी हुई फिल्म लेकर वापस जाते हैं। फिल्म मेकिंग के अलावा यह जगह पर्यटकों को मनोरंजन के कई साधन उपलब्ध कराता है। यहां जॉय राइड, फन इवेंट, म्यूजिक आधारित प्रोग्राम, गेम शो और डांस का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। फिल्म सेंटर में आप खाने और शॉपिंग का भी आनंद उठा सकते हैं।

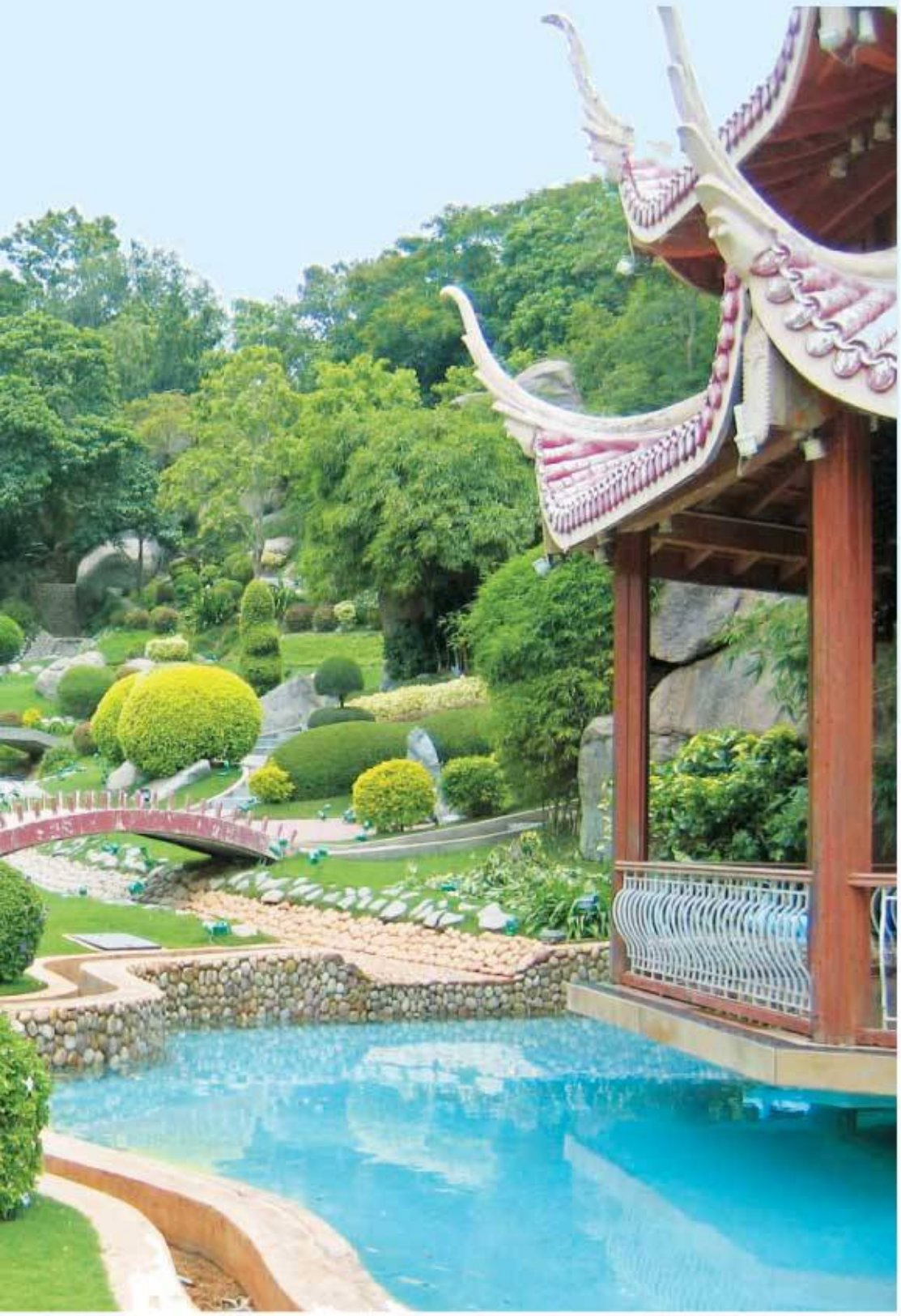

जानिये इन देशों

अलजीरिया- काउसकाउस
अंगोला- मौम्बा डा गलिन्हा
अर्जेंटीना- असाडो
आर्मेनिया- हरिस्सा
ऑस्ट्रेलिया- मीट पाई
आस्ट्रिया- टाफेल्सपीट्स
अजरबेजान- डोलमा
बाहमास- क्रेक काउच
बहरीन- मचबूज
बारबडोस- काउ-काउ एंड फ्लाइंग फिश
बेलारूस- ड्रननिकि
बेल्जियम- मौलिज-फ्रीटिज
बरमुडा- बरमुडा फिश चाउडर
भूटान- एमा दातशि
बोश्निया हर्जोगोविना- बोश्निय पोट
ब्राजील- फैजोआडा
बुलगारिया-बानितासा
बर्मा- मोहिंगा
कम्बोडिया-अमोक ट्रे
चीन- पेकिंग डक
हांगकांग- चार सियु
मकाऊ- मिन्ची
डेनमार्क- फ्रिकाडेलर
ग्रीनलैंड- किवियक
मिस्र- फुलमेडामेस
एलसाल्वाडोर- पुपुसा
गुयाना- पेपरपोट
हंगरी- गुलीयास
आइसलैंड- हकार्ल
इराक- समक मसगफ
आयरलैंड- कोलकानन
इजरायल- फालाफेल
जापान- शुशि
जोर्डन- मनसफ
जैमेका- एकी-साल्टफिश
भारत- हर राज्य में अलग-अलग हैं

पाकिस्तान- बिरयानी-निहारी

वियेतनाम- फ्रो

श्रीलंका- राइस एंड करी

अफगानिस्तान- काबुली पुलाव

बांग्लादेश- राइस एंड फिश

केमरून-नूडल

की नेशनल डिश

जब भी आप किसी देश की सैर पर जाते हैं तो पर्यटन स्थलों के साथ वहां के खानपान को भी जानने और खाने की उत्सुकता रहती है। सही भी है, बगैर स्वाद के पर्यटन कैसा! आइये हम आपको कुछ देशों की नेशनल डिश से परिचित कराते हैं।

कजाखस्तान- बेशबरमक
कुवैत- मचबूज
लेबनान- किब्बेह
लग्जमबर्ग- जुडमट
मेसिडोनिया- टावक
मेडागास्कर- रोमानजवा
मलेशिया- नसी लेमक
मंगोलिया- बूज
मोंटेनिग्रो- कैक
नीदरलैंड- स्टेम्प्पोट
न्यूजीलैंड- बैकन-एगपाई
नार्थकोरिया- किमची
नोर्वे- फारिकाल
पैरागुआ- सोपा पारागुआ
पैरु- सीविची
रोमानिया- मामालिगा
सऊदी अरेबिया- कबसा
सिंगापुर- चिली क्रेब-चिकन राइस
साउथ अफ्रीका- बोबोटी
साउथ कोरिया- बुलगोगी-किमची
सीरिया- किब्बेन
स्विट्जरलैंड- सरवेलेट
तजाकिस्तान- पिलाफ
ताइवान- बीफ नूडल सूप
तजानिया- उगली
थाईलैंड- पडथाई, समटेम
टर्की- कबाब, कुरूफासुलीपिलाव
युगांडा- मटोक
ब्रिटेन- चिकन टिक्का मसाला, फिश चिप्स
इंग्लैंड- रोस्टेड बीफ
स्कॉटलैंड- हग्गिस
ऊरूग्वे- असाडो, चिविटो
वेनेजुएला- पाबेल्लोन क्रियेल्लो
यमन-सल्ताह

अमरीका- हेम्बर्गर, फ्राइड चिकन, एपलपाई

रूस- बोर्सचट

जापान- शुशि

इटली- पास्ता-पिज्जा

नेपाल- दाल-भात

ईरान-चेलो कबाब

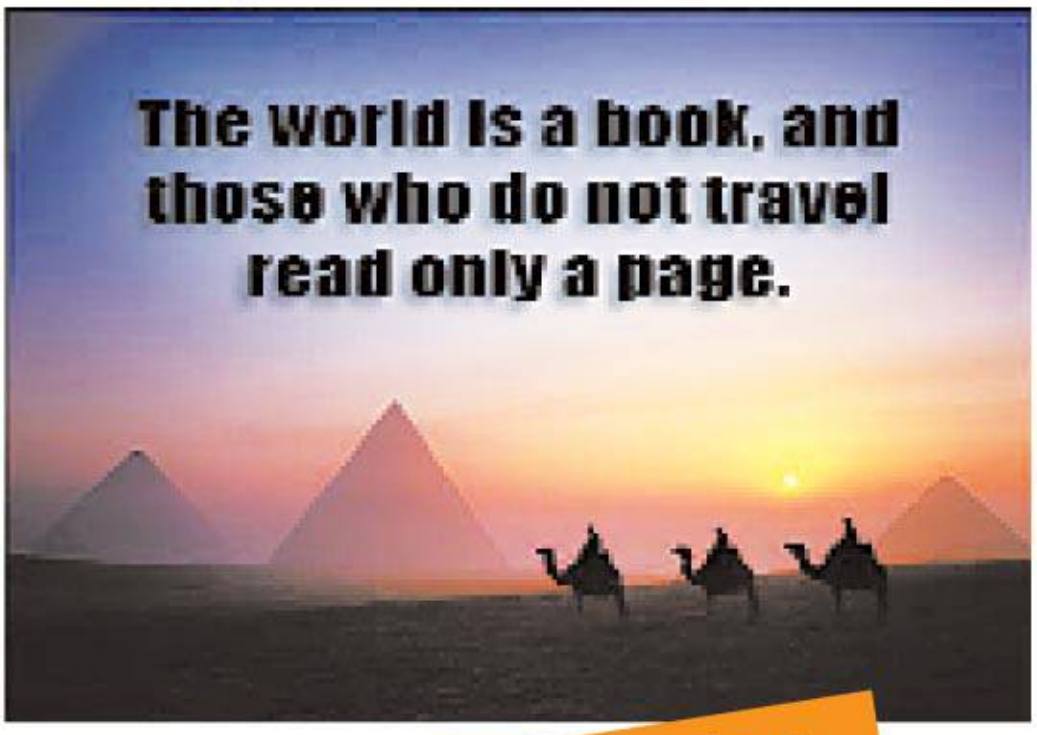

Travel & Tourism Quotes

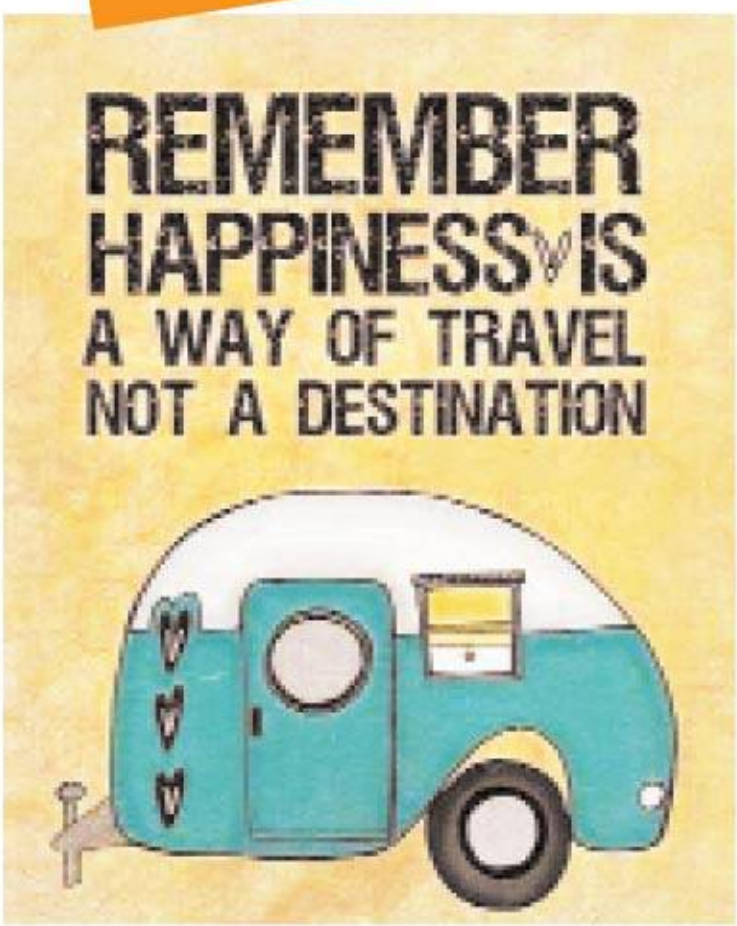

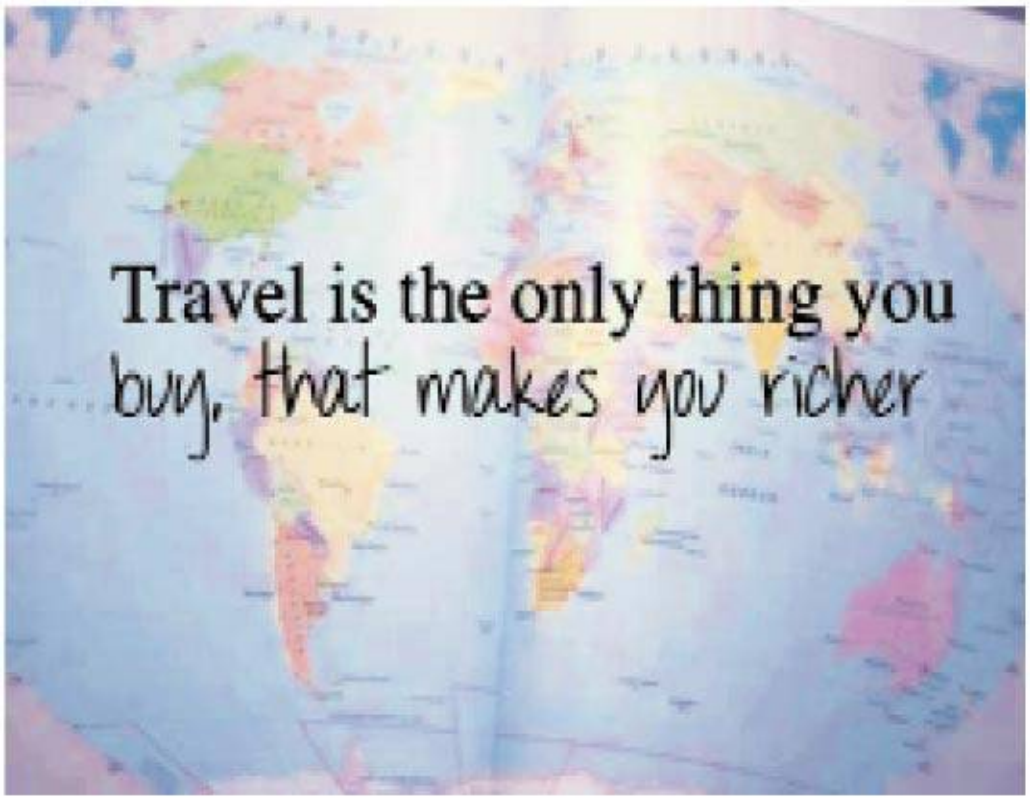

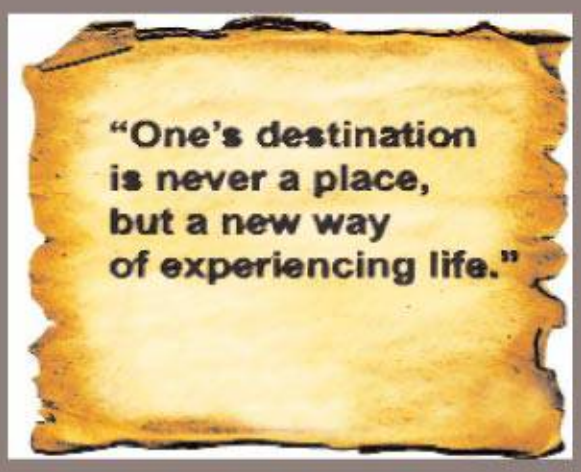

बच्चो, तु□हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तु□हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तु□हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वा□य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और

क. टिकिट के यंत्र कहां हैं?
Where are the ticket machines?
व्हेअर आर द टिकट मशीन्स?

ख. दिल्ली के लिए अगली बस कितने बजे है?
What time's the next bus to Delhi?
व्हाट टाइ□स द ने□स्ट बस टु देहली?

फ. □या मैं बस में टिकट खरीद सकता हूं?
Can I buy a ticket on the bus?
केन आइ बाय अ टिकट आन द बस?

ब. मु□य समय पर यात्रा ना करने पर कोई कटौती है?
Are there any reductions for off-peak travel?
आर देअर एनी रिड□शन्स फॉर ऑफ-पीक ट्रेवल?

भ. आप कब यात्रा करना चाहेंगे?
When would you like to travel?
व्हेन वुड यू लाइक टु ट्रेवल?

म. आप वापस कब आने वाले हैं?
When will you be coming back?
व्हेन विल यू बि कमिंग बेक?

ख. मुझे कौनसे प्लॅटफॉर्म जाना होगा?
Which platform do I need for?
व्हिच प्लेट फॉर्म डू आई नीड फॉर?

त. रेल देरी से चल रही है।
The train is running late.
द ट्रेन इज रनिंग लेट।

-. मैं अपने रोज के टिकट का नवीनीकरण करना चाहता हूं।
I would like to renew my season ticket, please.
आई वुड लाइक टु रिन्यु माई सीजन टिकट, प्लीज।

क. □या मुझे एक समय सारिणी मिल सकती है, कृपया?
Can I have a timetable, please?
केन आई हेव अ टाइमटेबल, प्लीज?

Antonyms

Add- जोड़ना	Subtract- घटाना
Summer- गर्मी	Winter- सर्दी
Supporter- समर्थक	Opponent- विरोधी
Sweet- मीठा	Bitter- कड़वा

Word-Power

- Modest-विन्रम, शालीन Quarter-चौथाई
- Deceit-धोखा Constant-स्थिर
- Conqueror-विजयी Hindrance-बाधा, विघ्न
- Descendant-वंशज Scold-फटकारना

English-Hindi Phrases

Carry over- अग्रनयन, आगे बढ़ाना।
Carried down- अधोनीत, तलशेष।
Carry out- पालन करना, कार्यान्वित करना।
Carried forward- अग्रेनीत, आगे ले जाया गया।
Case has been closed- मामला समाप्त कर दिया गया है।
Case is resubmitted as directed on pre-page- पूर्व पृष्ठ पर निदेशानुसार मामला पुन: प्रस्तुत है।

Synonyms

Vigour- विगर
जोश, ताकत, बल, शि□त
Energy, Muscularity, Vigor, Vim, Dynamism, Heartiness

(अगले अंक में जारी)

चमगादड़ गुफा से निकलते समय हमेशा बाएं मुड़ते हैं।

जिस हाथ से आप लिखते हैं, उसकी उंगलियों के नाखून ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं।

तथ्य निराले

हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि इससे एक इंच की कील तैयार की जा सकती है।

दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट का मैदान हिमाचल प्रदेश के चायल नामक स्थान पर है। इसे समुद्री सतह से 2444 मीटर की ऊंचाई पर भूमि को समतल बनाकर वर्ष 1893 में तैयार किया गया था।

बिल गेट्स हर सेकंड करीब 12000 रुपए कमाते हैं। यानी एक दिन में करीब 102 करोड़ रुपए।

जार्ज बुश ने एक बार जापानी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर उल्टी कर दी थी।

इतिहास में सबसे छोटा युद्ध वर्ष 1896 में इंग्लैंड और जंजीबार के मध्य हुआ था। इसमें जंजीबार ने 38 मिनट बाद ही आत्मसमर्पण कर दिया था।

टाइटैनिक जहाज को बनाने में उस समय 35 करोड़ 70 लाख रुपए लगे थे। जबकि टाइटैनिक फिल्म बनाने के लिए 1000 करोड़ के लगभग लागत आई।

जिन लोगों कि शरीर पर तिलों की संख्या ज्यादा होती है, वह औसतन कम तिल वाले लोगों से ज्यादा जीते हैं।

पुरुषों की शर्ट के बटन राइट साइड पर, जबकि औरतों के लेफ्ट साइड पर लगे होते हैं।

एक सामान्य मनुष्य अपने पूरे जीवनकाल में भूमध्य रेखा के पांच बार चक्कर लगाने जितना चलता है। यह लगभग 2 लाख किलोमीटर है।

सौ वर्ष की उम्र के पार पहुंचने वालों में से 5 में से 4 औरतें होती हैं।

ज्यादातर विज्ञापनों में घड़ी पर 10 बजकर 10 मिनट का समय दिखाया जाया जाता है।

नर्सरी क्लास के बच्चे कैंटीन गए। वहां सेब की एक टोकरी रखी थी। उस पर लिखा था, 'कोई चोरी से सेब न उठाए। ईश्वर सब कुछ देख रहा है।' एक बच्चा पास के चॉकलेट काउंटर पर गया और लिखा, 'जितने चाहे ले लो। ईश्वर तो सेब देखने में बिजी है।'

पत्नी -जानू, बताओ तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?
पति- बहुत ज्यादा।
पत्नी- फिर भी कितना?
पति (गुस्से से)- इतना कि दिल करता है कि तुम्हारे जैसी एक और ले आऊं।

पिताजी- संजय क्यों रो रहा है?
संजय- गुरुजी ने मारा।
पिता- तूने क्लॉस में गड़बड़ की होगी।
संजय- नहीं, मैं तो क्लास में चुपचाप सो रहा था।

अध्यापक- बोलो ए फॉर एपल।
बच्चा (धीरे से)- ए फॉर एपल।
अध्यापक- जोर से बोलो।
बच्चा- जय माता दी।

बंता संता से- तुम इतनी देर से कीबोर्ड में क्या ढूंढ रहे हो
संता- इस कीबोर्ड में एनी का बटन ही नहीं है और स्क्रीन पर लिखा है, प्रेस एनी की टू स्टार्ट।

अध्यापक- बताओ भारत में सबसे ज्यादा बारिश कहां गिरती है?
बड़ी देर सोचने के बाद संता ने जवाब दिया... जमीन पर!

मुन्ना भाई- सर्किट अगर बस पे तू चढ़े या फिर तुझ पे बस चढ़ जाए तो क्या होगा!!
सर्किट- बोले तो भाई दोनों बार टिकट अपनी ही कटेगी।

बच्चा (सपने में भगवान से)- हे भगवान, अब कभी तीसरा विश्वयुद्ध न हो।
भगवान- अरे वाह, तुम अपने देश से इतना प्यार करते हो।
बच्चा- अरे नहीं। मैं हिस्ट्री में वीक हूं। अब तीसरे वर्ल्डवॉर के बारे में याद नहीं कर सकता।

एक दिन रावण डिस्को गया और बेहोश हो गया।
क्यों? क्योंकि बाहर लिखा था, पर हेड एंट्री 1500 रुपए।

जुड़वां बच्चे कमरे में बैठे थे। एक उदास था और दूसरा बहुत हंस रहा था।
पापा- तुम इतना क्यों हंस रहे हो और ये इतना उदास क्यों है?
बच्चा- आज मम्मी ने इसे दो बार नहला दिया है।

एक बच्चा तालाब में डूब रहा था। सभी देख रहे थे। किसी में हिम्मत न थी कि बच्चे को बचा लाए। तभी एक साहब ने छलांग लगा दी और बच्चे को बचा लिया। दर्शकों में से एक बोला- बड़ी हिम्मत की आपने। वह व्यक्ति बोला- हिम्मत की ऐसी की तैसी, पहले यह बताओ, मुझे धक्का किसने दिया था?

CrossWord PuzzLeS

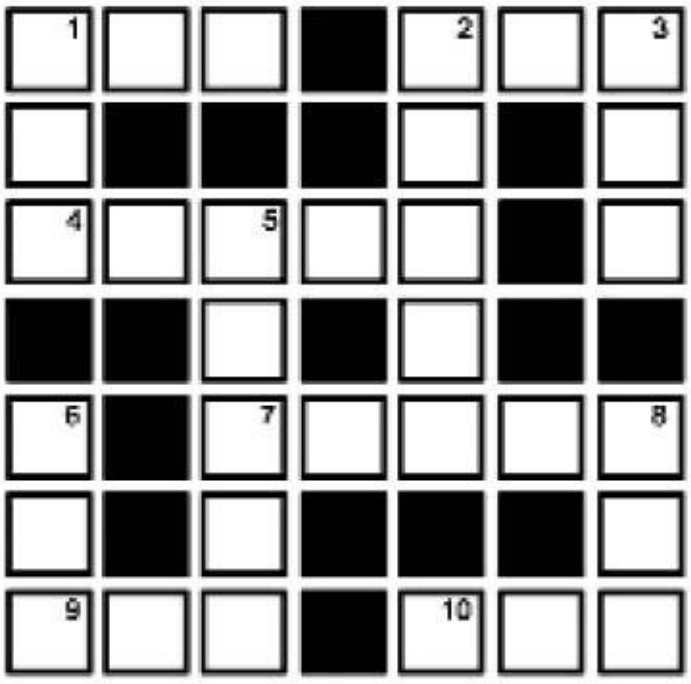

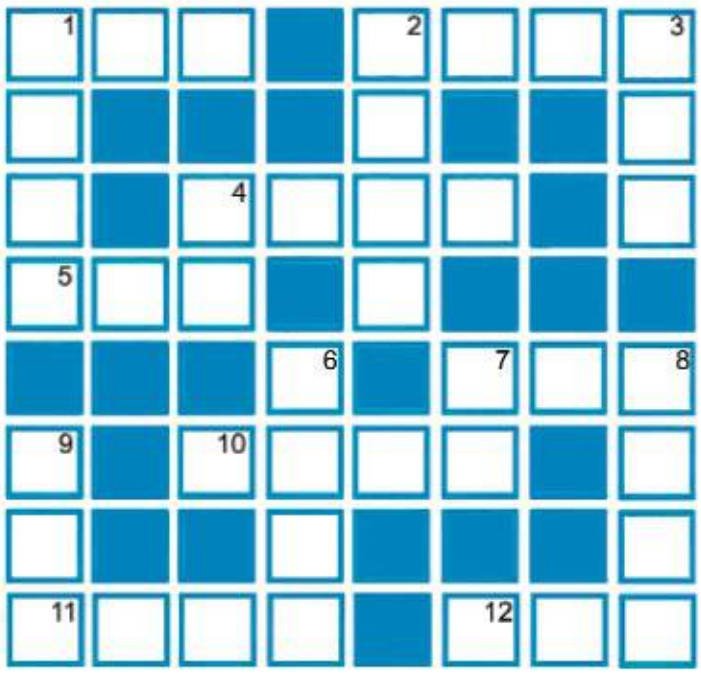

बाएं से दाएं

क. बिना काम का, आलसी, कामचोर (फ)।

ख. फुलवारी, छोटा बगीचा (फ)।

ङ. हमेशा बना रहने वाला, नश्वर (भ)।

ख्र. हर तरफ से रक्षा करने वाला (भ)।

–. छकड़ा, गाड़ी (फ)।

क. गणना में प्रथम अंक का स्थान (फ)।

ऊपर से नीचे

क. निकलने का मार्ग, उद्गम स्थान, दरवाजा (फ)।

ख. चमकवाला, चमकीला (भ)।

फ. सुंदर, निर्मल, कोमल (फ)।

भ. उलट-फेर, बहुत बड़ा परिवर्तन (भ)।

म. घड़ा, गगरी (फ)।

त. असलियत की बात, लेप (फ)।

ACROSS

1. A small blood sucking insect infesting beds (3).
2. Compound of fat and soda used in washing (4).
4. To go lightly and quickly, slight error mistake, A short journey (4).
5. A small dwelling cottage for shelter (3).
7. Creative work of beauty, manner of doing things, practical skills (3).
10. This company makes water purifiers system (4).
11. An instrument for making heavy sound (4).
12. The outfits of necessaries, A small wooden tub (3).

DOWN

1. A combination of two or more political parties or countries (4).
2. The company 'Tarun Textile' also known as...(2).
3. Vigour, Energy (3).
4. The thing in questions (2).
6. Condition of an agreement (4).
7. By, Near, Towards (2).
8. A bunch or cluster of soft objects (4).
9. A slender straight round stick or metal bar (3).

Answer

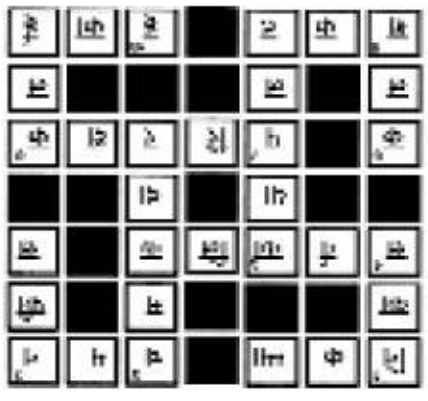

चमकते सितारे

दोस्तो, आसमान में जगमगाते तारों को देखकर हमें ऐसा लगता है, जैसे वे लगातार नहीं चमक रहे हैं, बल्कि बार-बार चमक कर बंद हो जाते हैं। किन्तु ऐसी कोई बात नहीं है।

तारे निरन्तर एक समान चमकते रहते हैं। दरअसल, तारों से छूटती रोशनी को हमारी आंखों तक पहुंचने से पहले वायुमंडल में विद्यमान कई अवरोधों का सामना करना पड़ता है।

इसलिए उनकी रोशनी रास्ते में विचलित-विभाजित होती रहती है। सीधी हम तक नहीं पहुंच पाती, □योंकि वायुमंडल में हवा की कई चलायमान परतें होती हैं। ये परतें तारों की रोशनी के पथ को बदलती रहती हैं।

इसके फलस्वरूप उनकी रोशनी हमारी नजरों से कभी ओझल, कभी प्रकट होती रहती है। इसीलिए तारे टिमटिमाते दिखाई देते हैं। इनका आनंद उस समय और भी बढ़ जाता है। जब अंधेरी रात के साफ आसमान में करोड़ों की सं□या में टिमटिमाते तारे एक ऐसी अद्भुत दुनिया का

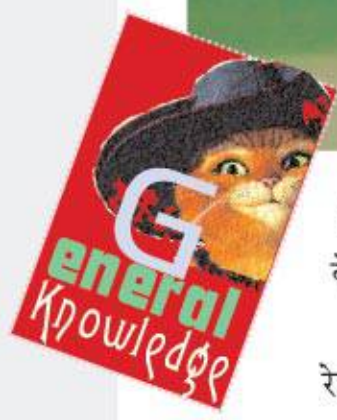

सेनेगल

दुनिया के देश

वर्ष क्त-भ में फ्रेंच पश्चिमी अफ्रीका का भाग बनने से पूर्व सेनेगल फ्रांस व ब्रिटेन के अधिकार में रहा। सन् क-भ्त तक यहां फ्रांस का अधिकार रहा। वर्ष क-म में इसे पूर्ण स्वतंत्रता मिली।

आधिकारिक नाम- रिपा□लिक टू सेनेगल। **राजधानी-** डाकर। **मुद्रा-** सी.एफ.ए. फ्रैंक। **मानक समय-** जी एम टी के अनुरूप। **भाषा-** फ्रेंच (आधिकारिक), वोलोफ। **कुल जनसं□या-** क,क्क,ख्र,त्फ्ख **क्षेत्रफल-** क,-म,क- वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- पश्चिमी अफ्रीका में गिनी बिसाऊ व मॉरिटेनिया के मध्य उ□ारी अटलांटिक महासागर के तट पर स्थित है।

जलवायु- उष्णकटिबंधीय है। यहां का तटीय क्षेत्र रेतीला है। दक्षिण क्षेत्र में वन बहुतायत में हैं।

प्रमुख नदियां- सेनेगल, गै□बया, कासामैन्स।

सर्वोच्च शिखर- मोंट गौनू-क,भ्क्भ मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- थाइस, सेंट लुइस, काओलैक, जिगुइन कोर।

प्रमुख उद्योग- मत्स्य भण्डारण, फॉस्फेट खनन, निर्माण सामग्री उद्योग, पेट्रोलियम शोधन।

प्रमुख फसलें- अनाज, कपास, मूंगफली, आलू, तरबूज।

प्रमुख खनिज- सोना, लौह अयस्क, फॉस्फेट, एल्यूमीनियम।

शासन प्रणाली- गणतंत्रात्मक। **संसद-** नेशनल असे□बली।

राष्ट्रीय ध्वज- हरे, लाल व पीले रंग की पट्टियों पर सितारे का चिह्न अंकित है। **स्वतंत्रता दिवस-** ब अप्रेल, क-म

प्रमुख धर्म- मुस्लिम- -ब प्रतिशत।

प्रमुख हवाई अड्डा- लियोपोल्ड सेडर सेंघोर स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा। **प्रमुख बंदरगाह-** डाकर।

इंटरनेट कोड- .sn

क्यों → और → कैसे?

इलेक्ट्रिक ईल करंट मारती है?

इसमें कोई शक नहीं कि इलेक्ट्रिक ईल वास्तव में जीव जगत की एक अनोखी सदस्य है। यह न सिर्फ करंट मार सकती है। बल्कि इसमें 650 वोल्ट तक की विद्युत पैदा करने की ऐसी ताकत होती है, जो एक घोड़े को संज्ञाहीन करने के लिए पर्याप्त है। या जिससे एक निऑन साइन बोर्ड आसानी से प्रकाशित हो सकता है।

इस मछली के न तो रीढ़ की हड्डी होती है और न ही दांत। दिल, दिमाग व पाचन तंत्र जैसे जीवनोपयोगी समस्त अंग भी इसके शरीर के अगले भाग में ही समाये रहते हैं। बाकी के पिछले भाग में प्लेटों जैसी कुछ इस तरह की व्यवस्था होती

है। जहां रासायनिक क्रिया से इसके शरीर में इलेक्ट्रिक करंट पैदा होता रहता है। ठीक उसी तरह जैसे कार की बैटरी होती है।

ईल मछली के अंदर पैदा होने वाला यह करंट दो तरह से इसके लिए उपयोगी रहता है। एक तो शत्रुओं से बचाव करते समय अपनी सुरक्षा के लिए और दूसरे अपने लिए शिकार करते समय मछलियां को अचेत करने के लिए, ताकि आराम से अपनी भूख मिटा सके।

लेकिन तुम्हारे दिमाग में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि जल में रहकर यह अपने आप को करंट से कैसे अप्रभावित रखती है। जीव वैज्ञानिकों का कहना है कि इस मछली के शरीर में पृथक्करण की ऐसी व्यवस्था मौजूद होती है, जिसमें अपने स्वयं के द्वारा उत्पन्न विद्युतधारा से कोई हानि नहीं हो पाती। है न एक बेहद आश्चर्यजनक सत्य।

उलझाने वाला डिब्बा

सामग्री– प्लास्टिक का एक गोल डिब्बा, एक मीटर लम्बा इंसुलेटेड वायर, सैलोटेप, बल्ब होल्डर, सेल, बल्ब।

शुरू करो– अपने परिवार के किसी बड़े सदस्य की मदद लेकर प्लास्टिक के गोल डिब्बे के ऊपरी किनारे के पास लगभग बराबर–बराबर दूरी पर आठ छेद कर लो। इसके बाद तार को चार बराबर भागों में काटो और हरेक टुकड़े को किन्हीं दो छेदों से गुजारते हुए इनके दोनों सिरे स्वतंत्र छोड़ दो।

प्रत्येक तार पर छेद के दोनों ओर यानी डिब्बे के अंदर व बाहर की तरफ सैलोटेप लपेट दो, ताकि तार के टुकड़े आगे–पीछे न सरक सकें।

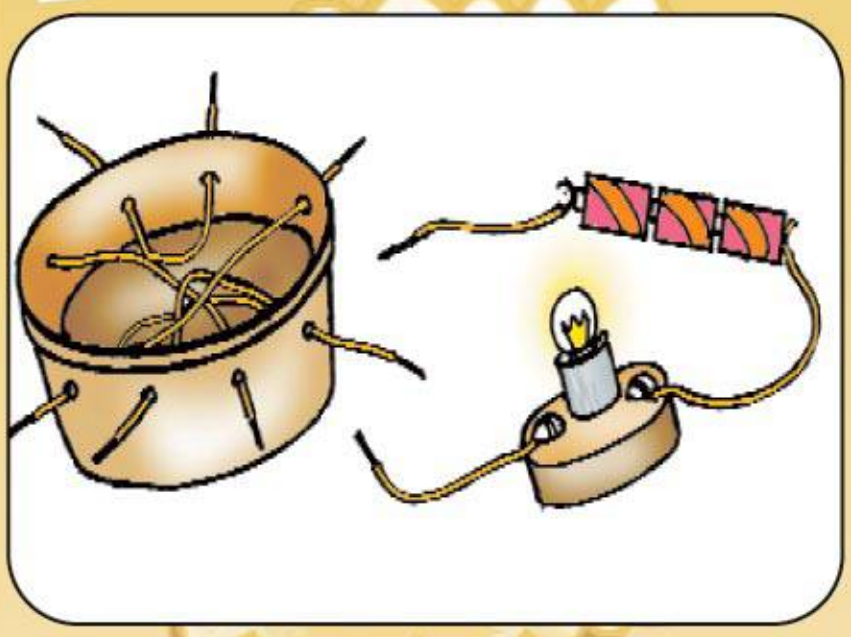

बस इतना करने के बाद डिब्बे पर ढक्कन लगा दो। चाहो तो आकर्षक रंगों से डिब्बे को तुम सजा भी सकते हो। अब अपने दोस्तों की बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए उन्हें आमंत्रित करो। बल्ब होल्डर और सैल देकर यह देखो कि उनमें से कौन कम से कम बार प्रयास के साथ सही तारों का चुनाव करके बल्ब जला देता है।

ऐसा ऐसे होता है– तुम यह बात तो जानते ही हो बल्ब तभी जलेगा, जब विद्युत परिपथ पूरा होगा। और यह तब ही पूरा होगा, जब एक ही तार के दोनों सिरे बल्ब होल्डर के तारों के सम्पर्क में आएंगे। किसी तार का एक सिरा दूसरे तार के किसी सिरे से जब बल्ब होल्डर द्वारा जुड़ेगा तो विद्युत परिपथ पूरा न होने के कारण बल्ब जलेगा ही नहीं और इस तरह खिलाड़ी की असफलता में एक अंक जमा हो जाएगा।

–आइवर

शब्द युग्म

ऋत- सत्य

ऋतु- वर्षा, शरद, आदि ऋतुएं

ओट- आड़, रोक

औटना- खौलना

कृत- किया हुआ

कृत्य- कार्य

कृति- रचना

कृती- चतुर, करने वाला

परिणय- विवाह

प्रणय- प्रेम

पर्यायवाची शब्द

बुद्धि- मति, प्रज्ञा, धिषणा, मनीषा

बलराम- बलभद्र, हलधर, हलायुध, हली

पुरस्कार- पारितोषिक, इनाम, विजयोपहार

ब्रह्मा- चतुरानन, हिरण्यगर्भ, लोकेश, विधाता

प्रस्तावना- भूमिका, प्रा□कथन, आमुख,

कल किसने देखा।
Tomorrow never comes.

कहीं गदहा भी घोड़ा बन सकता है?
Can the Ethopion change his skins?

कविता चि□ा को प्रफुल्लित करती है।
The charms of poetry captivate the soul.

काठ की हंडिया एक बार चढ़ती है।
It is the silly fish that is caught with the same bait. / A cheating play never thrives.

Take a chair-बैठ जाइये।

On the chance- संभावना से।

To leave the chair-कार्यक्रम समाप्त करना।

Caught with chaff- सहज में धोखा खाने वाला।

नॉलेज बैंक

अंतर है

Home- घर

House- मकान

Hoard- गुप्त संचय करना

Horde- घूमती फिरती जाति, दल

Human- मानवीय

Humane- दयालु, दयापूर्ण

Hue- रंग, शोरगल

Hew- तलवार या कुल्हाड़ी से काटना/ चीरना

एक के तीन

Praise-प्रेज- प्रशंसा- स्तुति

Award-अवॉर्ड- इनाम- पुरस्कार:

Prize-प्राइज- इनाम- पारितोषिकम्

Citation-साइटेशन- प्रशस्ति विवरण- प्रशस्ति:

Gratification-ग्रेटिफिकेशन- खुशी- संतुष्टि:, परितोषणम्

लोकोक्तियां

नाच न जाने आंगन टेढ़ा- अपनी अयोग्यता के लिए साधनों को दोष देना।

न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी- किसी समस्या के मूल

उर्दू/ हिन्दी

कौम- जाति, वंश, राष्ट्र

कौन- संसार, जगत, दुनिया

कोह- पहाड़, पर्वत, गिरी, जबल

कोहकनी- पहाड़ काटना, कठिन काम

One Word

One who is a newcomer- **Neophyte.**

A Government by the few- **Oligarchy.**

A Government by a king or queen- **Monarchy.**

Practice of having one wife or husband- **Monogamy.**

- जिसे भेदा न जा सके- **अभेद्य।**
- जो बिन मांगे मिल जाए- **अयाचित।**
- ग्रहण करने, पकड़ने की इच्छा- **जिघृक्षा।**
- जिस वस्तु का मूल्य न आंका जा सके- **अमूल्य**

प्रस्तुति: किशन शर्मा

मैसेज बोर्ड

art junction

सामग्री

कार्ड बोर्ड, ड्रॉइंगशीट, मार्कर पैन, कैंची, फेविकोल।

विधि

कार्ड बोर्ड से शिप का फेस, कान, और बोर्ड के आकार काट लें। ड्रॉइंगशीट से उसके बाल गरदन और पैर काट लें। मार्कर पैन से मुंह, आंखें, नीचे पैर चिपका दें। इसको अपने रूम में दीवार पर लगा दें। कोई भी याद रखने वाली बात हो तो स्लिप पर लिखकर इस पर चिपका दें। भूलेंगे नहीं।

बटरफ्लाई मास्क

सामग्री

ब्लू या कोई भी रंग की हैंडमेड शीट, डिजाइन के लिए दूसरे रंग की शीट, फेविकोल, कैंची, इलास्टिक।

विधि

बटर फ्लाई के आकार की शेप काट लें। इसमें आंखों की जगह दो गोले काट कर निकाल दें।

दूसरे रंग की शीट से बटरफ्लाई के बीच का भाग काट कर चिपका दें। पंखों पर मनचाहे डिजाइन दूसरे रंग की शीट से काटकर चिपका दें। पंखों को सुंदर बनाने के लिए लेस या स्टोन भी चिपका सकते हैं। दोनों कोनों पर छेद करके इलास्टिक बांध दें। बटरफ्लाई मास्क तैयार है।

A. अंतर बताओ

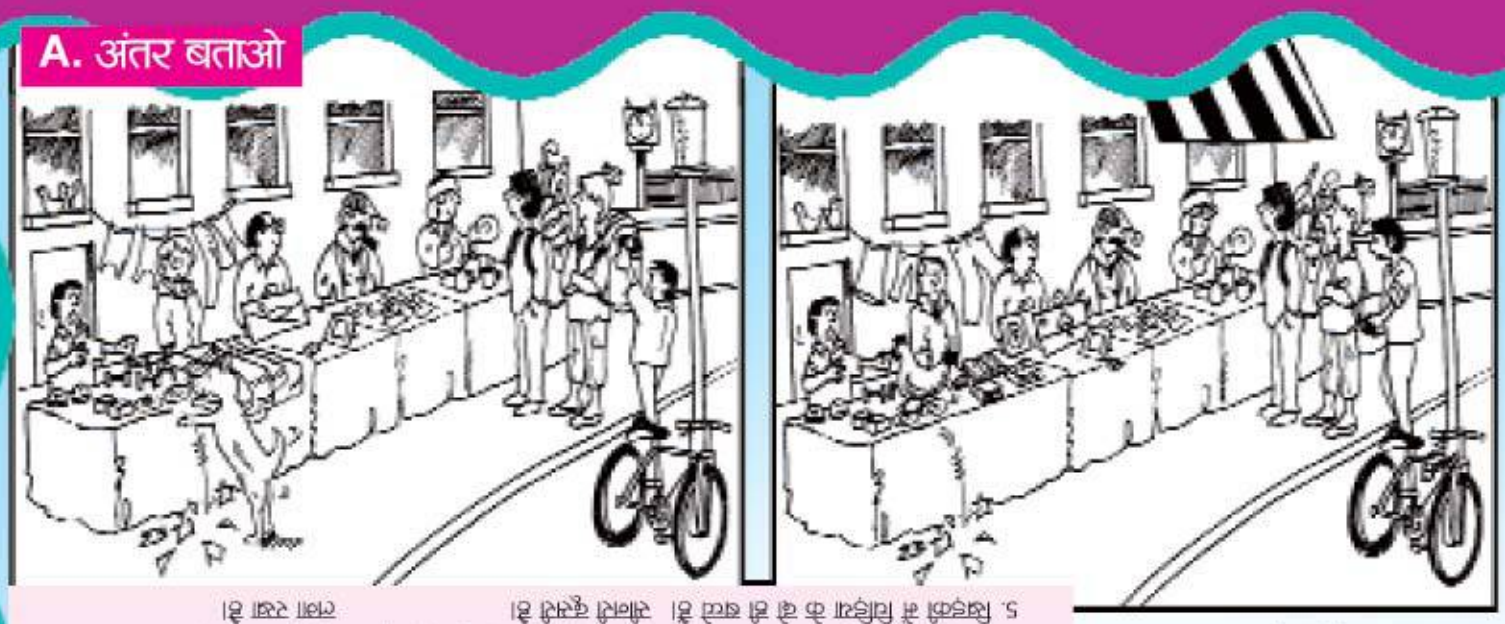

उत्तर

1. खिड़की के ऊपर होड़ लगी है।
2. पीछे खड़ा लड़का दूसरा है।
3. छुटा नहीं है।
4. टेबल पर गुलाबी है।
5. खिड़की में बिल्ली के दो ही बच्चे हैं।
6. पीछे सूख रहे कपड़े बदले हैं।
7. टेबल पर टीवल की जगह थी।
8. तीसरे आदमी की टेबल पर सोनपरी कुर्सी है।
9. दीवार सेन्सेशन सिवार थी रही है।
10. लास्ट में खड़े सेन्सेशन ने चश्मा लगा रखा है।

B. कैटर पिलर को उसके घर तक पहुंचाना है।

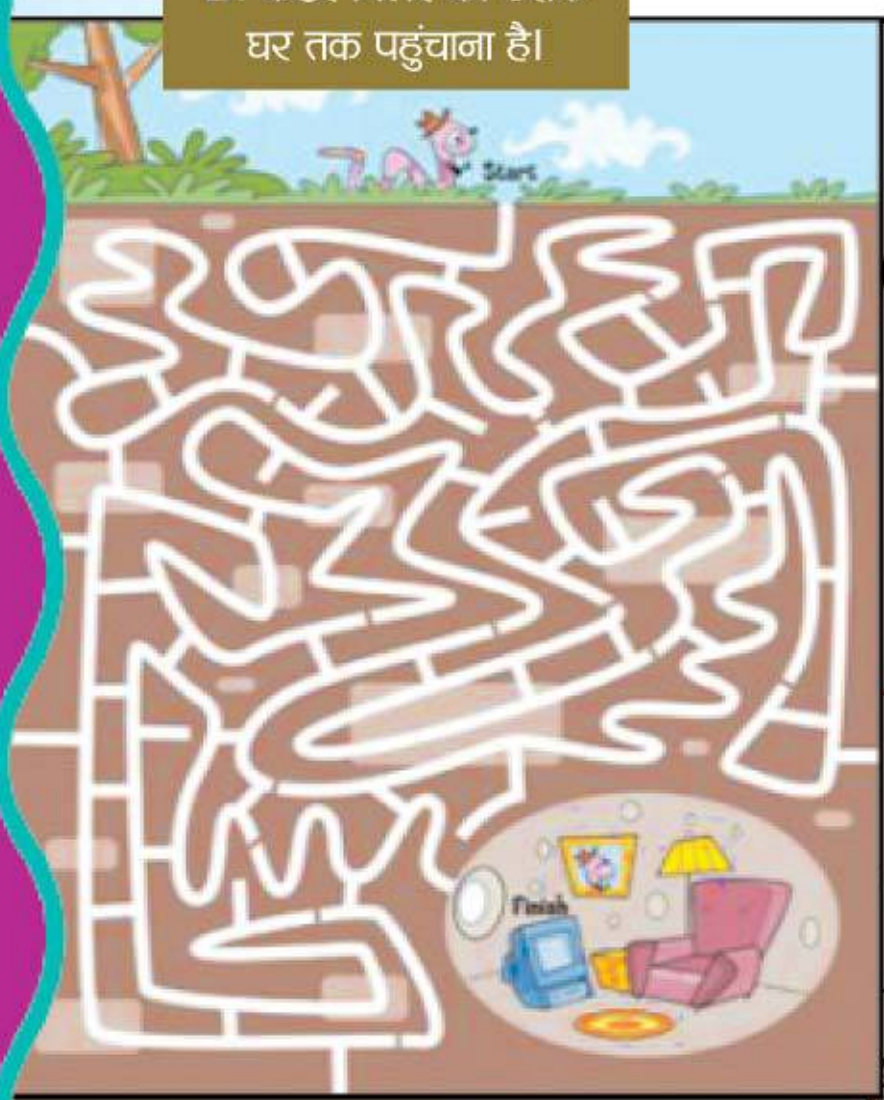

C. कौनसी सबसे अलग है?

D. कितनी पत्तियां हैं?

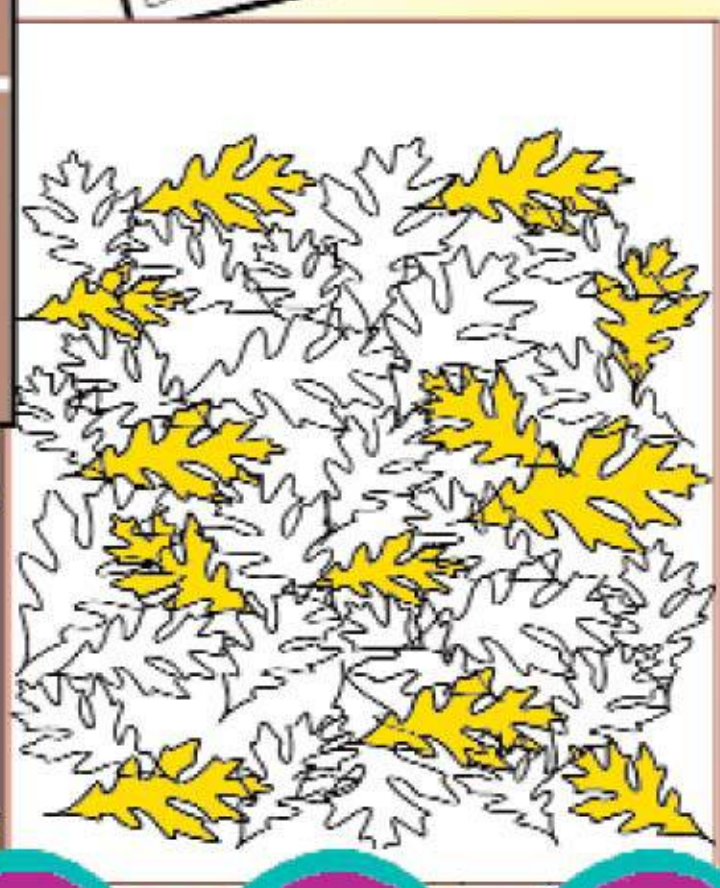

उत्तर- D.

35

उत्तर- F.

3	4	9	16
7	5	1	13
8	6	2	16
18	15	12	

E. कौनसा टुकड़ा कहां आएगा? फिट करो।

G. स्टेप बाय स्टेप चित्र बनाओ।।

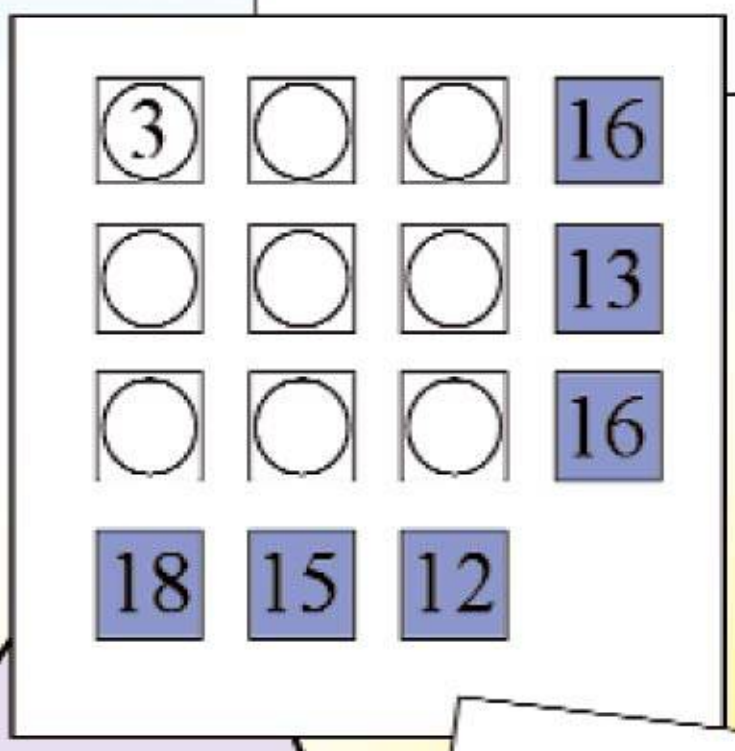

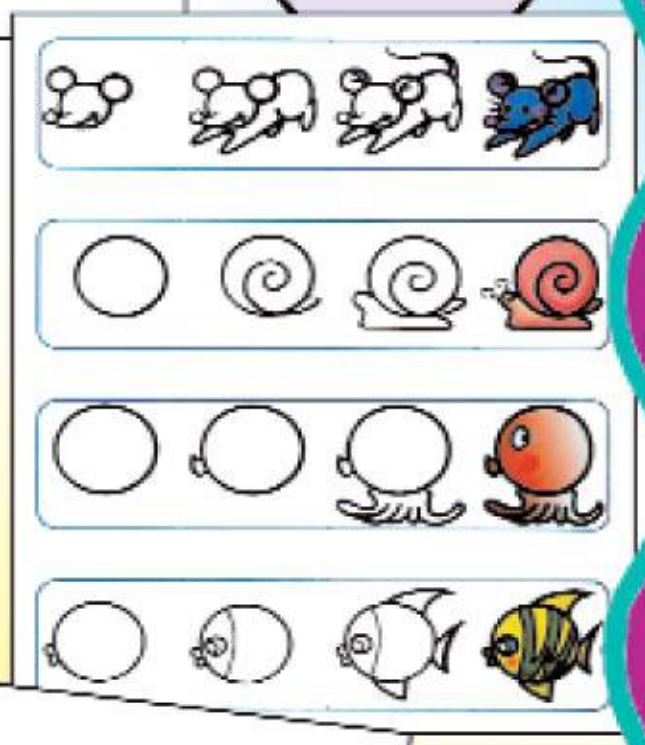

F. खाली गोलों में ऐसी संख्या भरो, जिसका योग आगे लिखी संख्या हो।

H. डॉट टू डॉट

KidsClub

अशीष शर्मा
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-भरतपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

नेहा आर. माथुर
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-डांसिंग, पढ़ना।

प्रिंस कुमार
उम्र- क वर्ष
स्थान-मावंडा कलां (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

अनुराग शर्मा
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-भरतपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्प्यूटिंग।

मनस्वी जैन
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

प्रवेश आर. माथुर
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-खेलना, टीवी देखना।

ओम पाठक
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-बुलंदशहर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

विनती सिंह
उम्र- ब वर्ष
स्थान-सोड़ावास (राज.)
रुचि-खेलना, सेवा।

खुशी शर्मा
उम्र- क वर्ष
स्थान-फागी, जयपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

कीर्ति शर्मा
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पेंटिंग, खेलना।

मोहित सिंह
उम्र- क वर्ष
स्थान-पाली मारवाड़
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

विष्णु शर्मा
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-क्रिकेट, सिंगिंग।

विशाल सोनी
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-चमोली
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

शिवप्रिया
उम्र- म वर्ष
स्थान-बुलंदशहर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

श्रेयांश सकलेचा
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-अजमेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

प्रेरणा कुमारी
उम्र- क वर्ष
स्थान-बेगुसराय (बिहार)
रुचि-डांसिंग, सिंगिंग।

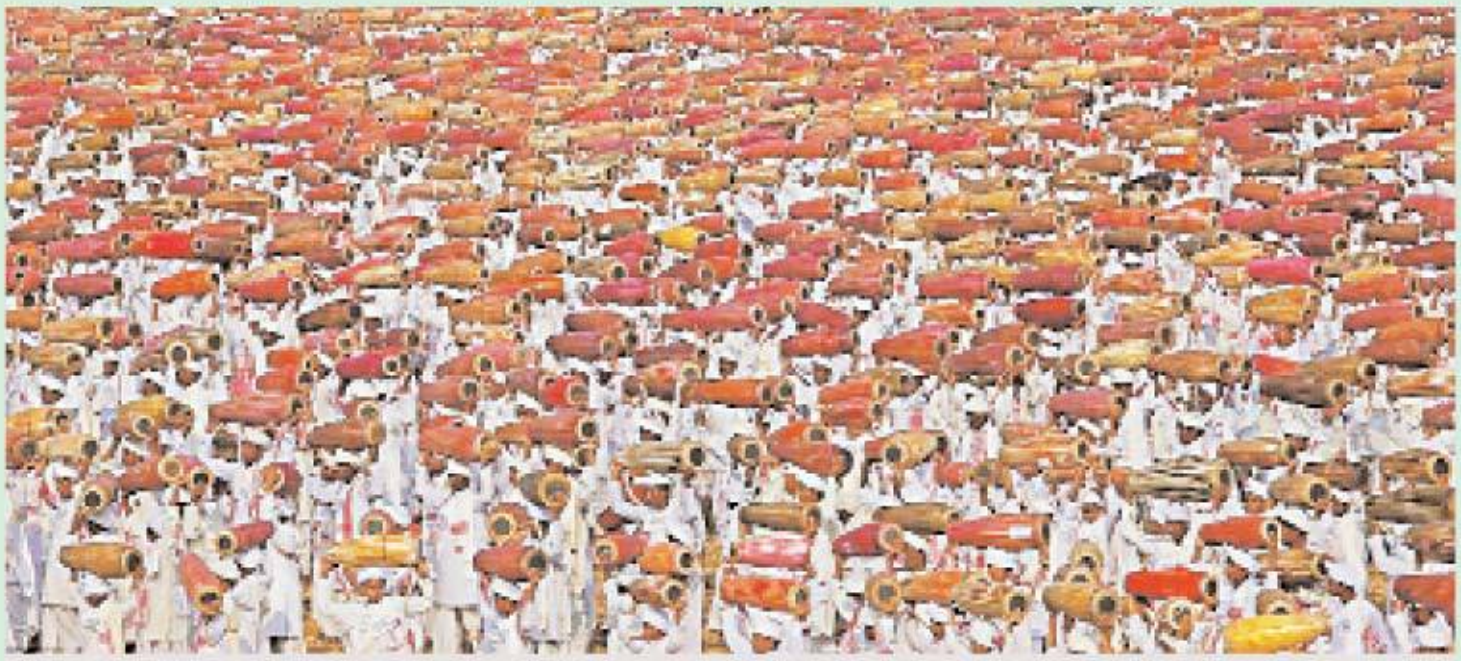

सामूहिक मृदंग वादन

असम के क्‍ हजार संगीत प्रेमियों ने 'खोल' वाद्ययंत्र की सामूहिक गूंज से विश्व रिकार्ड बनाया है। वैसे खोल को सुनना अपने आप में एक अद्□ुत अनुभव है। लेकिन जब क्‍ हजार खोल एक साथ ताल से ताल मिलाकर बज रहे हों तो नजारा ही कुछ और हो जाता है। इन तालवादकों ने लगातार क्‍ मिनट तक एक साथ एक स्वर में इस वाद्ययंत्र को बजाकर कीर्तिमान स्थापित किया है।

बालहंस न्यूज

पत्थर की पुस्तक

बच्चो, तु□हारी सभी पुस्तकें कागज से बनी हुई होंगी। तुम सोचते होंगे कि पुस्तकें केवल कागज से ही बनी होती हैं। मगर ऐसा नहीं है। पहले लोग वृक्षों के चौड़े प□ों, लकड़ी के फट्टों और पत्थर पर भी लिखते थे। □यांमार में संगमरमर पत्थर से बनी एक विशाल पुस्तक है। माली भाषा में लिखी इस पुस्तक में कुल क्‍ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ की ल□बाई ५ फीट, चौड़ाई फ.५ फीट और मोटाई आधा फीट है। इस पुस्तक की कुल ल□बई क.म किलोमीटर और कुल वजन स्त्रख्‍ टन है। यह दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक

मेयर हैं, उम्र बस चार साल

रॉबर्ट उर्फ बॉबी डोरसेट मिनेसोटा शहर के मेयर हैं। यह शहर दुनिया में रेस्टोरेंट की राजधानी के नाम से जाना जाता है। साथ ही यह एक मशहूर पर्यटन स्थल है। आपको जानकर हैरानी होगी कि रॉबर्ट उम्र में मात्र ब साल के हैं और अभी तक इन्होंने स्कूल जाना भी शुरू नहीं किया है। अपनी आइसक्रीम पसंदगी के लिए ये मशहूर हैं। दरअसल मिनेसोटा शहर एक बहुत छोटी जनसं□या वाला शहर है। यहां मुश्किल से ख्‍ से ख्‍ लोग रहते हैं। साथ ही कोई यहां कोई औपचारिक सरकारी व्यवस्था नहीं है। डोरसेट त्योहार के दिन यहां के लोग अपनी पसंद के

व्हेल के साथ तैराकी

व्हेल मछली जल में रहने वाले उन जानवरों के समूह से ताल्लुक रखती है, जिसकी कुछ प्रजातियां अभी तक के सबसे बड़े जानवरों में शुमार हैं। हालांकि यह जीवनभर पानी में रहती है और इसका आकार भी मछली जैसा होता है, इसके बावजूद व्हेल एक स्तनधारी है।

व्हेल जीवनपर्यंत पानी में रहती है और यह इकलौती स्तनधारी जीव है, जिसने महासागर की जिंदगी के अनुसार खुद को ढाला है। अन्य स्तनधारियों की तरह व्हेल अपने फेफड़ों से सांस लेती है। गर्म खून है, स्तन ग्रंथि है, जिससे यह अपने बच्चों को पोषण देती है और साथ ही इसके हृदय में भी चार चैंबर होते हैं।

लेकिन ये अन्य स्तनधारी जीवों से कुछ मामलों में अलग हैं। मसलन, अधिकतर स्तनधारी जीवों के चार पैर होते हैं। व्हेल के पीछे के पैर नहीं होते हैं और आगे के पैरों की जगह व्हेल में फ्लिपर्स होते हैं। इससे व्हेल को पानी में तैरने और अपना संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। मछलियों के शरीर पर पंख जैसा कुछ लगा होता है, लेकिन अधिकतर स्तनधारी जीवों में ऐसा नहीं होता है। ज्यादातर स्तनधारी जीवों के शरीर पर बाल होते हैं, लेकिन दंतधारी व्हेल के शरीर पर कुछ ही बाल होते हैं या फिर होते ही नहीं हैं। कई दंतधारी व्हेल में लंबी नाक, जिन्हें चोंच कहा जाता है और फूला हुआ माथा होता है।

ये काले रंग से लेकर स्लेटी और सफेद रंग में पायी जाती हैं। ये अपनी दमदार पूंछ की मदद से तैरती हैं, और उनके शरीर की लंबाई का एक तिहाई हिस्सा पूंछ ही होती है। उनका मस्तिष्क बहुत ही जटिल होता है और यह एक सख्त खोपड़ी में बंद होता है, जो स्नायु तंत्र से जुड़ी होती है। उनका हृदय रक्त पंप करता है। उनका आकार, आकृति उन्हें ध्रुवीय महासागर की जमा देने वाली ठंड में भी गर्म रखता है।

आवास

व्हेल सिर्फ पानी में ही रहती है, और ऐसी जगह रहना पसंद करती है जहां मौसम गर्म हो। उत्तरी प्रशांत महासागर में स्लेटी व्हेल पायी जाती हैं। स्लेटी व्हेल आर्कटिक से दक्षिण कैलिफोर्निया की ओर प्रवास करती हैं। यह किसी भी स्तनधारी का सबसे लंबा प्रवास होता है, और यह व्हेल करीब क हजार मील यानी क्म किलोमीटर की दूरी तय करती है।

नीली व्हेल ज्यादातर ठंडे और संयमित जल में पायी जाती है। इसे तटीय जल के मुकाबले महासागर का गहरा पानी अच्छा लगता है। नीली व्हेल आईसलैंडिक और सेल्टिक सामुद्रिक पारिस्थितिकी, दक्षिणी कैरेबियन समुद्र में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त करीब ख नीली व्हेल मछलियां कैलिफोर्निया तट पर भी रहती हैं, और

आदतें

व्हेल एक-दूसरे के साथ चंचल और स्नेही व्यवहार रखती हैं। नर व्हेल मादा व्हेल के करीब ही रहता है और उसकी व शावक की रक्षा करता है। मादा व्हेल प्रवृ□ा से रक्षात्मक होती है और ज□मी हुए शावक को छोड़कर नहीं जाती है। मादा व्हेल अपने शावक की लंबे समय तक देखभाल करती है, आमतौर पर कम से कम एक साल तक। इस दौरान वह उन्हें दूध पिलाती है और उनकी रक्षा करती है। कई व्हेल कलाबाजी भी करती हैं। वे पानी के अंदर से ऊंची छलांग लगाती हैं और फिर नीचे आते समय पानी पर थपेड़े मारती हैं। इसे 'ब्रीचिंग' कहते हैं। भोजन प्रक्रिया और आदतों के आधार पर व्हेल को दो समूहों- बैलीन

प्रकार

स्लेटी व्हेल उ□ारी प्रशांत महासागर में पायी जाती हैं। उनकी लंबाई करीब ५ फीट यानी क्५ मीटर तक होती है और सफेद चि□ों के साथ ये अमूमन स्लेटी रंग की होती हैं। नीली व्हेल या सल्फर बॉटम, पृथ्वी पर रहने वाली सबसे बड़ी जीव है। नीली व्हेल आकार में क फीट यानी फ मीटर तक लंबी हो सकती है और इसका वजन करीब क्० टन यानी क्ख्त्र,' किलोग्राम तक हो सकता है। नीली व्हेल आमतौर पर नीली-ग्रे रंग की होती है और इस पर हल्के रंग के ध□बे होते हैं। एक नीली व्हेल के दिल का आकार छोटी कार के बराबर होता है। इसकी जीभ का वजन एक हाथी के वजन

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **कौन- सी व्हेल अमरीका के पश्चिमी किनारे से पलायन करती है?**
  (A) हंपबैक व्हेल
  (B) नीली व्हेल
  (C) स्लेटी व्हेल
  (D) बैलीन व्हेल

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

इस प्रकार के अन्य खतरनाक जीवों के बारे में जानकारी के लिए एनिमल प्लेनेट पर हर रात - बजे 'डैडली ५' देखना न भूलें।

पिछली बार के सवाल 'मेढक किस प्रकार आपस में संवार करते हैं' का सही जवाब है- टर्र कर

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी क□यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

मार्च प्रथम, 2014

क. **ऋषभ शंखवार,** इटावा (उ.प्र.)
ख. **कौशल कुमार,** कानपुर (उ.प्र.)
फ. **आजम अहमद,** देवरिया (उ.प्र.)
ब. **स्वयम् पुरोहित,** बीकानेर (राज.)
भ. **हर्ष अग्रवाल,** बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
म. **नन्दिता रस्तौगी,** मुरादाबाद (उ.प्र.)
स्त्र. **मधुर मिश्रा,** श्योपुर (म.प्र.)
त्त. **आयुष सोइन,** गाजियाबाद (उ.प्र.)
-. **पहल अग्रवाल,** रतलाम (म.प्र.)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. **पायल रागेय,** अजमेर (राज.)
ख. **राजेश कुमार,** नई दिल्ली
फ. **मनन विरमानी,** अलवर (राज.)
ब. **अनुराग शर्मा,** अलवर (राज.)
भ. **आंचल मिश्रा,** नरहनपुर (उ.प्र.)
म. **रित्विक शर्मा,** उदयपुर (राज.)
स्त्र. **कुनिका शर्मा,** राजगढ़ (राज.)
त्त. **राशि चतुर्वेदी,** फैजाबाद (उ.प्र.)
-. **मधुलिका,** मुंगेर (बिहार)
क. **वसन्धरा प्रजापत,** अलवर (राज.)
क्क. **राजवीर,** सीकर (राज.)
क्ख. **हुकमा राम,** बाड़मेर (राज.)
क्फ. **आदित्य भारद्वाज,** कुशीनगर (उ.प्र.)
क्ब. **सचिन सचान,** कानपुर (उ.प्र.)
क्भ. **मंजीत कुमार,** फतुहा (बिहार)

ज्ञान प्रतियोगिता- 345 का परिणाम

क. **हेमन्त कुमार,** जयपुर (राज.)
ख. **आफताब अहमद,** अदालतगंज, पटना
फ. **मेधा जैन,** जयपुर (राज.)
ब. **देशना पाटनी,** कोडरमा (झारखंड)
भ. **आशीष कुमार,** हंतरा, भरतपुर (राज.)
म. **कुनिका शर्मा,** राजगढ़ अलवर (राज.)
स्त्र. **देवव्रत,** गूगलकोटा, नीमराना, अलवर (राज.)
त्त. **अन्नु शर्मा,** जयपुर (राज.)
-. **अदिति,** रोहतास (बिहार)
क. **उज्ज्वल द्विवेदी,** छतरपुर (म.प्र.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 345 का सही हल

डा.एपीजे अब्दुल कलाम, डा. राजेन्द्र प्रसाद, नीलम संजीव रेड्डी, आर.वैंकटरमन
क. देवनागरी लिपि
ख. अंग्रेजी
फ. फारसी लिपि
ब. आशीर्वाद
भ. शिंजो अबे

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

348 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

KNOWLEDGE IS POWER

क. यदि आपको कुतुबमीनार देखना है तो कौनसे राज्य में जाना होगा ?

(अ) चण्डीगढ़

(ब) दिल्ली

(स) मुंबई

ख. दार्जिलिंग शहर किस प्रदेश में स्थित है ?

(अ) उ□ार प्रदेश

(ब) मध्य प्रदेश

(स) पश्चिम बंगाल

फ. इनमें कौनसा पर्यटन स्थल हिमाचल प्रदेश में है ?

(अ) शिमला

(ब) पणजी

(स) पुष्कर

ब. राजस्थान जाकर आप इनमें से कौनसा पर्यटन स्थल देख सकते हैं ?

(अ) ताजमहल

(ब) हवा महल

(स) लाल किला

भ. डल झील का स□बन्ध किस प्रदेश से है ?

(अ) ज□मू-कश्मीर

(ब) महाराष्ट्र

(स) उदयपुर

दुनिया के इन नए आश्चर्यों को जरा पहचानिए।

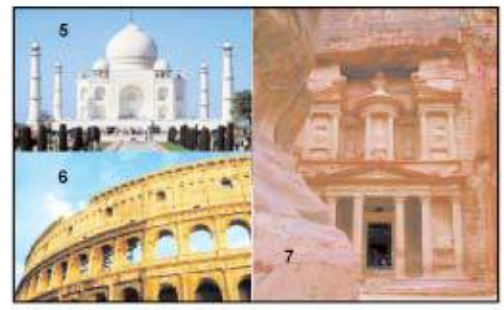

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता– 348

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 25 अप्रेल, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

ई-मैन - 18

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

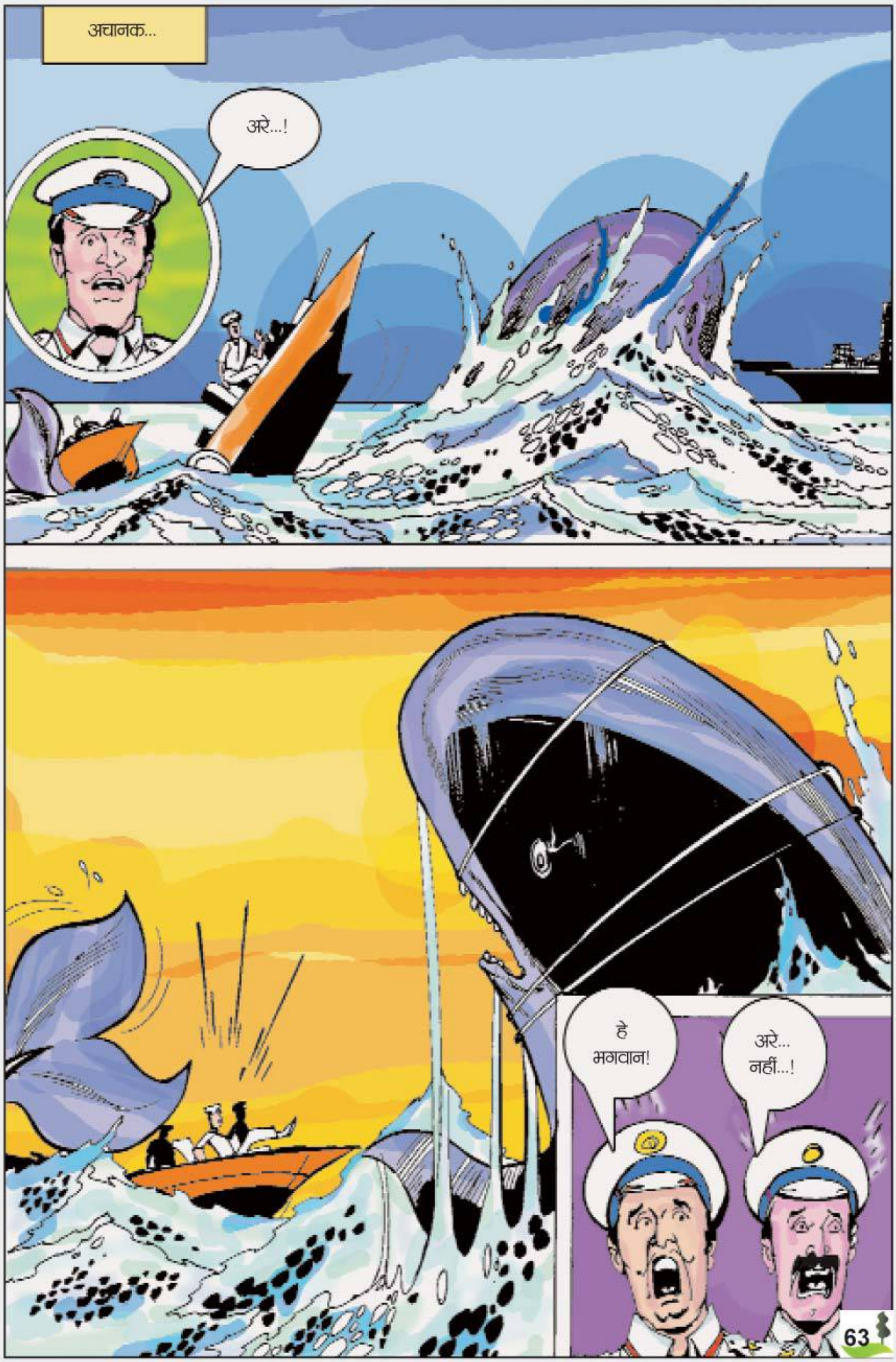
अचानक...
अरे...!
हे भगवान!
अरे... नहीं...!

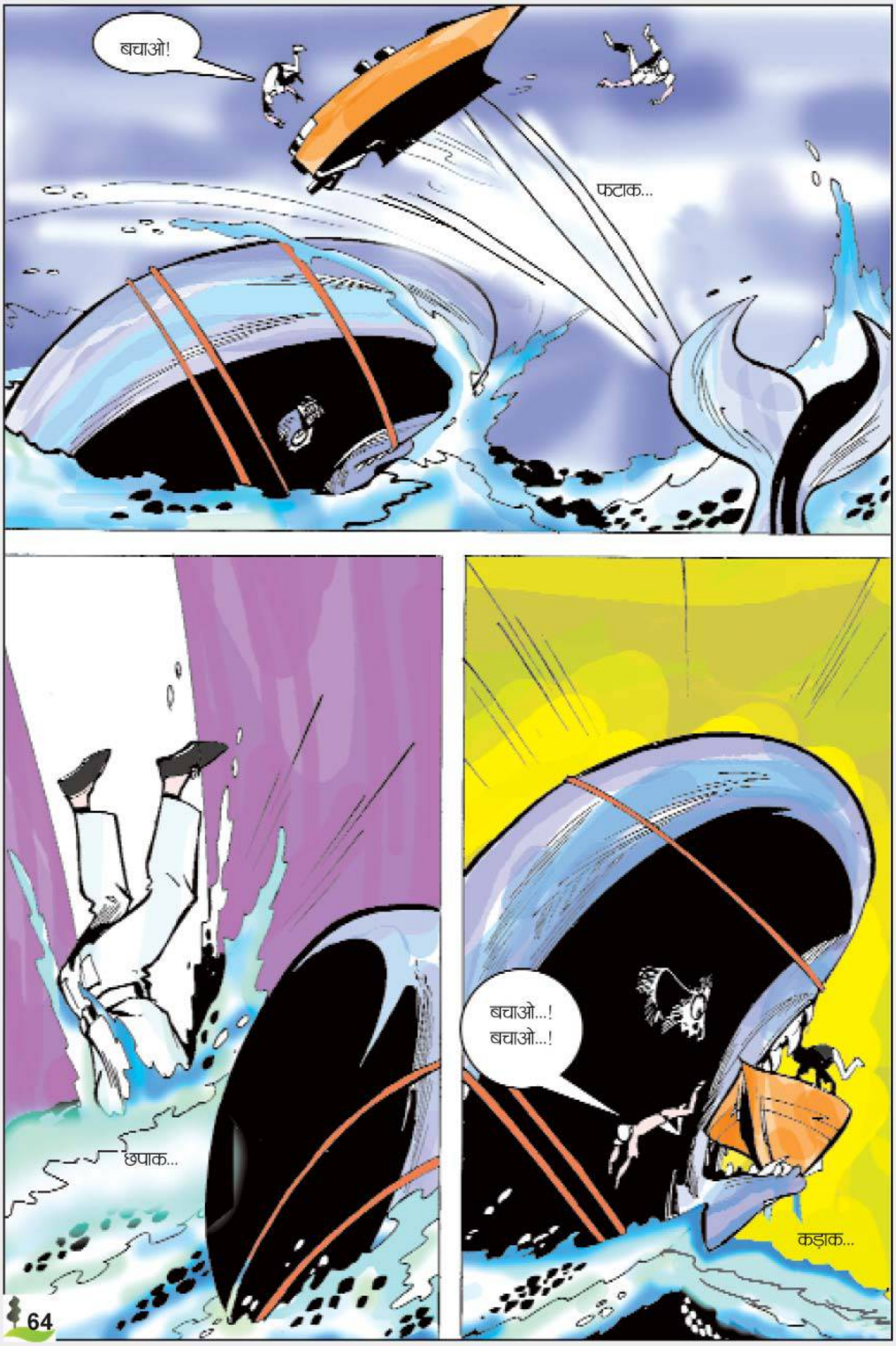
बचाओ!
फटाक...
छपाक...
बचाओ...!
बचाओ...!
कड़ाक...

एडमिरल हरगोविंद यह खबर सुनकर चौंक गये।
हे भगवान!
बसु बहुत ही नाराज था, उसे गुस्सा भी आ रहा था।
अंकल, अब मैं आराम से नहीं बैठ सकता।
ये वही समुद्री गिद्ध हैं, जिनके पास व्हेल्स की सेना है।
उनकी खून की प्यास मैं बुझाऊंगा।
(अगले अंक में जारी)

बालहंस में ज्ञानवर्द्धक सामग्री को पढ़कर लगा कि आज के बच्चों को यह भूत और वर्तमान की जानकारियों से जोड़ने का अद्भुत प्रयास है। बच्चों के मानसिक विकास के लिए यह मैगजीन मुझे श्रेष्ठतम लगी। कहानियां, पहेलियां, तथ्य निराले, नॉलेज बैंक, गुदगुदी सहित सभी स्तरीय हैं।

– डा. शारदा पाण्डेय,
भारद्वाजपुर, प्रयाग (उ.प्र.)

मैं बालहंस का नया, लेकिन नियमित पाठक हूं। मुझे बालहंस पढ़ने में बहुत आनंद आता है। यह मैगजीन ज्ञान-मनोरंजन का भंडार है। कहानियां, चित्रकथाएं, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगिताएं अच्छी लगती हैं। इस अंक में मुझे हवाई द्वीप की सैर, ऐसी हो होली, कार्टूनी होली, होली विदेशों में भी सहित होली से जुड़ी जानकारियां रोचक लगीं।

– दीपेन्द्र गुर्जर, सेन्दड़ा (राज.)

मैं बालहंस नियमित पढ़ती हूं। इसके पिछले पांच साल के प्रत्येक अंक को मैंने संभाल कर रखा है। यह ज्ञान का अकूत खजाना है। इससे मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा मिलती है। क्रॉसवर्ड, पजल्स, बोलें अंग्रेजी, नॉलेज बैंक अच्छे लगते हैं। यह सर्वोत्तम बालपत्रिका है। इससे हमारी रचनाशीलता भी बढ़ती है। शुभकामनाएं।

– शिक्षा माहेश्वरी,
देवली, टोंक (राज.)

बालहंस है सबका प्यारा
मिलता इसमें ज्ञान ढेर सारा।
हमारा बालहंस सबसे न्यारा
नॉलेज इसमें बहुत सारा।
दुनिया की सैर कराता
कविता-कहानियां खूब लाता।

– कृष्णकान्त,

इनके पत्र भी मिले

- **शिवनारायण शिवहरे,** नागपुर (महाराष्ट्र)
- **सौरभ कुमार, रायपुर,** समस्तीपुर (बिहार)
- **आशुतोष पुरोहित,** जोधपुर (राज.)
- **राजेन्द्र गोयल,** बाड़मेर (राज.)
- **जितेन्द्र कुमार जांगिड़,** खटून्दरा (राज.)
- **सहर अनम,** तलैया, जबलपुर (म.प्र.)
- **सावन जोशी,** बांसवाड़ा (राज.)
- **अमन उपाध्याय,** बांसवाड़ा (राज.)
- **प्रीतिश कुमावत,** कपासन, चितौड़गढ़
- **रवि कुमार पाण्डेय,** वाराणसी (उ.प्र.)
- **सुशान्त कुमार सिन्हा,** गिद्धौर (बिहार)
- **ओमप्रकाश डायस,** बाड़मेर (राज.)
- **सुरभि भट्ट,** बांसवाड़ा (राज.)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

Now Read Balhans online, log on to balhans.patrika.com

सेन डियागो के सी-वर्ल्ड में डॉल्फिन शो के नजारे

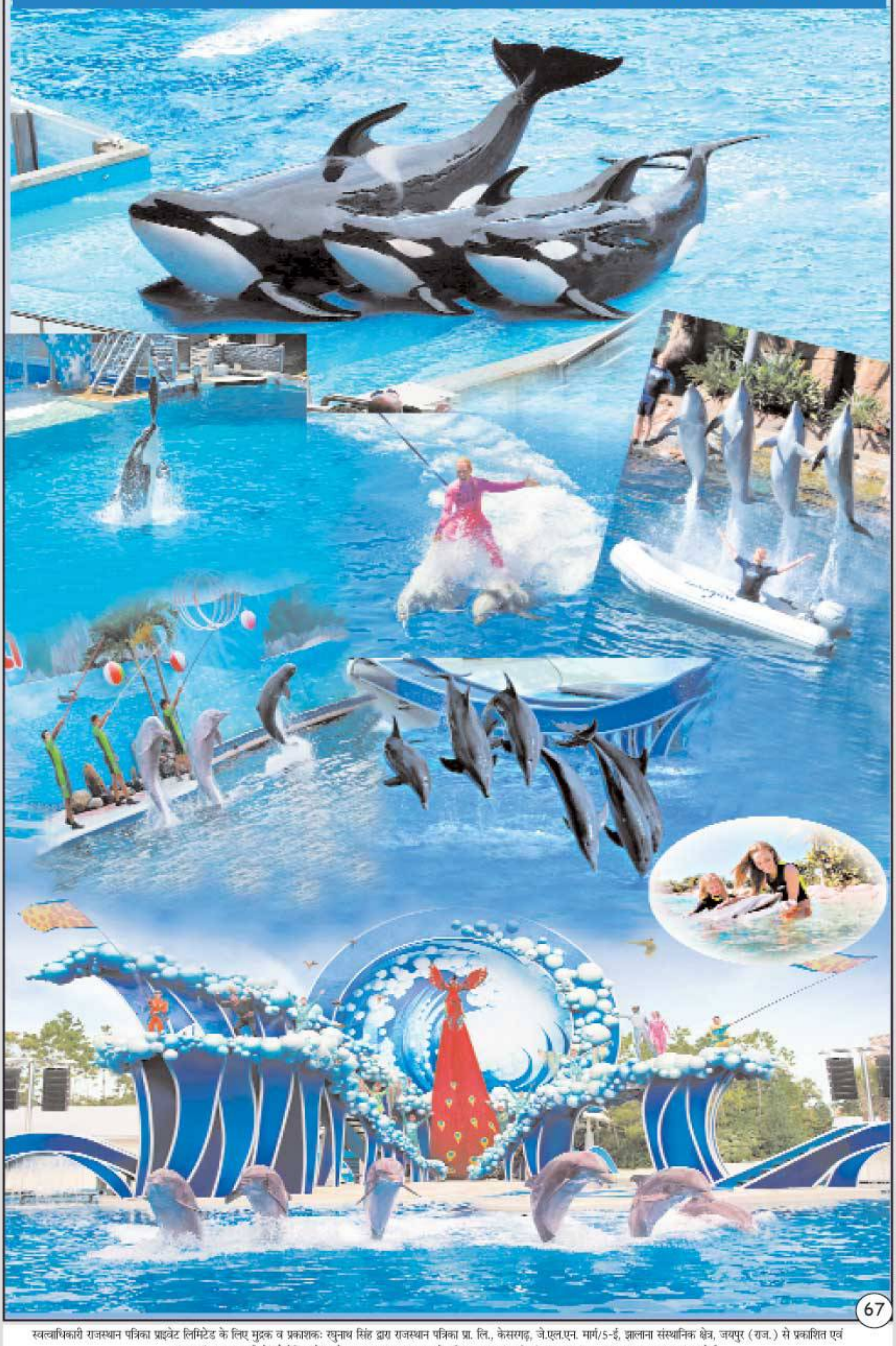

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

PARLE
TOM and JERRY
MILK SHAKTI
Milky Sandwich
लिमिटेड एडिशन
मिल्क शक्ति
मिल्की सैंडविच बिस्किट्स.
अनलिमिटेड मस्ती
टॉम एंड जेरी और
मिल्की क्रीम के साथ.
पेश है नया मिल्क शक्ति मिल्की सैंडविच बिस्किट्स,
टॉम एंड जेरी के साथ. आपके मनपसंद टून्स के
चेहरेवाले इन स्वादिष्ट बिस्किट्स के
अंदर भरे हैं मजेदार, क्रीमी दूध की खूबियां.
तो जल्दी कीजिए, अपना पैक आज ही ले आइए!
और टॉम एंड जेरी के साथ मिल्की क्रीम के
मस्तीभरे स्वाद का मजा लीजिए.